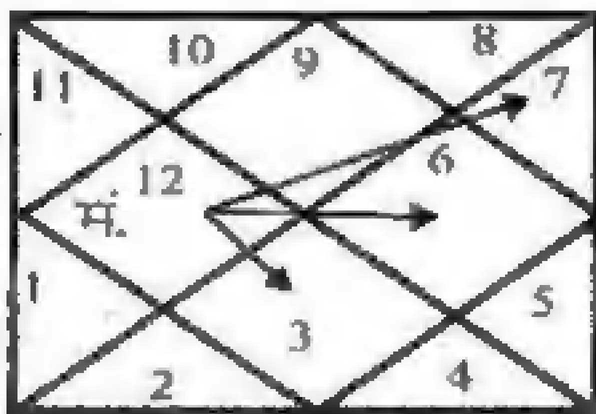
दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के बड़े भाई की मृत्यु होगी तथा मित्र मददगार साबित होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृष राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा सरकारी कार्यों, कोर्ट-कचहरी में विजय प्राप्त करेगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक का राज्य (सरकार) में वर्चस्व रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक पराक्रमी होगा तथा परिश्रम से अपनी प्रतिष्ठा खुद बनायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक की भुजा में तकलीफ होगी। भाइयों से कष्ट पहुंचेगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक के छोटे भाई की मृत्यु होगी तथा जातक धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–भाइयों से कलह, मुकद्दमेबाजी हो सकती है।
8. **मंगल+केतु**–कुटम्बीजनों में मनोमालिन्यता रहेगी पर जातक यशस्वी होगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां चतुर्थ स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' होगी। मंगल यहां मेष राशि से बारहवें स्थान पर होने से जातक की माता बीमार होगी। जातक को मकान भूमि का सुख तो होगा पर विद्या में बाधा आयेगी। मांगलिक होने से जातक का विवाह में विलम्ब होगा। यदि गुरु व शुक्र खराब हो तो विवाह नरक हो जायेगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे पर उनकी जातक से बनेगी नहीं।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम स्थान (मिथुन राशि), दशम भाव (कन्या राशि) एवं एकादश भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः विवाह में बाधा, नौकरी में दिक्कतें एवं व्यापार-व्यवसाय में परेशानी आयेगी।

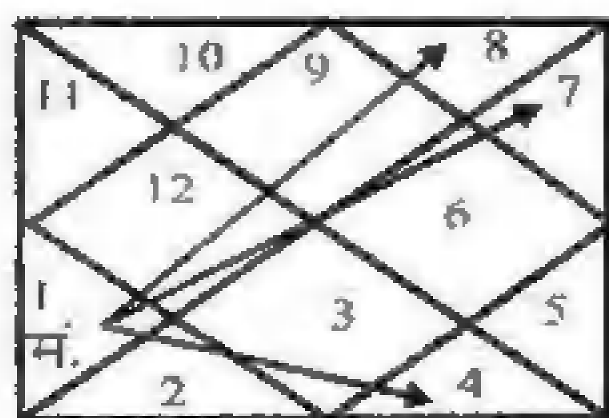
निशानी–जातक का दैनिक जीवन संघर्षमय होगा। जातक को ठेकेदारी व भूमि संबंधी कार्यों में ज्यादा लाभ होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक को सामाजिक या राजकीय सम्मान मिलेगा। जातक को मंगल की दशा में धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना एवं मंगल यहां दिक्बली को प्राप्त है। ये दोनों ग्रह सप्तम भाव (मिथुन राशि), दशम भाव (कन्या राशि), एकादश भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः 'लक्ष्मी योग' बना जिसके कारण जातक धनवान होगा। जातक व्यापार से लाभ कमायेगा तथा राजनीति से भी लाभ प्राप्त करेगा। जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का ससुराल धनाढ्य होगा एवं उसकी पत्नी प्रभावशाली महिला होगी।
4. **मंगल+गुरु**–'हंस योग' के कारण जातक राजा के समान साधन-सम्पन्न व ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–'मालव्य योग' के कारण जातक राजसी ठाट-बाट में रहेगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–जातक की माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक के विवाह में विलम्ब, माता की मृत्यु संभव है।
8. **मंगल+केतु**–विवाह में देरी, माता को लम्बी बीमारी होगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां पंचम स्थान में स्वगृही होगा। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूल त्रिकोण का कहलाता है। पूर्व जन्म के पुण्य के कारण जातक को धन, पद, बौद्धिक चातुर्य, यश व संतान का सुख मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा, फिर भी उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि), एकादश स्थान (तुला राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक लम्बी उम्र वाला, भाइयों के उत्तम सुखवाला, जातक यात्राओं का शौकीन होगा।

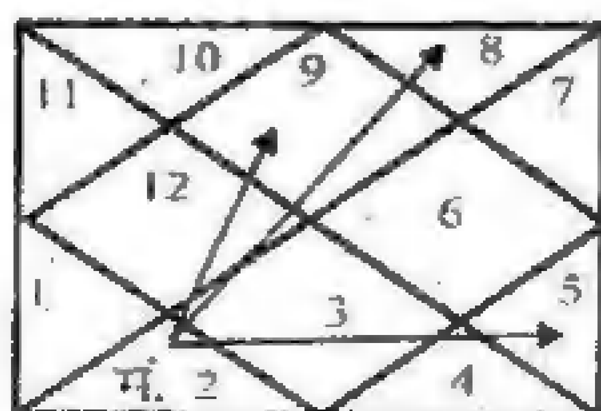
निशानी–ऐसे जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद तेजी से होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक को मान–प्रतिष्ठा मिलेगी। संतान एवं विद्या का लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–'किम्बहुना योग' के कारण जातक विद्यावान परम तेजस्वी, पुत्रों का पिता होगा। पूर्व जन्म के पुण्य बहुत तेज होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (कर्क राशि) लाभ स्थान (तुला राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। लक्ष्मी उम्र का स्वामी होगा। जातक व्यापार–व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। परन्तु जातक व्ययशील स्वभाव का होगा। जातक को पुत्र जरूर होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का आर्थिक विकास होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा। पत्नी धनाढ्य एवं सुयोग्य पुत्रों की माता होगी।
4. **मंगल+गुरु**–जातक को परिश्रम का फल, विद्या–हुनर का लाभ मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–संतान को कष्ट। जातक के यहां संतान शल्य चिकित्सा द्वारा होगी।
6. **मंगल+शनि**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। जातक का प्रभाव वर्चस्व तेज रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–पुत्र संतान को लेकर चिंता रहेगी।
8. **मंगल+केतु**–गर्भपात, गर्भस्राव का भय, विद्या में बाधा संभव है।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां छठे स्थान में वृष (सम) राशि में होगा। मंगल के कारण 'संतानभंग योग' एवं 'विमल नामक विपरीत राजयोग'

बनेगा। ऐसा जातक भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होगा। जातक शत्रुओं का दमन करने में सक्षम होता है।

दृष्टि–छठे स्थान पर बैठे मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (सिंह राशि), व्यय भाव (वृश्चिक राशि) एवं लग्न स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक को पिता का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा। जातक की ननिहाल पक्ष से अनबन रहेगी।

निशानी–जातक के छोटे भाई जरूर होंगे।

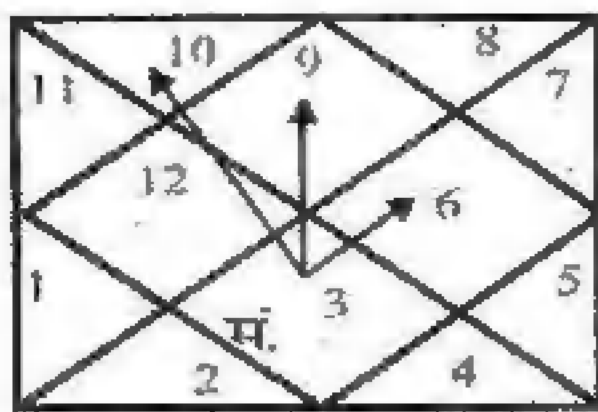
दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–सूर्य की युति से 'भाग्यबाधा योग' बनेगा। जातक के भाग्योदय में अनेक रुकावटें आयेंगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। चंद्रमा यहां उच्च का होगा। मंगल के कारण 'संततिहीन योग' बनता है। व्ययेश मंगल छठे होने से 'सरलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। अष्टमेश चंद्रमा होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। इससे जातक धनी व लम्बी उम्र का स्वामी होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य भवन (सिंह राशि) एवं लग्न स्थान (धनु राशि) पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा तथ उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**–यहां विलम्ब विवाह योग के कारण नौकरी भी देरी से लगेगी।
4. **मंगल+गुरु**–यहां गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनेगा। जातक को बहुत परिश्रम करने पर भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र के कारण 'हर्षनामक राजयोग' बनेगा। जातक धनी होगा। पर धन की प्राप्ति के प्रति, आवक के प्रति असंतोष रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–शनि के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक की प्रतिष्ठा संदेहास्पद रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–राहु के कारण गुप्त शत्रु एवं रोग जातक को पीड़ा पहुंचायेंगे।
8. **मंगल+केतु**–केतु के कारण जातक के शत्रु गुप्त होंगे। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में

धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां सप्तम स्थान में मिथुन (शत्रु)



राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। ऐसे जातक का विवाह प्रायः विलम्ब से होता है तथा उसका वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। यदि गुरु, शुक्र इत्यादि कमजोर हो तो जातक का गृहस्थ जीवन नरकमय हो जायेगा। जातक को भाइयों का सुख प्राप्त होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि), लग्न स्थान (धनु राशि) एवं धन स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक धनी होगा। जातक बड़ा व्यापारी ठेकेदार या इंजीनियर होगा।

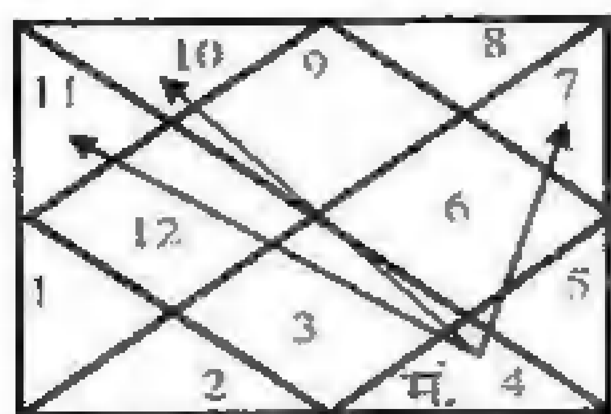
निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों (युवतियों) से प्रेम प्रसंग होगा। जातक की वाणी रौबीली होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। रोजी-रोजगार का अवसर मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक को उत्तम गृहस्थ एवं संतान सुख मिलेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (कन्या राशि), लग्न भाव (धनु राशि) एवं धन भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। उसे जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक राजनीति के क्षेत्र में भी प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी तथा प्रतिष्ठित होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक की उन्नति पुरुषार्थ के माध्यम से एवं स्वप्रयास से होगी। गुरु के कारण 'लग्नाधिपति योग' बनेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक के वैवाहिक सुख में खटपट रहेगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
6. **मंगल+शनि**–जातक के जातक को ससुराल से धन मिलेगा। ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक के वैवाहिक सुख में व्यवधान आयेगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक के गृहस्थ सुख में मनोमालिन्यता बनी रहेगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां अष्टम स्थान में नीच का होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली मांगलिक होगी तथा 'संतानभंग योग' एवं 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक को जीवन में काफी तकलीफों का सामना करना पड़ेगा। जातक बोली का ओछा होगा। मंगल के साथ अन्य पाप ग्रह हो तो दो विवाह का योग बनेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (तुला राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी फलतः जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों से बनेगी।

निशानी—जातक की स्त्री रोगग्रस्त होगी। जातक की संतति विलम्ब से होगी। जातक को दांत व गले का रोग होगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में अनिष्ट फल मिलेंगे।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

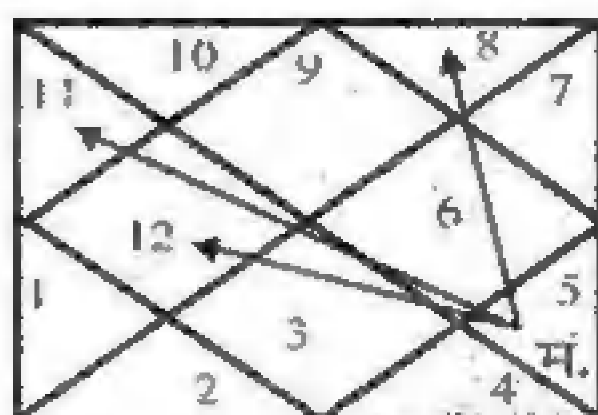
1. **मंगल+सूर्य**—सूर्य के साथ मंगल होने के कारण 'भाग्यभंग योग' बनेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। चंद्रमा यहां स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। अष्टमेश चंद्रमा अष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बना। व्ययेश मंगल अष्टम स्थान में होने से 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (तुला राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पराक्रम भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी, उद्योगपति तथा राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**—इस युति के कारण गृहस्थ सुख में बाधा, 'द्विभार्या योग' बनता है।
4. **मंगल+गुरु**—गुरु के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—शुक्र यहां 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' की सृष्टि करेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा।

6. **मंगल+शनि**–शनि मंगल के साथ होने से 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक को आर्थिक परेशानी होगी तथा उसकी बदनामी भी होगी।

7. **मंगल+राहु**–जातक की दो पत्नियां होंगी।

8. **मंगल+केतु**–जातक के गृहस्थ जीवन में बहुत परेशानियां आयेंगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां नवम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। मेष राशि में मंगल पांचवें स्थान में होने से पूर्व जन्म के पुण्य के कारण जातक को उत्तम संतान सुख, पिता का सुख मिलेगा। जातक अपने परिश्रम से स्वयं का दो मंजिला भवन बनायेगा। विद्या योग उत्तम है। विद्या अर्थकारी होगी।

दृष्टि–नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का तथा पराक्रमी होगा तथा उसे जीवन में भौतिक उपलब्धियां मिलती रहेंगी।

निशानी–जातक का भाग्योदय परदेश में होगा। यात्रा योग उत्तम है। यात्राओं से लाभ होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। जातक को राजकीय-सामाजिक पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

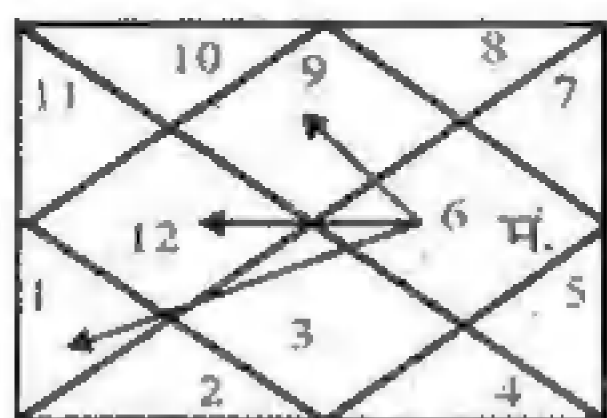
1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को 'राजयोग' देगा। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को सरकार या राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) को देखेंगे। 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी होगा। जातक थोड़े खर्चीले स्वभाव का होगा। सभी भौतिक संसाधनों की प्राप्ति उसे सहज में हो जायेगी। ऐसा जातक महान पराक्रमी तथा धनी होगा।

3. **मंगल+बुध**–बुध की युति से जातक का भाग्योदय बुद्धि बल से तथा विवाह के बाद होगा।

4. **मंगल+गुरु**–गुरु यहां मंगल के साथ होने से जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र मंगल के साथ होने से जातक के भाग्योदय में हल्की रुकावट देगा।
6. **मंगल+शनि**–धनेश, तृतीयेश शनि मंगल के साथ भाग्य स्थान में हो तो जातक के पास स्थाई सम्पत्ति होगी।
7. **मंगल+राहु**–राहु यहां भाग्योदय में रुकावट देगा।
8. **मंगल+केतु**–केतु यहां भाग्योदय में संघर्ष दिलायेगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शु भयोग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां दशम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। मंगल यहां दिग्बली होने से 'कुलदीपक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को राजनैतिक व प्रशासनिक कार्यों में पद-प्रतिष्ठा मिलेगी। प्रायः विद्या में रुकावट या संतान सुख में विलम्ब होगा। जातक को मकान, वाहन, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।

निशानी–ऐसे जातक को खेत-कृषि, जमीन-जायदाद, दलाली व ठेकेदारी के कामों में लाभ होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में शुभ परिणाम मिलेंगे। जातक को राजनैतिक या सामाजिक पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ भाग्येश सूर्य दशम स्थान में होने से व्यक्ति राजा या राजपुरुष से कम नहीं होता। जातक गांव का मुखिया एवं बड़ी भूमि का स्वामी होता है। कोर्ट-केस में सदैव विजय मिलती है।

2. **मंगल+चंद्र**—यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। मंगल यहां दिक्बली होकर 'कुलदीपकयोग' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव (धनु राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। ऐसे जातक को भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।

3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ यहां बुध होने से 'भद्र योग' बनेगा। व्यक्ति राजा के तुल्य ऐश्वर्य व सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु होने से 'केसरी योग' बनेगा। जातक धनी होगा एवं आध्यात्मिक मार्ग का पथिक होगा।

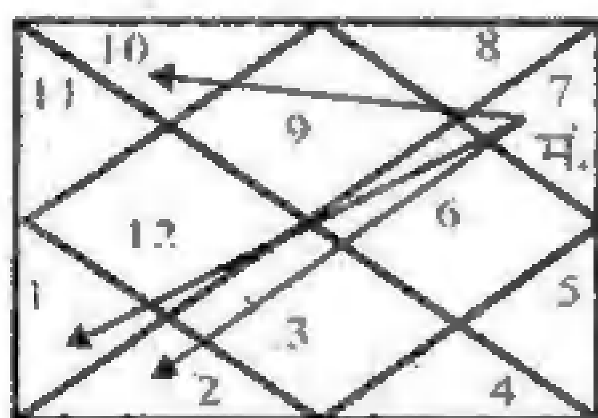
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र होने से जातक के पास अनेक वाहन होंगे। जातक का अधिकतम धन वाहन व नौकरों की देखभाल में खर्च होगा।

6. **मंगल+शनि**—सरकारी क्षेत्र या राजनीति में विवाद की स्थिति उत्पन्न होगी। जिसमें अंतिम विजय जातक की होगी।

7. **मंगल+राहु**—जातक के माता-पिता की मृत्यु बचपन में तथा आयु के 36 या 42वें वर्ष में सुखों की प्राप्ति होती है।

8. **मंगल+केतु**—दशम स्थान में केतु केवल पिता के लिए घातक है। माता के लिए नहीं। राज-काज में विजय मिलती है।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां एकादश स्थान में तुला (सम) राशि में होगा। यहां मंगल वृश्चिक राशि में द्वादश स्थान पर होने से द्वादशेश के दोष को नष्ट करता है। जातक को जीवन में पर्याप्त यश, धन, पद-प्रतिष्ठा, व्यापार की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्तियों में आत्म बल गजब का होता है। ऐसे जातक विरोधियों से बिलकुल नहीं घबराते। जातक के मित्र अच्छे होंगे। भाइयों से अच्छा प्रेम रहेगा।

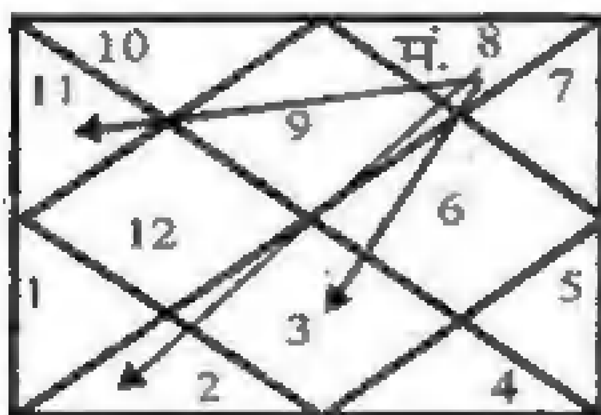
दृष्टि—एकादश भाव मंगल की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि), पंचम स्थान (मेष राशि) एवं छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक धनवान व प्रजावान होगा। जातक का भाग्योदय संतति के बाद होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। इष्ट-मित्रों में सम्मान मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–यहां मंगल के साथ सूर्य जातक को सरकारी मदद से उद्योग खुलवायेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि धन भाव (मकर राशि), पंचम भाव (मेष राशि) एवं षष्टम् भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। ऐसा जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक को व्यापार में लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु बड़े भाई का सुख देगा।
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होने से जातक को पुत्र-पुत्री दोनों का सुख मिलेगा। जातक की संतान तेजस्वी होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि यहां उच्च राशि में होकर जातक को अपार धन देगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–राहु की यह स्थिति औद्योगिक लाभ में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–केतु यहां उद्योग में संघर्ष के बाद सफलता देगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां द्वादश स्थान में स्वगृही होगा। मंगल की इस स्थिति के कारण कुण्डली 'मांगलिक' होगी तथा 'संतान भंगयोग' एवं 'विमल नाम विपरीत राजयोग' की सृष्टि होगी। जातक धनवान एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा। परन्तु जातक के भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छे नहीं होंगे।

दृष्टि–द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि), छठे स्थान (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे तथा उसके गृहस्थ जीवन में कलह रहेगी।

निशानी–जातक विद्या पूरी न कर सकेगा। शैक्षणिक उपाधि अपूर्ण रह जायेगी। विलम्ब विवाह का योग बनते हैं।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में धन व्यय अधिक होगा। जातक विदेश यात्रा करेगा।

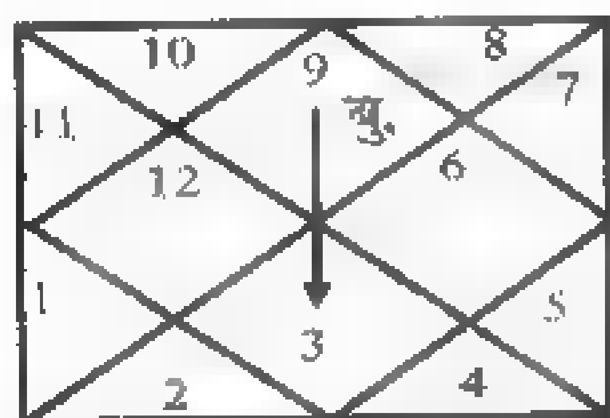
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक को कष्टानुभूति होगी। भाग्योदय में दिक्कतें आयेंगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां बैठकर दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। वृश्चिक राशि में मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। फलतः जातक धनवान होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (कुंभ राशि), षष्टम् भाव (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–बुध यहां 'द्विभार्या योग' करायेगा। जातक की अपनी पत्नी से कम बनेगी।
4. **मंगल+गुरु**–गुरु 'लग्नभंग योग' बनायेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र मंगल के साथ होने पर 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक निश्चय ही धनवान होगा परन्तु कर्जदार रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि 'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक मित्रों के कारण बदनाम होगा। संतान की चिंता भी रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–राहु बारहवें मंगल के साथ होने से स्त्री हमेशा बीमार रहेगी। जातक व्याभिचारी होकर अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रखेगा।
8. **मंगल+केतु**–केतु बारहवें मंगल के साथ होने से जातक प्रवास बहुत करेगा एवं सदैव ऋणग्रस्त रहेगा।



धनुलग्न में बुध की स्थिति

धनुलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' तथा 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। बुध यहां 'दिग्बली' भी है। ऐसा जातक सुगठित देह वाला, सुन्दर शरीर वाला, तीव्र बुद्धि वाला, जातक विनोदी स्वभाव वाला एवं वाचाल होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। गृहस्थ सुख उत्तम, जातक का विवाह शीघ्र होगा।

निशानी–जातक पठन-पाठन, एकाउण्ट, कम्प्यूटर, लेखन व प्रकाशन कार्यों में आगे बढ़ेगा।

दशा–बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

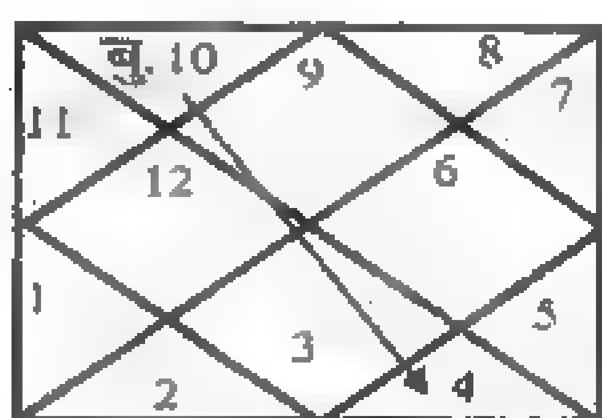
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। प्रथम स्थान पर धनु राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। जातक बड़ा व्यापारी होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना। बुध सप्तम भाव में स्थित अपनी राशि को

देखेगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा एवं अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध+चंद्र**–ऐसा जातक विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल वैवाहिक सुख में विलम्ब कराता है।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से 'हंस योग' के कारण जातक राजा होगा तथा वह वैभवशाली जीवन जीयेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को व्यापार में उन्नति देगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को पुरुषार्थ का समुचित लाभ देकर धनी बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक अति बुद्धिमान होगा। जातक खुद को होशियार एवं दूसरों को मूर्ख समझेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को उत्साही बनायेगा तथा जातक की बुद्धि को विकृत नहीं करेगा।

धनुलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां द्वितीय स्थान में मकर (सम) राशि में होगा। जातक की मुखाकृति सुन्दर, आकर्षक एवं प्रभावशाली होगी। जातक वाक्पटु एवं श्रेष्ठ वक्ता होगा तथा वह अपनी वाणी से श्रोताओं को भाव विभोर कर देगा। ऐसा जातक धनी एवं प्रतिष्ठित प्रतिभा वाला होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः वैवाहिक जीवन योग कष्ट पूर्ण बनता है।

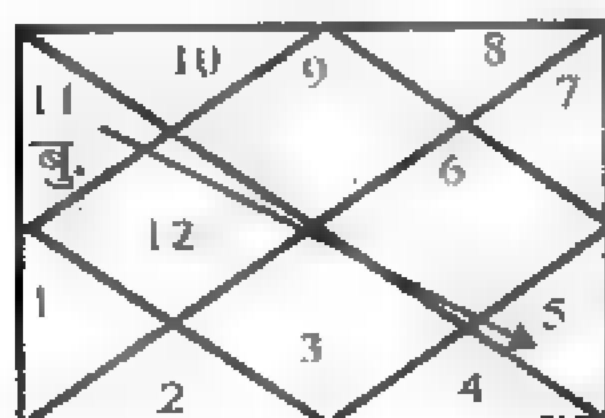
निशानी–जातक की आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नत्ति ठीक होगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। बुध की दशा में चंद्रमा का अंतर कष्टदायक होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वितीय स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान तथा व्यापारी होगा। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा। ऐसा जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक की आमदनी के जरिए दो तीन के प्रकार के रहेंगे।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक के एकात्रित धन का नाश करायेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को महाधनी बनायेगा। जातक के पुत्र जातक को कमाकर देंगे।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु, जातक की वाणी को गंभीर, धैर्ययुक्त एवं प्रभावशाली बनायेगा। जातक कुशल वक्ता होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र वाणी में विकार देगा। जातक का धन भी आलतू-फालतू कार्यों में खर्च होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को सुसराल से धन सम्पति 'कलत्रमूलधन योग' के कारण दिलायेगा।
7. **बुध+राहु**–राहु यहां जातक धन नाश करेगा।
8. **बुध+केतु**–केतु यहां जातक को फिजूलखर्च बनायेगा।

धनुलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि का होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, धैर्यवान, विवेकशील पर डरपोक प्रवृत्ति का होगा। ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन सुखी एवं पिता का सुख उत्तम होता है। जातक धर्मभीरु, परिश्रमी, पराक्रमी होगा। जातक को मेहनत का मीठा फल भी मिलता रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बुध की दृष्टि नवम भाव (सिंह राशि) पर होगी।

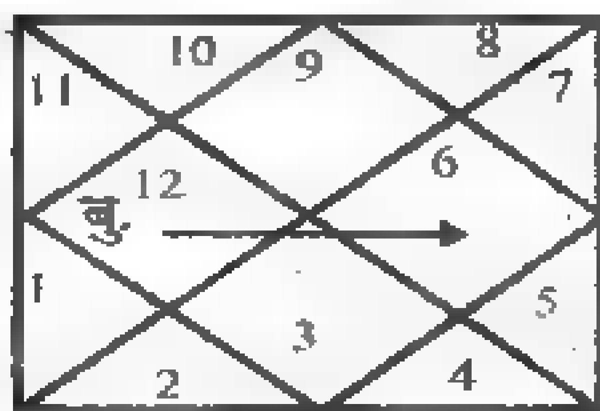
निशानी—ऐसा जातक युद्ध प्रिय एवं कलहकारी नहीं होता। जातक की बहनें अधिक होंगी। एक आचार्य के अनुसार दशम स्थान का स्वामी तीसरे होने से राजयोग नष्ट होकर व्यापार योग बनाता है। फलतः जातक को व्यापार से लाभ रहेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। तृतीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। 26 वर्ष की आयु में जातक की किस्मत जरूर चमकेगी। जातक बुद्धिमान एवं समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा होने से भाई-बहनों में मनमुटाव की स्थिति बनेगी।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहनों व कुटम्ब का सुख मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु जातक को बड़े भाई का सुख अथवा अपने से बड़ी उम्र के लोगों के साथ मित्रता से लाभ होगा।
5. **बुध+शुक्र**—शुक्र यहां अधिक बहनें दिलायेगा अथवा जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
6. **बुध+शनि**—शनि यहां मूलत्रिकोण राशि में बुध के साथ होने से जातक को जनसम्पर्क, पत्रकारिता, लेखन के कार्यों से लाभ होगा।
7. **बुध+राहु**—तृतीय स्थान में राहु भाइयों में वैमनस्य फैलायेगा।
8. **बुध+केतु**—तृतीय स्थान में केतु कीर्ति देगा। जातक के बुद्धि का लोहा सभी लोग मानेंगे।

धनुलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध

यहां चतुर्थ स्थान में मीन (नीच) राशि का होगा। मीन राशि के 15 अंशों तक बुध परमन ीच का होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बना। ऐसे जातक को वाहन एवं मकान का सुख अति उत्तम होता है। जातक के लिए माता का सुख उत्तम। जातक का ससुराल या जीवनसाथी उससे थोड़े छोटे कद का होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत बुध की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि) पर होने से जातक महत्त्वाकांक्षी होगा तथा अपने धंधे में खूब आगे बढ़ेगा।

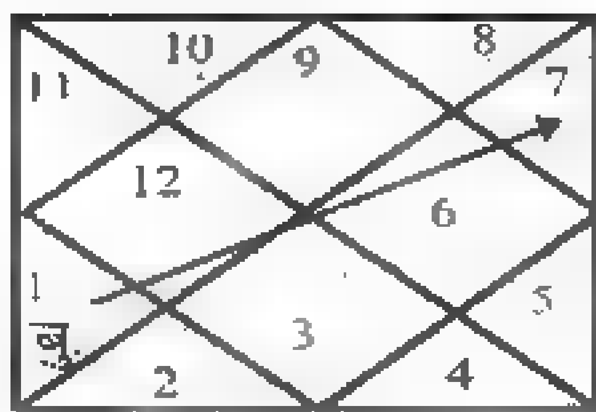
निशानी—जातक बड़ी-बड़ी बातें एवं ऊंची-ऊंची योजनाएं बनायेगा पर व्यवहारिक धरातल पर कम चलेगा। विद्या प्राप्ति में एक-दो बार रुकावट आयेगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक लगातार आगे बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। चतुर्थ स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। दोनों ग्रह यहां बैठकर दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की किस्मत का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्र होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। विवाद रहेगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, सुख-सुविधाओं से युक्त होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान वैभव सम्पन्न होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु भौतिक सुखों में बिगाड़ करता है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु वाहन दुर्घटना देता है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां पंचम स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। इसके कारण 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। ऐसा जातक स्वेच्छाचारी, धूर्त व निर्लज्ज होता है। जातक बड़े भाई व बहनों से उत्तम संबंध रखेगा। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। बुध दशम भाव से आठवें होने के कारण जातक को धंधे व्यापार, रोजगार की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि—पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक को विद्या का लाभ मिलेगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे।

निशानी—यह बुध संतान देने में विलम्ब करता है। खासकर पुत्र संतान, गुरु की दृष्टि या कृपा से होगी।

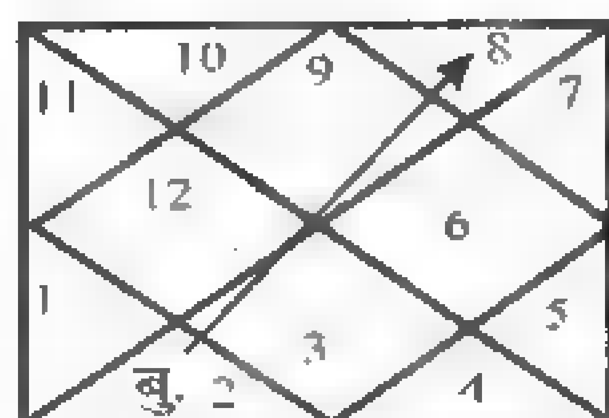
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। पंचम स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां पर यह युति खिलेगी। दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिमान, शिक्षित, प्रजावान होगा। ईश्वर कृपा से एक तेजस्वी पुत्र अवश्य होगा। कन्या संतति भी होगी। जातक भाग्यशाली होगी। सरकारी क्षेत्र में, राजनीति में जातक का दबदबा रहेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—गर्भसुख, गर्भपात का भय अथवा शल्य चिकित्सा से संतति की संभावना है।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल स्वगृही होने से पुत्र संतति जरूर होगी। विद्यायोग उत्तम है। जातक की संतान तेजस्वी होगी।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु उच्च शिक्षा को बताते हैं। जातक स्वयं शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र विद्या में एक दो बार रुकावट (बाधा) का संकेत देता है।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से विद्या अर्थकारी एवं व्यवहारिक होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु पढ़ाई अधूरी छुड़वा देता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु संघर्ष के साथ विद्या दिलाता है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां छठे स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति के कारण 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनता है। फलतः या तो विलम्ब विवाह होगा अथवा पत्नी से विचार नहीं मिलेगा। धंधे रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा। ननिहाल का सुख उत्तम नहीं होगा। शत्रु बहुत होंगे।

दृष्टि–षष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होने से जातक के खर्चे बढ़-चढ़ कर होंगे।

निशानी–जातक को चर्मरोग संभव है। दवाइयों में व्यर्थ का पैसा लगेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं से परेशान रहेगा।

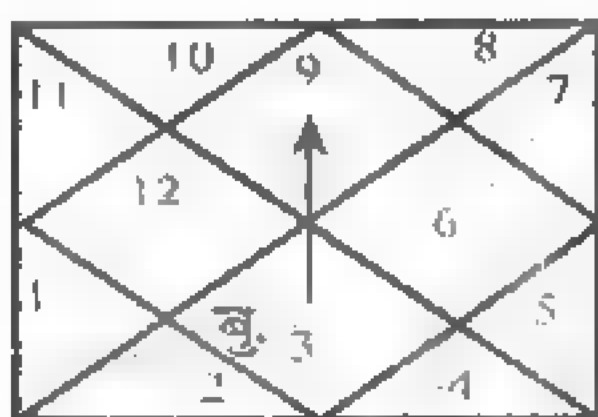
विशेष–दशमेश बुध के छटे होने से 'दुर्योग' बनता है। जातक कर्जदार एवं स्वार्थी होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। छठे स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। सूर्य के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'विवाहभंग योग' तथा 'राजभंग योग' भी बनेगा। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। भाग्योदय हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा यहां उच्च का होगा। 'सरल नामक विपरीत राज योग' के कारण जातक धनवान एवं साधन सम्पन्न होगा परन्तु सही समय पर सही निर्णय लेने में चूक जायेगा।
3. **बुध+मंगल**—मंगल तथा बुध की युति के कारण विद्या में बाधाएं आयेगी।
4. **बुध+गुरु**—बुध, गुरु की युति के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—शुक्र की युति के कारण 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनेगा, ऐसा जातक धनी होगा पर उसके गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
6. **बुध+शनि**—बुध तथा शनि की युति यहां धनहीन योग, पराक्रमभंग योग बनायेगी। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा एवं उसकी प्रतिष्ठा भंग होगी।
7. **बुध+राहु**—राहु एवं बुध छठे स्थान में होने से जातक को हिस्टीरिया या स्मृतिनाश की बीमारी होगी।
8. **बुध+केतु**—केतु एवं बुध छठे स्थान में होने से जातक को मस्तिष्क विकार होते हैं।

धनुलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां सप्तम में मिथुन राशि का स्वगृही होने से 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' बनेगा। पद्मसिंहासन योग भी बनेगा। ऐसा जातक राजा या राजपुरुषों से कम वैभवशाली नहीं होगा। जातक को उच्च शिक्षा, प्रतिष्ठा एवं पद मिलेगा। जातक का विवाह शीघ्र होगा एवं विवाह के बाद तीव्रता से भाग्योदय होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को मेहनत का मिलेगा।

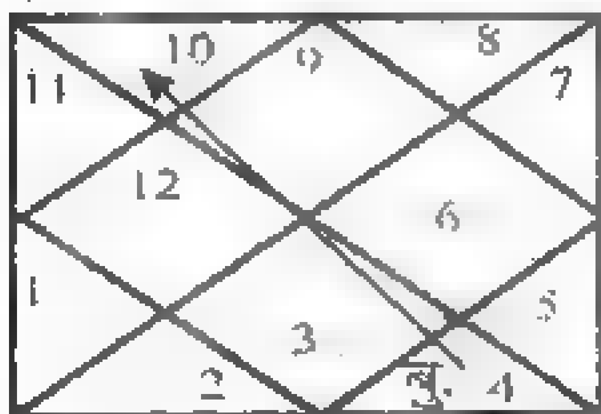
निशानी—जातक की जीवन साथी सुन्दर व सौम्य होगा जातक स्वयं एवं उसका जीवनसाथी क्षमाशील प्रवृत्ति का होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में विशेष उन्नति व भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। सातवें स्थान पर मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा फलतः 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक परम बुद्धिमान, धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा। पत्नी तेज स्वभाव की होगी। जातक राजा के समान महान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
2. **बुध+चंद्र–**ऐसा जातक साधन सम्पन्न होते हुए पत्नी पक्ष से पीड़ित रहेगा।
3. **बुध+मंगल–**बुध के साथ मंगल होने से विद्या एवं संतान सुख अति उत्तम होंगे।
4. **बुध+गुरु–**बुध के साथ गुरु जातक को परिश्रम का भरपूर लाभ देगा।
5. **बुध+शुक्र–**बुध के साथ शुक्र होने से सुन्दर पत्नी होगी, कामुक होगी पर जातक उससे संतुष्ट नहीं होगा।
6. **बुध+शनि–**बुध के साथ शनि जातक को सुसराल से धन दिलायेगा।
7. **बुध+राहु–**जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा तथा वह अपने निर्णय पर दृढ़ रहेगा।
8. **बुध+केतु–**गृहस्थ सुख में थोड़ी खटपट रहेगी।

धनुलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का भी काम करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यह अष्टम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति से 'विवाहभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की स्थिति बनेगी। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है अथवा पत्नी से विचार बिलकुल नहीं मिलते। पिता सुख, राज्य-प्रतिष्ठा, मित्र-रिश्तेदारों से धोखा मिलता है। दाम्पत्य जीवन में कटुता या तलाक की स्थिति आती है।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को धनार्जन हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

निशानी–जातक बुद्धिशाली होगा। जातक शारीरिक परिश्रम की बजाये दिमागी परिश्रम से कमायेगा।

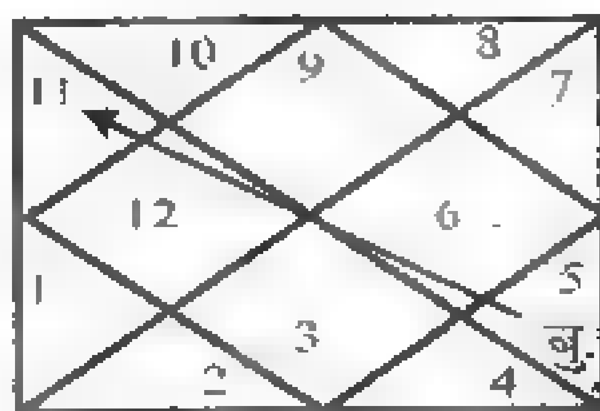
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

विशेष–दशमेश बुध के आठवें होने से 'दुर्योग' बनता है। जातक स्वार्थी एवं कर्जदार होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। अष्टम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बना। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। ऐसा जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा परन्तु भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–सरलनामक 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी एवं साधन सम्पन्न होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक के दो विवाह योग बनाता है।
4. **बुध+गुरु**–गुरु उच्च का होकर बुध से युति करेगा। जातक प्रबल महत्त्वाकांक्षी होगा पर योजनाएं फलीभूत नहीं होंगी।
5. **बुध+शुक्र**–जातक की पत्नी मीठी वाणी बोलने वाली, लेखक, गीतकार, कवि तथा शौकीन मिजाज एवं अत्यधिक खर्चीली प्रवृत्ति की होगी। पति के रुचि की परवाह नहीं करेगी।
6. **बुध+शनि**–'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। फलतः पत्नी से तलाक जीवनसाथी की अकाल मृत्यु जैसी घटनाएं हो सकती हैं।
7. **बुध+राहु**–जातक के जीवनसाथी की अकाल मृत्यु हो सकती है।
8. **बुध+केतु**–जातक का जीवन साथी लम्बी बीमारी भोग सकता है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है, पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां नवम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा।

जिसके कारण 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, धार्मिक, दीर्घायु, धनवान, पुत्रवान, स्त्री-संतान से युक्त, सुखी व भाग्यशाली व्यक्ति होता है। जातक के पिता के साथ मधुर संबंध होते हैं।

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों, मित्रों के साथ निभेगी।

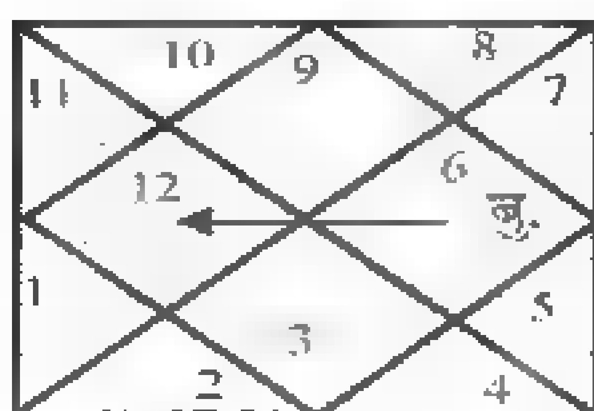
निशानी—जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होता है। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ रहेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा भाग्योदय करायेगी। गृहस्थ सुख एवं रोजी-रोजगार के अवसर प्रदान करेगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। नवम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा फलतः व्यक्ति बुद्धिशाली होगा। बलवान भाग्येश की दशमेश के साथ युति होने के कारण जातक के भाग्य का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा। यहां पर यह युति खिलेगी। जातक पराक्रमी होगा। मित्र, परिजनों की मदद मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—जातक के भाग्य में अवरोध के साथ उन्नति होगी। किसी भी कार्य में आसानी से सफलता नहीं मिलेगी।
3. **बुध+मंगल**—जातक अपनी बुद्धि से, विद्या व हुनुर से खूब कमायेगा, किस्मत साथ देगी।
4. **बुध+गुरु**—जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं मिलेंगी। जातक आध्यात्मिक शक्ति से युक्त होगा।
5. **बुध+शुक्र**—जातक व्यापार के माध्यम से आगे बढ़ेगा।
6. **बुध+शनि**—जातक धनी, पराक्रमी होगा तथा मित्रों से लाभान्वित होता रहेगा।
7. **बुध+राहु**—जातक कभी भी पहली श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं होगा, फिर भी दूरदर्शिता बुद्धिमत्ता उत्तम होगी।
8. **बुध+केतु**—जातक में खोजी प्रवृत्ति प्रधान रहेगी तथा बुद्धि तेज रहेगी।

धनुलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां दशम स्थान में उच्च का होगा। कन्या राशि के 15 अंशों में बुध परमोच्च का होगा। बुध की इस स्थिति के कारण 'कुलदीपक योग', 'पद्मसिंहासन योग' एवं 'भद्र योग' बना। ऐसा जातक शक्तिशाली राजा तुल्य पराक्रमी होता है। ऐसे जातक को उत्तम वाहन एवं भवन का सुख तथा नौकर-चाकर का सुख मिलता है। जातक की आमदनी उत्तम होगी।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–जातक को ससुराल अपने से उच्च श्रेणी का मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर तथा गृहस्थ सुख उत्तम होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक जीवन के चरमोत्कर्ष व विकास को प्राप्त करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

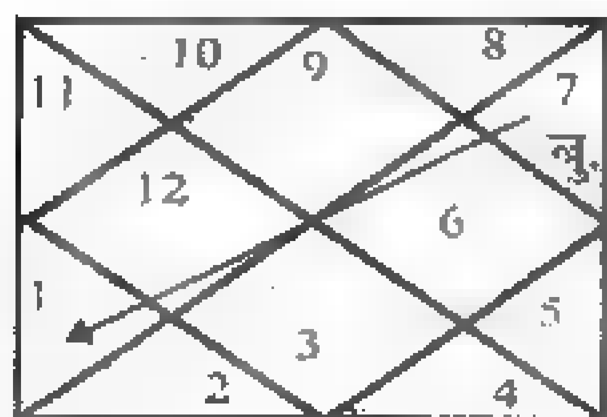
1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। दशम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां उच्च का होगा। जिसके कारण क्रमशः 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। उसके एक से अधिक वाहन होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा राज्य (सरकार) में उसका दबदबा रहेगा।
2. **बुध+चंद्र**–राजयोग में बाधा होगी। राजनीति में जैसा चाहेंगे, वैसा पद नहीं मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**–मंगल बुध के साथ 'दिग्बली' होकर राजयोग में दुगनी शक्ति भर देगा। जातक राजा तुल्य शक्तिशाली होगा।
4. **बुध+गुरु**–गुरु यहां 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' को दुगना कर देगा। जातक के पास उत्तम श्रेणी के वाहन होंगे।
5. **बुध+शुक्र**–शुक्र की युति से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक के पास अनेक वाहन एवं अनेक मकान होंगे।

6. **बुध+शनि**–शनि की युति के कारण जातक का ससुराल बहुत धनवान होगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी।

7. **बुध+राहु**–राहु यहां राजयोग को प्रबलता प्रदान करेगा। जातक राजनीति में नाम कमा सकता है।

8. **बुध+केतु**–केतु यहां कीर्ति देगा। धन के साथ कीर्ति जुड़ी रहेगी।

धनुलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां एकादश भाव में तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता का सहयोग, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को व्यापार-नौकरी में भरपूर धन व प्रतिष्ठा मिलेगी। विद्या-बुद्धि, विवेक से जातक अच्छा धन कमायेगा। मित्र-वर्ग भी उत्तम श्रेणी के होंगे।

दृष्टि–एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक प्रजावान होगा। जातक की संतति उत्तम होगी।

निशानी–कन्या संतति अधिक होगी। जातक धनी होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। एकादश स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां नीच राशिगत होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक की संतान भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार के द्वारा धन कमायेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

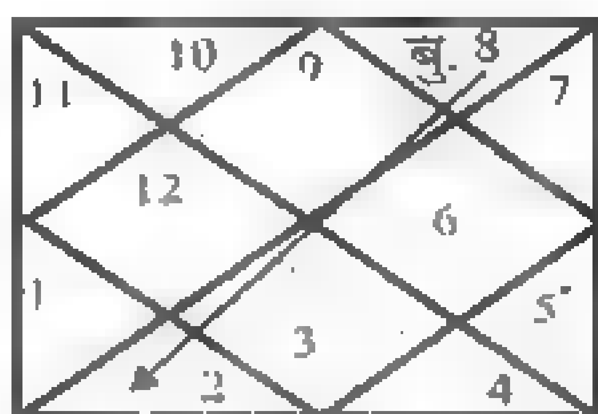
2. **बुध+चंद्र**–जातक को व्यापार-व्यवसाय में हानि उठानी पड़ेगी।

3. **बुध+मंगल**–जातक की बुद्धि धृष्ट एवं ईर्ष्यालु तथा लड़ाई की भावना से ओत-प्रोत होगी।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।

5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ स्वगृही शुक्र होने से जातक को उद्योग-व्यापार में लाभ देगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ उच्च का शनि जातक को महाधनी एवं पराक्रमी बनायेगा।
7. **बुध+राहु**—जातक मिथ्यावादी एवं अविश्वासी होगा।
8. **बुध+केतु**—जातक की बुद्धि चालाक व शातिर किस्म की होगी। दूसरों को हानि पहुंचाने में आनन्द समझेगा।

धनुलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति में 'विवाहभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' बनता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक को रोजी-रोजगार, नौकरी-व्यापार हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ेगी। बुध सप्तम भाव में 'षडाष्टक योग' करके बैठा है। फलतः पत्नी के कारण जातक को परेशानी आयेगी। गृहस्थ जीवन में नित्य कलह रहेगी।

दृष्टि—द्वादश भावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी, फलतः मामा से वैर रहेगा।

निशानी—रोग, ऋण व शत्रु जातक को परेशान करते रहेंगे। जातक अवसर पर कार्य करने में चूक जायेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी

विशेष—दशमेश बुध के बारहवें स्थान में जाने से 'दुर्योग' बनता है। जातक स्वार्थी व कर्जदार होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध

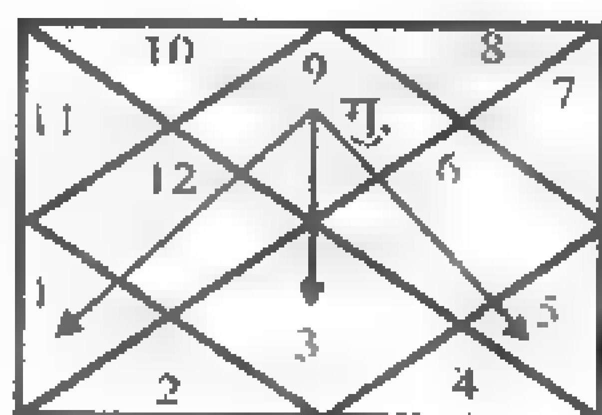
के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली तथा भाग्यशाली होगा। सूर्य बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध बारहवें होने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलतः ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ नीच का चंद्रमा जातक की बुद्धि मलिन करेगा। जातक की सोच निराशावादी एवं 'नेगेटिव' होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ स्वगृही मंगल विदेश में धन देगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु परिश्रम का लाभ नहीं मिलने देगा। जातक की शिक्षा व्यर्थ जायेगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र 'हर्षनामक विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी होगा पर व्यभिचारी होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि 'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा। जातक को अपने गलत फैंसले पर पछताना पड़ेगा। प्रतिष्ठा कम होगी।
7. **बुध+राहु**–जातक को स्मृतिनाश एवं हिस्टीरिया जैसी बीमारी हो सकती है।
8. **बुध+केतु**–मस्तिष्क विकृति संभव है। जातक द्वारा जल्दीबाजी में लिये गये निर्णय सदैव दुःखदाई होंगे।

❑❑❑

धनुलग्न में गुरु की स्थिति

धनुलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां प्रथम स्थान में स्वगृही होगा। फलतः 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' एवं 'हंस योग' बनेगा। ऐसे जातक पर ईश्वर की विशेष अनुकम्पा के कारण उसका भाग्योदय शीघ्र होता है। जातक को बुजुर्गों की जमीन-जायदाद मिलती है। जातक विद्यवान, शिक्षित होगा तथा राजा किंवा राजा से कम ऐश्वर्यवान नहीं होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ गुरु की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं भाग्य भवन (सिंह राशि) पर होगी। जातक को जीवन साथी उत्तम मिलेगा तथा पुत्र-संतान की प्राप्ति होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति, सहयोग मिलेगा।

निशानी–ऐसे जातक के जन्म से पिता की किस्मत चमकती है।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी। भाग्योदय होगा। जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा।

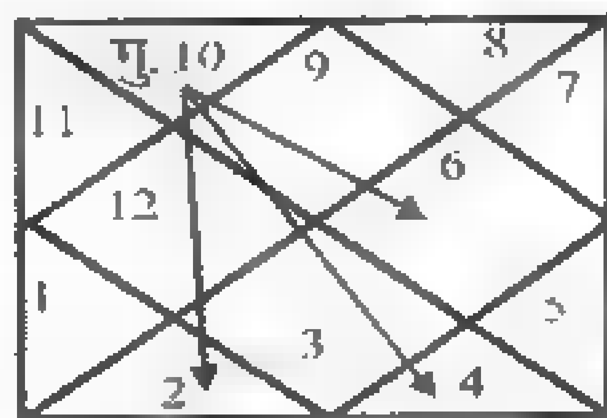
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य, गुरु की गुणवत्ता को बढ़ायेगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 25 वर्ष की आयु से शुरु हो जायेगा।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। भोजसंहिता के अनुसार धनुलग्न के प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति धनु राशि में होगी। यह युति वस्तुतः अष्टमेश

चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान, सप्तम स्थान एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। गुरु यहां स्वगृही होने से बलवान है। यहां 'हंस योग', 'कुलदीपक योग', 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। फलतः जातक को उत्तम संतान सुख एवं विद्या क्षेत्र में उपलब्धि मिलेगी। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक की गिनती समाज के विशिष्ट भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित लोगों में होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल गुरु की गुणवत्ता में चार चांद लगायेगा। जातक प्रबल आत्मविश्वासी, साहसी एवं ठोक बजाकर निर्णय लेने वाला होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध जातक को धनी ससुराल देगा। जातक की पत्नी कमाकर देने वाली, वफादार होगी।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र रोग व शत्रु पर विजय दिलायेगा। जातक की पत्नी कामदेव की प्रतिमूर्ति होगी।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि जातक का जन्म धनी परिवार में करायेगा। जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति वसीयत में मिलेगी।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में लग्नेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में अग्नि संज्ञक राहु अपनी नीच राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की मनोवृत्ति कुटिल होगी। ऐसा जातक दूसरों को बुद्धू समझाते हुए अपने धन, पराक्रम एवं प्रभाव का दुरुपयोग करेगा। यहां 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु कीर्ति देगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां द्वितीय स्थान में नीच का होगा। मकर राशि के 5 अंशों में गुरु परम नीच का होगा। ऐसा जातक बाल्यावस्था में बीमार होगा। जातक कुटुम्ब प्रेमी होगी। आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा पर कितना भी कमाये बचत नहीं होगी। जातक को वाहन, संतान सुख उत्तम प्राप्त होगा। ऐसा जातक डॉक्टर, वकील, ज्योतिष, न्यायाधीश या राजगुरु के रूप में ज्यादा यशस्वी होगा।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि), अष्टम स्थान (कर्क राशि) एवं दशम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग, शत्रु का नाश करने में सक्षम होता है। जातक को नौकरी अच्छी मिलेगी।

निशानी–जातक भोजन का शौकीन होगा। जातक का शरीर चर्बी वाला होगा।

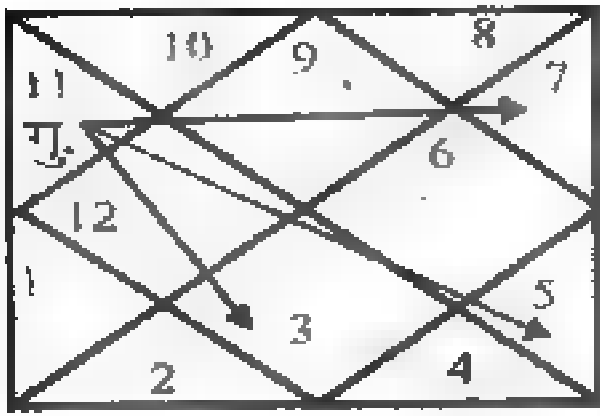
दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा बहुत अच्छी जायेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–यहां नीच के गुरु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक के गुप्त-शत्रु बहुत होंगे। गुप्त रोग की संभावना भी रहेगी।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यहां वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दशम भाव पर होगी। गुरु नीच राशि पर ही होगा। फलतः जातक की लंबी आयु होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शत्रुओं का नाश भी होगा तथा राजपक्ष में शुभ घटना भी घटित हो सकती है।
3. **गुरु+मंगल**–यहां पर मंगल होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली होगा। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति होगी।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक वाक्पटु, कुशल वक्ता एवं धार्मिक व्यक्ति होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक का धन व्यर्थ के कामों में खर्च होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि करेगा। जातक राजातुल्य वैभव, ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में नीच के गुरु के साथ द्वितीय स्थान में राहु मकर (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का धन गलत कार्यों में खर्च होगा। धन संग्रह हेतु किये गये प्रयासों में सफलता नहीं मिलेगी।
8. **गुरु+केतु**–जातक फिजूलखर्च होगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ



ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा। जातक धार्मिक होगा एवं उसे पिता की ओर से सही सम्मान भी मिलेगा। माता का सुख कम, मकान तथा वाहन का सुख मध्यम होगा। भाई-बहनों में प्रेम होगा। राजनीति, शिक्षा व धर्म के क्षेत्र में जातक को बड़ी भारी सफलता मिलेगी।

दृष्टि—तृतीयस्थ गुरु की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं लाभ स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

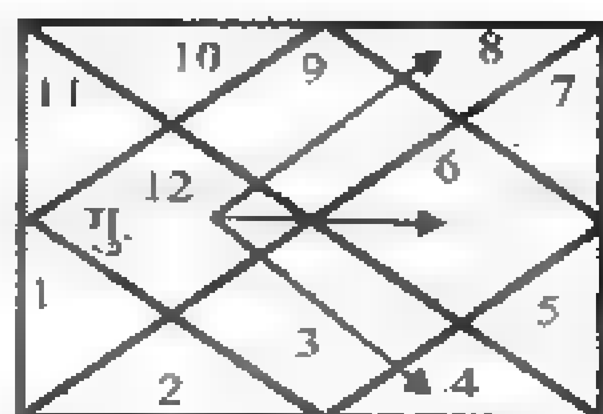
दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा बहुत उत्तम जायेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—यहां गुरु के साथ सूर्य होने से जातक बहुत भाग्यशाली होगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति तृतीय स्थानगत कुंभ राशि में होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को विवाह सुख, भाग्य सुख एवं व्यापार-सुख मिलेगा। जातक को ये तीनों सुख पूर्ण गुणवत्ता के साथ मिलेंगे। जातक सुखी व्यक्ति होगा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल भाइयों-कुटम्बीजनों का सुख देगा।
4. **गुरु+बुध**—यहां गुरु के साथ बुध होने से जातक को बड़े भाई का सुख, छोटे भाई-बहनों का सुख मिलेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र भाइयों-बहनों व बुआ के मध्य मनमुटाव की स्थिति लायेगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि मूल त्रिकोण राशि में होगा। जातक के भाई व नजदीकी रिश्तेदार धनवान होंगे।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में कुंभ के गुरु के साथ तृतीय स्थान में राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का पराक्रम भंग होगा। जातक की अपने भाइयों-परिजनों के साथ कम बनेगी। बराबरी की भावना से संबंध बिगड़ जायेंगे।

4. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु भाइयों से यश दिलायेगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां चतुर्थ स्थान में स्वगृही होगा। फलतः कुलदीपक योग, केसरी योग एवं हंस योग बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान महान ऐश्वर्यशाली व यशस्वी होगा। जातक को जमीन-जायदाद, वाहन, मित्र-बंधु, माता-पिता का पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि), दशम स्थान (कन्या राशि) एवं व्यय स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। अष्टम भाव पर दृष्टि होने से यह जातक को दीर्घायु देता है।

निशानी–जातक को नौकरी-व्यवसाय में यश-सम्मान मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का दानी परोपकारी व्यक्ति होता है।

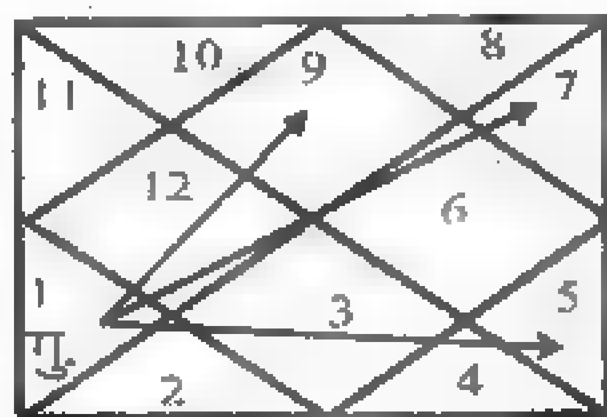
दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक की भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य राजयोग को दूना कर देगा। जातक को पिता का सुख तथा सम्पत्ति मिलेगी।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति चतुर्थ भावगत मीन राशि में होगी। यहां यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश के साथ युति होगी। गुरु यहां स्वगृही होंगे। केन्द्र में बैठकर दोनों शुभ ग्रह 'हंस योग', 'यामिनीनाथ योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। इनकी दृष्टि अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय स्थान पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी। वह रोग एवं दुर्घटनाओं का मुकाबला करने में सक्षम होगा। जातक राज्य (सरकार) में उत्तम पद को प्राप्त करेगा तथा यात्राओं एवं शुभकार्यों (परोपकार के कार्यों) में रुपया खर्च करेगा।

3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल जातक को गांव का मुखिया एवं बड़ी सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिबल से खूब रुपया कमायेगा। जातक को ननिहाल से लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र 'किम्बहुना योग' बनायेगा। जातक राजा होगा। उसके पास कई वाहन होंगे।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से जातक की मां धनवान एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली होगी।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में स्वगृही गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में राहु अपनी नीच राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की माता गुजर जायेगी। 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा, परन्तु माता का सुख कमजोर रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक को धार्मिक कार्यों से यश देगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां पंचम स्थान में मेष (मित्र) राशि का होगा। जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। उसे उत्तम भवन एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक का पिता के साथ उत्तम संबंध होगा। जातक शिक्षित, सभ्य एवं विद्वान होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ गुरु की दृष्टि भाग्य स्थान (सिंह राशि), लाभ स्थान (तुला राशि) एवं अपने ही घर लग्न स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

निशानी–जातक चुगलखोर होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य उच्च का होने से जातक उच्च विद्या, प्रशासनिक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा।

2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति पंचम भावस्थ 'मेष राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह, भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक की उन्नति, उसका भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक धनवान एवं विद्वान् होगा। व्यापार-व्यवसाय में उसे लाभ बराबर मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल स्वगृही होगा। ऐसा जातक उत्तम शिक्षा प्राप्त करेगा। उसकी संतति सुयोग्य एवं प्रभावशाली होगी।

4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध जातक को प्रखर बुद्धि का स्वामी बनायेगा। जातक कम्प्यूटर मास्टर होगा। जातक सी.ए., गणक, गणितज्ञ एवं वैज्ञानिक के रूप में उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

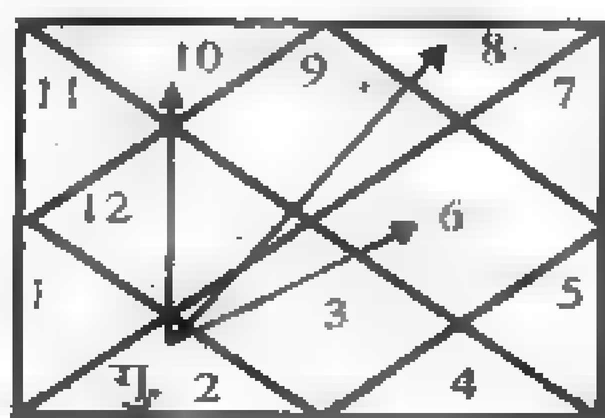
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से एकाध बार विद्या प्राप्ति में रुकावट संभव है। जातक व्यापार प्रेमी होगा।

6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि यहां नीच राशि में होगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा व विदेश जायेगा।

7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ पंचम स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण विद्या में रुकावट, संतान में रुकावट संभव है। जातक परेशान व अशांत रहेगा।

8. **गुरु+केतु**–यहां केतु उत्तम संतति देता है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभफल भी देगा। गुरु यहां छठे स्थान में वृष (शत्रु) राशि में होगा। गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति बड़े संघर्ष के बाद होगी। जातक का कुटुम्ब बड़ा होगा। जातक को मकान-वाहन का सुख संतोषजनक नहीं होगा।

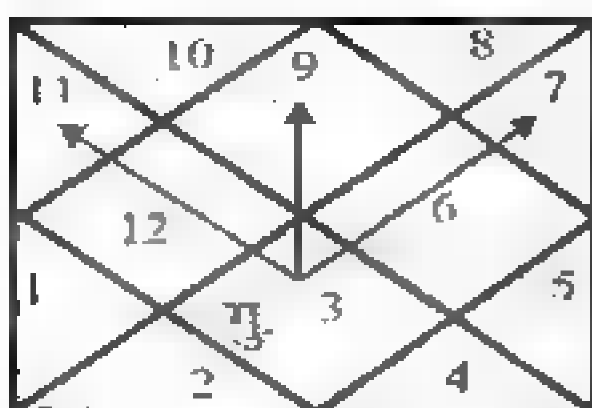
दृष्टि–षष्टमस्थ गुरु की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि), व्यय भाव (वृश्चिक राशि) एवं धन भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक का धंधा-व्यापार ठीक चालेगा। जातक का खर्च आवक से अधिक होगा।

निशानी–जातक को मूत्राशय का रोग हो सकता है। जातक को मदाग्नि की शिकायत सभव है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' में वृद्धि करता है। जातक को काफी दिक्कतों व परेशानी का सामना करना पड़ेगा।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। '**भोजसंहिता**' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति छठे भावगत वृष राशि में है। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां उच्च का होगा अष्टमेश का षष्टम में जाना अच्छा माना गया है। परन्तु गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' तथा 'सुखभंग योग' की सृष्टि हुई। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। सुख प्राप्ति के संसाधनों में कमी महसूस करेंगे तथा कई बार ऐसा भी लगेगा कि प्रयत्न (प्रयासों) का पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। इस शुभ योग के कारण अन्तिम सफलता निश्चित है।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से '**विद्याभंग योग**' बनता है। जातक को संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध विलम्ब विवाह योग बनाता है। 'विवाहभंग योग' भी बनाता है। शादी होकर छूट सकती है।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' की सृष्टि करती है। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। गुप्तेन्द्री का रोग संभव है।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि 'धनहीन योग', पराक्रमभंग योग बनाता है। जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा। कई बार प्रतिष्ठा भंग होने के अवसर उपस्थित होंगे।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ छठे स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण परिश्रम का लाभ नहीं होगा। कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–यह केतु के कारण गुप्त रोग की संभावना है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां सप्तम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। गुरु के कारण 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' बनेगा। ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली व आकर्षक होगा। लग्नेश के लग्न को देखने से 'लग्नधिपति योग' बना। जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। विजयश्री हाथ लगेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ गुरु की दृष्टि लाभ स्थान (तुला राशि), लग्न स्थान (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक को माता, वाहन का सुख उत्तम मिलेगा।

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा शुभ होगी, परन्तु गुरु में शनि का अंतर मारक होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य होने से जातक का सुसराल धनवान होगा।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति सातवें भाव में मिथुन राशि के अंतर्गत होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यह युति केन्द्रवर्ती है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर है साथ ही 'कुलदीपक योग' एव 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि भी हो रही है। फलतः जातक के व्यक्तित्व में निखार आयेगा, जातक समाज का अग्रगण्य, प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय के द्वारा धन की प्राप्ति करेगा एवं उसका जनसम्पर्क सघन होने से पराक्रम तेज रहेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से 'मांगलिक दोष' समाप्त होगा। जातक को स्त्री-संतान सुख मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**–जातक राजा के समान पराक्रमी तथा वैभवशाली होगा। 'भद्र योग' के कारण जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर एवं वफादार होगी।

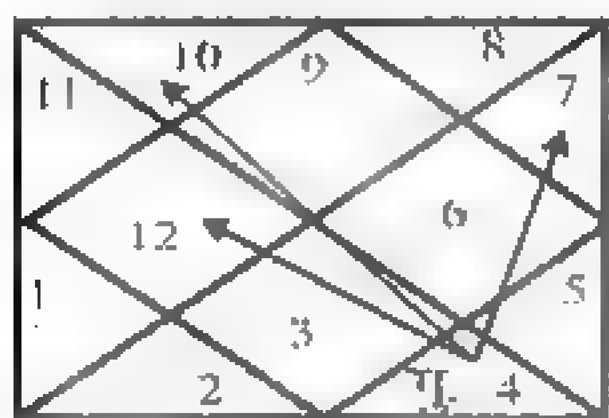
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी विशेष सुन्दर व हृष्ट–पुष्ट शरीर वाली होगी। पति–पत्नी में नोक-झोंक होती रहेगी।

6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनवान होगा। पत्नी कमाऊं होगी।

7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ सातवें स्थान में राहु मिथुन (मूलत्रिकोण) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण गृहस्थ सुख में बाधा होगी। जातक को अपनी पत्नी से विचारधारा कम मिलेगी। पत्नी के रहते दूसरी औरत से संबंध होंगे।

8. **गुरु+केतु**–यहां केतु पेट में शल्य चिकित्सा करा सकता है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां अष्टम स्थान में उच्च का होगा। कर्क राशि के पांच अंशों में गुरु परमोच्च का कहलायेगा। गुरु की इस स्थिति के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। यह गुरु अल्पायु का दर्शाता है। जातक को उत्तम विद्या की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ गुरु की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का खर्च बढ़ा-चढ़ा होगा। माता की बीमारी को लेकर धन खर्च होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

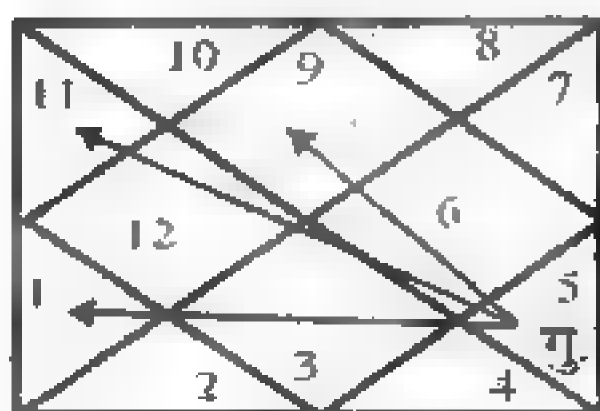
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक के जीवन में सरकारी परेशानियां आयेंगी।

2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति आठवें भाव में कर्क राशि में अंतर्गत होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। गुरु अष्टम में जाने

से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की सृष्टि होगी। चंद्रमा वस्तुत: अष्टमेश होकर अष्टम भाव में स्वगृही है अत: जातक की आयु में वृद्धिकर्ता ही है। अष्टम स्थान में बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव, धन भाव एवं सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को प्रयत्न करने पर यथेष्ट धन की प्राप्ति तो होगी पर वह धन खर्च होता चला जायेगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख, संसाधन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

3. **गुरु+मंगल**—यहां मंगल के कारण 'नीचभंग योग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली तथा पराक्रमी होगा। 'विपरीत राजयोग' भी बना है। जातक को राजनीति में हस्तक्षेप होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध दो विवाह करायेगा। गृहस्थ सुख में बाधा (न्यूनता) बनी रहेगी।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र के कारण 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक धनवान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनता है। जातक को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ेगा तथा मान-प्रतिष्ठा भंग होने के अवसर उपस्थित होंगे।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ आठवें स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा है।
8. **गुरु+केतु**—यहां केतु शल्य चिकित्सा का योग कराता है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां नवम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। ऐसे व्यक्तियों पर ईश्वर की अनुकम्पा रहती है। संघर्ष न्यून एवं भाग्योदय शीघ्र होता है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली, स्वास्थ्य उत्तम एवं आयु दीर्घ होती है। जातक को माता-पिता का सुख

एवं सम्पत्ति मिलती है। छोटे भाई-बहनों का सुख पत्नी-संतान का सुख उत्तम होता है।

दृष्टि–नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं संतान भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक की संतति कुल का नाम रोशन करेगी।

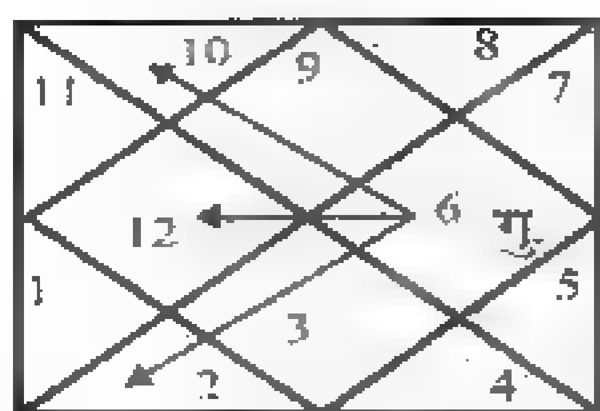
निशानी–जातक को बेटे-पोतों का पूर्ण सुख मिलता है।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–सूर्य यहां स्वगृही होकर प्रबल राजयोग बनायेगा। ऐसा जातक तेजी से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। योजनाएं सफल होंगी।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति नवमे भाव में 'सिंह राशि' के अंतर्गत हो रही है। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश-सुखेश के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत जातक के व्यक्तित्व में निखार आयेगा। उनका चहुंमुखी विकास होगा। उसकी प्रथम संतति के बाद उसका भाग्य तेजी से चमकेगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
3. **गुरु+मंगल**–यहां पर मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति एवं तेजस्वी पुत्र का स्वामी बनायेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध जातक को पत्नी की मदद से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव बहुत आयेंगे।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से जातक धनवान एवं प्रबल पराक्रमी होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ नवमें स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण भाग्योदय में बाधा होगी। सरकारी नौकरी से पदच्युत होने का भय एवं झूठा आरोप लगेगा।
8. **गुरु+केतु**–यहां केतु भाग्य में वृद्धि करायेगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां दशम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। इसके कारण कुलदीपक योग, केसरी योग बनेगा। ऐसे जातक को मकान, वाहन एवं माता का सुख उत्तम होगा। पिता सुख उत्तम, पत्नी-संतान का सुख उत्तम मिलेगा। जातक दूरदर्शी, न्यायप्रिय, धार्मिक एवं परोपकारी होगा। जातक राजनीति में भी प्रभावशाली व्यक्ति होगा। जातक की समाज में उत्तम प्रतिष्ठा होगी। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।

दृष्टि—दशमस्थ गुरु की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक धनी, भौतिक उपलब्धियों से परिपूर्ण तथा शत्रु रहित होगा।

निशानी—ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगता है।

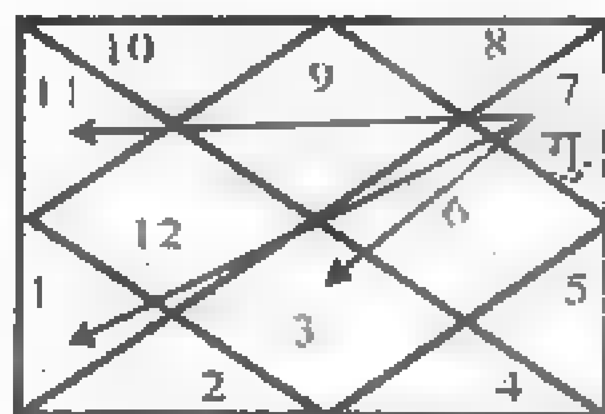
दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों व राजकीय सम्मान की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य जातक को अनेक बड़े मकानों का स्वामी बनायेगा।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि में होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। परन्तु केन्द्रवर्ती होने से 'यामिनीनाथ योग' बना। गुरु केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान पर है। फलतः ऐसा जातक खूब धन कमायेगा व भौतिक ऐश्वर्य, प्राप्त करेगा। जातक रोग और शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक का नाम समाज के सौभाग्यशाली एवं सफल व्यक्तियों में से एक होगा।
3. **गुरु+मंगल**—यहां मंगल 'दिग्बली' होकर जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा।

4. **गुरु+बुध**—यहां गुरु के साथ बुध 'भद्र योग' बनाकर जातक को राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी एवं बुद्धिशाली बनायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र नीच का होगा। जातक को राजकीय समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि होने से जातक महाधनी एवं पराक्रमी होगा।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ दसवें स्थान में राहु कन्या राशि में स्वगृही है। 'चाण्डाल योग' के कारण राजकाज में बाधा होगी। शत्रुओं को हराने में, कोर्ट-कचहरी में रुपया बरबाद होगा। रोजी-रोजगार में दिक्कते आयेगी।
8. **गुरु+केतु**—यहां केतु जातक को पराक्रमी बनायेगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां एकादश स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं पाने वाला, राज-दरबार में मान-सम्मान पाने वाला, नौकर-चाकर, वाहन, मकान सुख से युक्त यशस्वी जातक होता है। जातक का धंधा-व्यापार ठीक होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत गुरु की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि), संतान भाव (मेष राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। पत्नी का सुख उत्तम, जातक का पुत्र धर्मवीर होगा।

निशानी—जातक का राष्ट्रीय राजनीति में हस्तक्षेप होगा।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

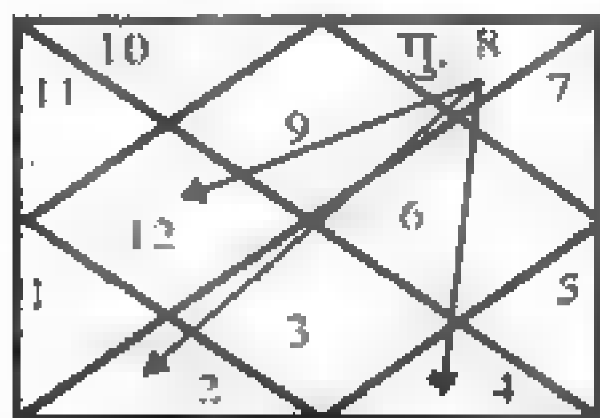
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य नीच का होगा। ऐसे जातक को उच्च विद्या तथा पुत्र सुख मिलेगा। जातक का पुत्र तेजस्वी होगा।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। यह युति अष्टमेश

चंद्रमा की लग्नेश-सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

3. **गुरु+मंगल**—यहां मंगल जातक को उच्च तकनीकी शिक्षा देगा। जातक को भूमि-भवन से लाभ होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिमान, कम्प्यूटर विद्या का जानकार होगा अथवा उद्योगपति होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—यहां शुक्र स्वगृही होगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ उच्च का शनि जातक को करोड़पति बनायेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ एकादश स्थान में राहु तुला (मित्र) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण लाभ में बाधा होगी। व्यापार व्यवसाय में नुकसान होगा। धनागमन में रुकावट महसूस होगी।
8. **गुरु+केतु**—जातक उद्योगपति होगी।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में



धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। गुरु के कारण लग्नभंग योग एवं सुखभंग योग बना। ऐसे जातक को मकान, वाहन एवं माता का सुख कमजोर होता है। जातक का जीवन दुःख, संघर्ष व कष्टों से भरा रहेगा। जातक पर दुःख, कातर, परोपकारी एवं दानी होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत गुरु की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मीन राशि), षष्टम भाव (वृष राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। माता के सुख में न्यूनता होगी, जातक को गुप्त शत्रु एवं रोग परेशान करते रहेंगे।

निशानी—जातक पारिवारिक, सामाजिक व दैनिक कार्यों के बोझ के नीचे दबा रहेगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा निर्बल फल देने वाली साबित होगी।

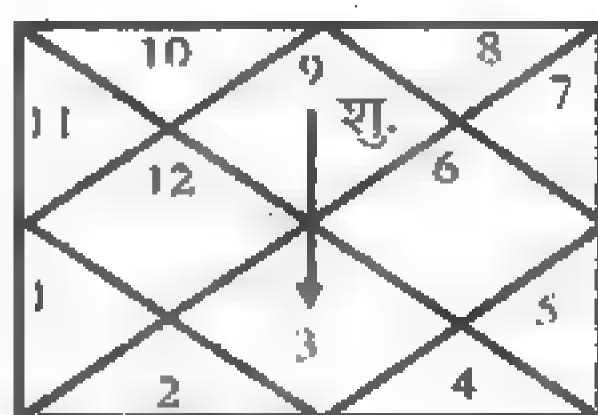
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को अनेक परेशानियों, दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृश्चिक राशि' में होगी। वस्तुत यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम् भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण समर्थ होकर दीर्घायु को प्राप्त करेगा। जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं वैभव की प्राप्ति होगी। जातक तीर्थयात्राएं करेगा एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करेगा।
3. **गुरु+मंगल**–मंगल यहां 'विमल नामक विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनवान एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध 'विवाहभंग योग' कराता है। जातक दो विवाह करेगा। गृहस्थ भंग होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–शुक्र गुरु के साथ 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' करायेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगी।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि 'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' कराता है। जातक आर्थिक विषमताओं का सामना करेगा। जातक का मानभंग होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ द्वादश स्थान में राहु वृश्चिक (नीच) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होगा। कार्य में बाधा। यात्रा में चोरी होगी। दुर्घटना में अंग-भंग होने का खतरा है।
8. **गुरु+केतु**–केतु जातक को परोपकारी, धार्मिक एवं मोक्ष मार्ग का पथिक बनायेगा।

❑❑❑

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह हैं। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसा जातक स्वयं आकर्षक व सुन्दर होगा तथा उसकी पत्नी भी सुन्दर व रूपवान होगी। जातक वस्त्रलंकार का शौकीन, रसिक मिजाज, कलाप्रिय व सौन्दय प्रेमी होगा। जातक को नौकर-चाकर का सुख उत्तम, मित्र-मंडल श्रेष्ठ मिलेगा। जातक फल-फूल, इत्र-सुगन्ध एवं स्वादिष्ट भोजन का शौकीन होगा।

निशानी—जातक को बड़े भाई के साथ मधुर संबंध रहेगा।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। परन्तु जातक को आंतरिक रोगों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी बनायेगा। जातक भाग्यशाली होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा दुर्घटना योग बनाता है।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को पराक्रमी एवं धनी बनायेगा। परन्तु जातक का भाग्योदय प्रथम संतान के बाद होगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध उत्तम गृहस्थ सुख देगा। जातक की पत्नी रम्भा के समान सुन्दर होगी।

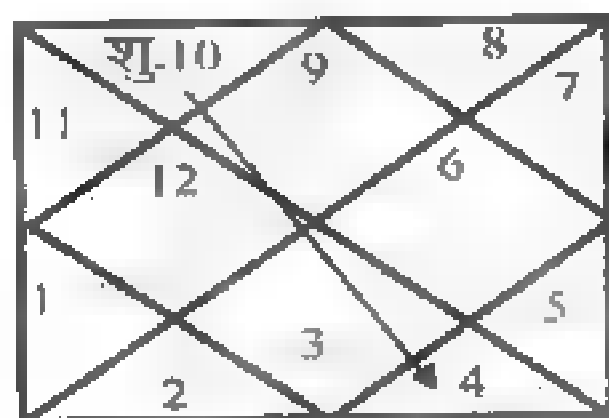
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से जातक को पतिव्रता पत्नी मिलेगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के शनि जातक को मेहनत का पूरा लाभ देगा। जातक धनवान होगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के शरीर में गुप्त या प्रकट रोग करायेगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु शुभ है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्ठेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह हैं। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में मकर (मित्र) राशि में होगा। यह शुक्र कुटुम्ब सुख श्रेष्ठ देता है। यह शुक्र धन की वृद्धि करायेगा। शुक्र जातक को विनम्र व मीठी वाणी देता है। षष्ठेश के धन स्थान में होने से जातक पर व्यर्थ के खर्च व जंजाल आते रहेंगे। यहां शुक्र जातक को उच्च प्रतिष्ठा व धन लाभ देगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक के अकारण शत्रु पैदा होंगे।

निशानी–जातक को स्त्री-मित्रों से धोखा होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की पत्नी बीमारी होगी। पत्नी को लेकर व्यर्थ का खर्च होगा। शुक्र में शनि के अन्तर से पत्नी की मृत्यु संभव है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक भाग्यशाली तथा धनवान होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्रमा धनहानि देगा।

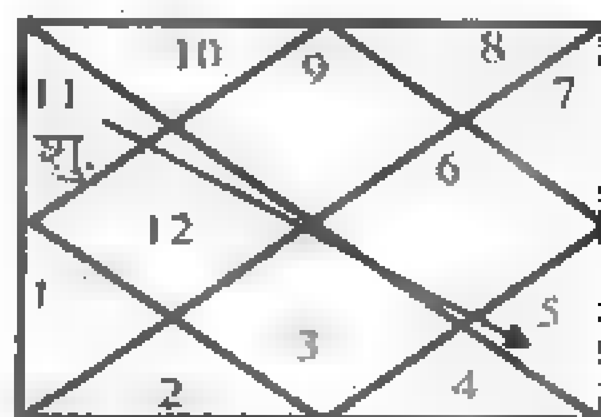
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यहां मंगल उच्च का होने से जातक महाधनी होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक की पत्नी धनवान होगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु नीच का होगा। ऐसे जातक की वाणी मीठी व गम्भीर होगी।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि स्वगृही होगा, ऐसे जातक की वाणी कुटिल होगी। जातक धनवान होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु धन के घड़े में छेद के समान है जातक आर्थिक संकटों से गुजरेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु भी धन प्राप्ति में बाधक ग्रह का काम करेगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह हैं। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां तृतीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में होगा। शुक्र छठे भाव से दसवें तथा एकादश भाव से पांचवें स्थान पर होने से शुभ फलदाई हो गया है। जातक गीत-संगीत, कला, सौन्दर्य-साहित्य का शौकीन होगा। जातक को सहोदर भाई व पिता का सुख मिलता है। जातक का भाग्योदय शीघ्र होता है। ऐसा जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्य स्थान (सिंह राशि) पर होने से मित्र वर्ग जातक को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

निशानी–जातक की बहनें बहुत ज्यादा होंगी। जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा। पत्नी प्रायः आर्थिक योजनाओं को सफल बनाने में सहभागी होगी।

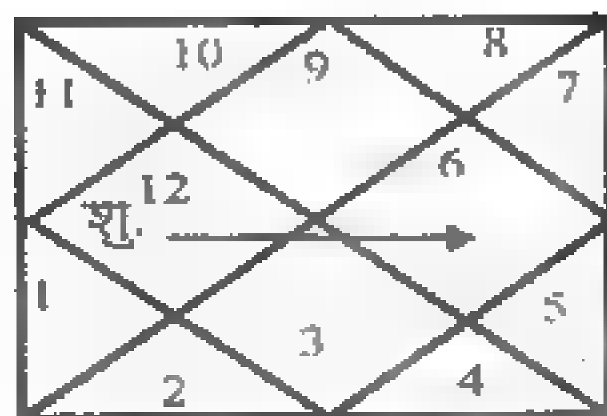
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। शुक्र की दशा में चंद्रमा का अंतर घातक होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को कुटुम्ब सुख, भाई-बहनों के साथ रहने का सुख देगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्र भाई-बहनों में मनमुटाव व सुख में कमी दिलाता है।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक के मित्र बहुत होंगे।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से जातक बुद्धिमान होगा व उसके ससुराल वाले पराक्रमी होंगे।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु बड़े भाई का सुख देगा। जातक की समाज में बड़ी भारी प्रतिष्ठा होगी।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से मित्र व परिजनों से लाभ दिलायेगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु परिजनों में विवाद उत्पन्न करेगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु परिजनों में गलतफहमी पैदा करेगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां चतुर्थ स्थान में उच्च का होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होगा। शुक्र की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' एवं 'मालव्य योग' बना। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व प्रभावशाली होगा। जातक की पढ़ाई अच्छी होगी। माता या म[redacted] का सुख उत्तम होगा। शुक्र केन्द्र में होने से जातक का धंधा-व्यापार उत्तम होगा। जातक के पास उत्तम वाहन व भवन होगा। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः यश, धन पद व सुख-संसाधनों में बराबर वृद्धि होगी।

निशानी—जातक कामी होगा एवं गलत (निम्न) कार्यों मे पैसा खर्च करेगा।

दशा—शुक्र की दशा में भौतिक सुखों की वृद्धि होगी पर शारीरिक तन्दुरस्ती ठीक नहीं रहेगी। शुक्र में शनि का अन्तर बहुत खराब जायेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य होने से जातक को राजकार्य, राजनीति में लाभ मिलेगा। सरकार में, राजनीति में जातक का वर्चस्व होगा।
2. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल होने से जातक बड़ी भूमि का स्वामी होगा। जातक के पुत्र आज्ञाकारी होंगे। जातक करोड़पति होगा।

3. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा ही होगा। जातक का सुसराल धनवान व प्रतिष्ठित होगा।

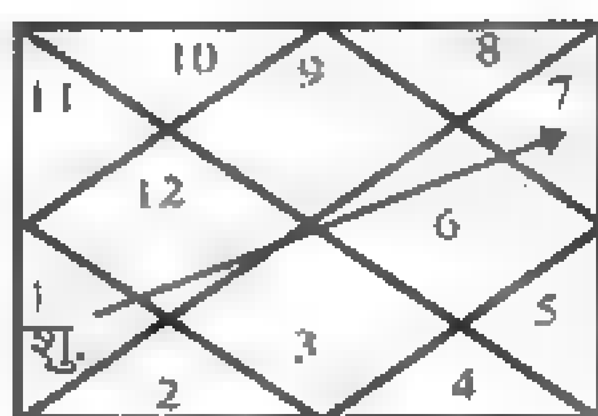
4. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से 'किम्बहुना योग' बनता है। ऐसा जातक दम्भी होगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

5. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक महाधनी एवं महापराक्रमी होगा।

6. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक की माता को बीमार रखेगा।

7. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु वाहन दुर्घटना का भय देगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां पंचम स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। यह शुक्र जातक को उच्च शिक्षा (Higher Educational Degree) देगा। जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा। पत्नी द्वारा धन लाभ संभव है। जातक को कन्या संतति अधिक होगी। कन्याएं तेजस्वी होंगी। जातक का एक पुत्र भी होगा। जातक समझौतावादी सिद्धान्त में विश्वास रखेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश भाव अपने स्थान (तुला राशि) पर होगी। इससे आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। जातक एकाधिक कार्यों से धनार्जन करेगा।

निशानी–जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। चंद्रमा का अंतर घातक होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

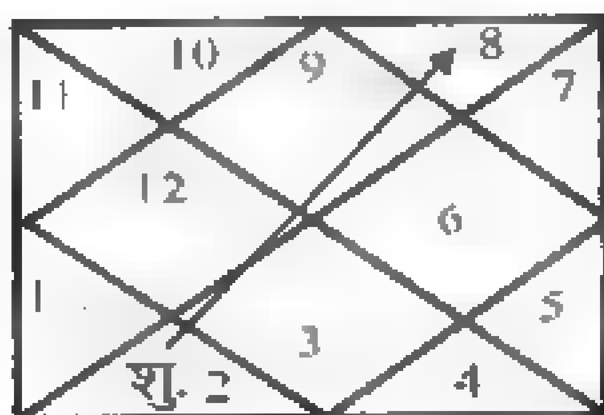
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य उच्च का होगा। ऐसा जातक महान तेजस्वी होगा एवं उच्च शिक्षा को प्राप्त करेगा। उसकी संतति भी तेजस्वी होगी।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्रमा विद्या में बाधा पहुंचायेगा, जातक कला प्रेमी होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल स्वगृही होगा। ऐसा जातक तकनीकी विद्याओं का जानकार होगा। जातक व्यापार में लाभ प्राप्त करेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को उत्तम पत्नी एवं संतान सुख देगा। जातक बुद्धिमान एवं शैक्षणिक उपाधियों से परिपूर्ण होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु जातक को कठोर परिश्रमी एवं शिक्षक बनायेगा। ऐसा जातक उपदेशक तथा धर्म शास्त्रों का जानकार होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि नीच राशि का होगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक कला के माध्यम से, हुनुर में धन व यश दोनों अर्जित करेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु पुत्र संतति के सुख में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की विद्या अधूरी छुड़वा देगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां छठे स्थान में वृष राशि में स्वगृही होगा। षष्टेश के छठे स्थान में स्वगृही होने से 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। 'लाभभंग योग' भी बनेगा। ऐसा जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा। जातक फालूत के कार्यों में खूब पैसा खर्च करेगा। षष्टेश षष्टम स्थान में स्वगृही होने से जातक को ऋण व रोग का भय नहीं रहेगा। जातक फिजूल खर्च होगा।

दृष्टि–षष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी ऐसा जातक विलासी स्वभाव का एवं व्यसनी होगा।

निशानी–जातक का विलम्ब विवाह होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

विशेष–लाभेश के छठे जाने से 'दरिद्र योग' बनता है। जातक धन की कमी से परेशान होगा। इसे कर्णदोष भी होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'भाग्यबाधा योग' उत्पन्न करेगा। जातक को भाग्योदय हेतु बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक ड्रग ऐडीक्ट हो सकता है। जातक का धन गलत कार्य में खर्च होगा।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल विद्या में बाधा 'संततिहीन योग' भी बनाता है। यह योग पुत्र संतान के सुख में न्यूनता (कमी) बनाता है।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध विलम्ब विवाह योग कराता है। सही जीवनसाथी के चुनाव में देरी होगी।

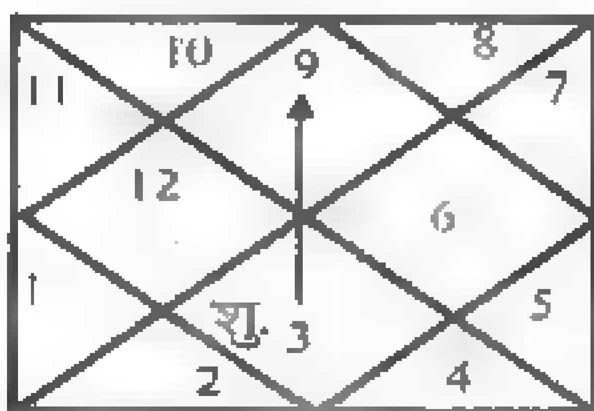
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं सुखभंग योग' कराता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति विलम्ब से होगी।

6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' उत्पन्न करता है। जातक को आर्थिक एवं सामाजिक विडम्बनाओं से गुजरना पड़ेगा।

7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु गुप्त बीमारियां व रोग उत्पन्न करता है।

8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु गुप्तांगों का ऑपरेशन कराता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां सप्तम स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा। फलतः कुलदीपक योग बनेगा। शुक्र यहां छठे भाव से दूसरे एवं ग्यारहवें भाव से नवमे स्थान पर होने से शुभ है। जातक का विवाह देरी से होता है जातक के रज, वीर्य एवं यौनांग पुष्ट होते हैं। जातक कामी होता है। उसे धन, सुख व ऐश्वर्य का पूरा लाभ मिलता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक को प्रत्येक काम में सफलता मिलती रहेगी।

निशानी—जातक अन्य स्त्रियों के चक्कर में रहता है। जातक के गुप्त शत्रु होते हैं।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

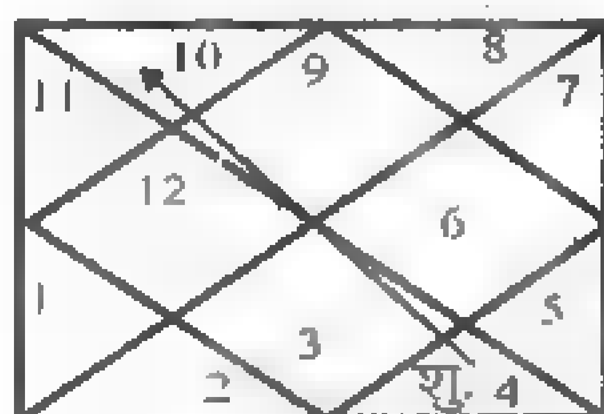
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक के भाग्योदय में वृद्धि करायेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा वैवाहिक सुख में विलम्ब कराता है पर जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल विवाह में विलम्ब कराता है तथा गृहस्थ सुख में खटपट को भी बताता है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा। लग्नेश लग्न को देखेगा। जातक निर्बाध गति से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनी होगा। ससुराल से जातक को लाभ होता है।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु तलाक का योग बनाता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु वैवाहिक जीवन में गड़बड़ी उत्पन्न करता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां अष्टम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति में लाभभंग योग तथा 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक समाज का प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होगा। जातक मिथ्यावादी, कलहवादी एवं विवेकहीन निर्णय लेगा। जातक के शत्रु अकारण पैदा होते रहेंगे।

दृष्टि–अष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि धनभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक धनी होगा।

निशानी–जातक का धन अदालत व फालतू कार्यों में खर्च होगा।

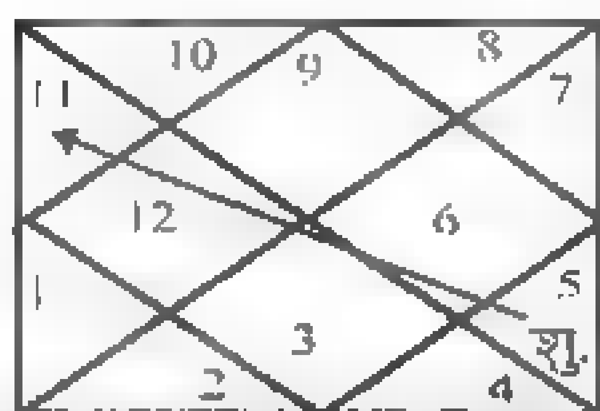
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। जातक के शत्रु या गुप्त रोग जातक को परेशानी करेंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु विशेष संघर्ष करना पड़ेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा स्वगृही होकर 'विपरीत राजयोग' बनायेगा। दोहरे राजयोग के कारण जातक धनी तथा वाहन सुख से युक्त होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल नीच राशि में होगा। ऐसे विद्याबाधा योग एवं 'लाभभंग योग' की सृष्टि होती है। जातक की प्रारंभिक विद्या में बाधा आयेगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक के दो विवाह होने की सम्भावना रहती है।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु भी 'द्विभार्या योग' बनाता है।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करता है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु 'द्विभार्या योग' बनाता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की पत्नी की अकाल मृत्यु कराता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां नवम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। जातक को पिता का सुख मिलेगा। जातक धार्मिक होगा। जातक को धंधे व्यापार में खूब लाभ होगा। जातक साहित्य, सौन्दर्य व श्रृंगार प्रिय होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दृष्टि–नवमस्थ शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक को सहोदर सुख मिलेगा। मित्र अच्छे होंगे।

निशानी–जातक विपरीत लिंगियों के प्रति जबरदस्त आकर्षित रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में धन की प्राप्ति होगी पर स्वास्थ्य की हानि होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक का उत्तम भाग्योदय कराता है एवं सरकारी नौकरी दिलाता है।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा होने से जातक कला प्रेमी बनता है। जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आयेगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ शनि जातक के पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि करेगा। जातक धनवान होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने पर जातक का सुसराल धनवान तथा पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

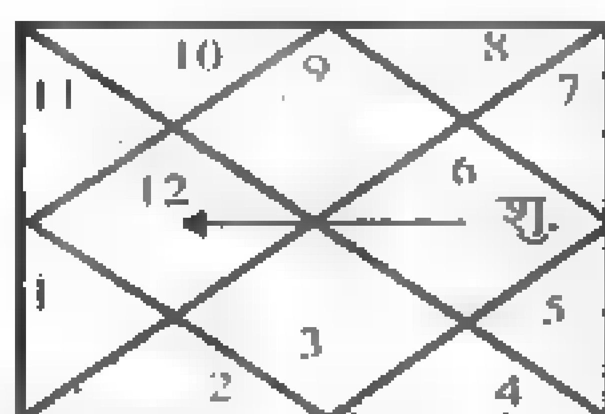
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु जातक को पुरुषार्थ का लाभ देगा। 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा। जातक निर्बाध गति से उन्नति पथ की ओर बढ़ता चला जायेगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा। जातक प्रबल पराक्रमी होगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु संघर्ष का द्योतक है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां दशम स्थान में नीच का होगा। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परम नीच का होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक व्यापार धंधे में आगे बढ़ेगा। जातक को वाहन का सुख, उत्तम भवन व नौकर-चाकर का सुख मिलेगा। जातक ऋण, रोग व शत्रु को दबाने में समर्थ होगा।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को माता का सुख प्राप्त होगा।

निशानी–जातक को सुगन्धित द्रव्य, टी.वी., इलेक्ट्रोनिक्स सामान, ज्वेलरी इत्यादि से विशेष लाभ होगा।

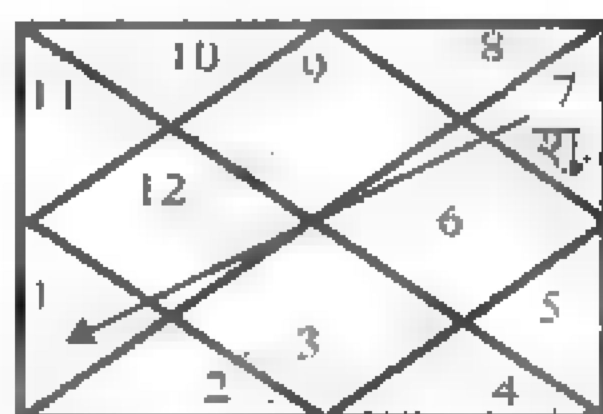
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को 'राजयोग' तथा रोजी रोजगार के उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को कला प्रेमी, पर्यटन व संगीत का शौकीन बनायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को बड़ी भू–सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा। जातक शिक्षित होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु जातक को धनी बनायेगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में उन्नति करेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होंगे।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु राज्य सुख में बाधक है। फिर भी जातक पराक्रमी होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु सरकारी कार्यों में बदनामी दिलायेगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां एकादश स्थान में स्वगृही होगा। तुला राशि के 15 अंशों तक शुक्र मूल त्रिकोण राशि का कहलाता है। ऐसा जातक सफल उद्यमी होता है। वह बुद्धि चातुर्य से विरोधियों पर विजय प्राप्त करता है। जातक को माता-पिता, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलता है। जातक को नौकर उत्तम मिलते हैं। जातक धनी होता है एवं व्यापार से लाभ कमाता है।

दृष्टि–एकादश भावस्थ शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को उच्च श्रेणी की विद्या (Higher Educational Degree) मिलेगी।

निशानी–जातक की कन्या संतति अधिक होगी।

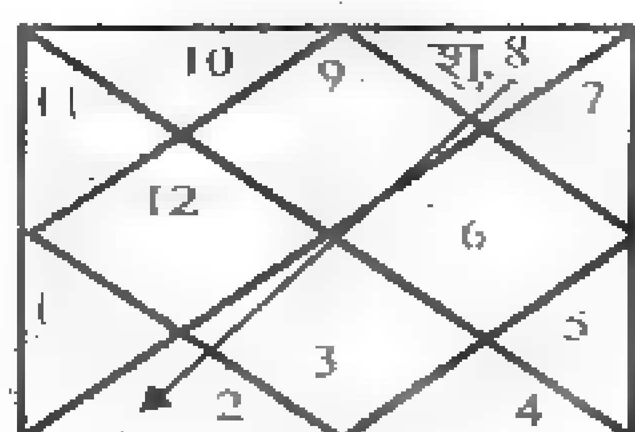
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में लाभ होगा। शुभ फल मिलेंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली तथा पराक्रमी होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा लाभ प्राप्ति में बाधक है। जातक कला के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को उच्च पद, प्रतिष्ठा दिलायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को भागीदारी में लाभ दिलायेगा। जातक को ससुराल से मदद मिलती रहेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। शिक्षित होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक 'किम्बहुना योग' के कारण राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव को भोगेगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा, विदेश जायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु व्यापार-व्यवसाय में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में रुकावट डालता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक (सम) राशि का होगा। शुक्र के कारण 'लाभभंग योग' एवं हर्ष नामक 'विपरीत राजयोग' बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी व अभिमानी होता है। जातक का सामाजिक स्तर उत्तम होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक की काम वासना विकृत होगी।

दृष्टि–व्यय भावस्थ शुक्र की दृष्टि अपने घर छठे स्थान (वृष रशि) पर होगी, फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक के मूत्राशय, गुर्दे या गुप्तांग में रोग संभव है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य, 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक परिश्रम करने के बाद भी अनुकूल परिणाम नहीं प्राप्त कर पायेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–ऐसा जातक व्यसनी या ड्रग एडिक्ट होगा। जातक के धन का खर्च गलत कार्यों में होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल 'विमल नामक विपरीत राजयोग' को बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा। जीवन की सारी सुख-सुविधाएं उसे प्राप्त होंगी।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से दो विवाह का योग बनता है।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु पुरुषार्थ का लाभ नहीं देता।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनाता है। जातक को धनार्जन हेतु एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु यात्रा में चोरी, घर में चोरी, पत्नी के आभूषणों की चोरी का संकेत देता है।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु नींद न आने की बीमारी देगा। जातक को कामुक सपने आयेंगे।

❑❑❑

धनुलग्न में शनि की स्थिति

धनुलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में

धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा, क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक धन, यश, विद्या एवं बुद्धि से सुसम्पन्न व्यक्ति होता है। जातक का अपने छोटे भाई-बहनों के साथ उत्तम संबंध होगा। जातक दूरदर्शी व दार्शनिक होगा।

दृष्टि—लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं दशम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। विवाह सुख में कुछ बाधा तथा जातक को नौकरी भी कुछ विलम्ब से मिलेगी।

निशानी—जातक का विलम्ब विवाह होगा। कई बार पुरुष जातक को विधवा स्त्री तथा स्त्री जातक को दूज वर से विवाह करना पड़ता है।

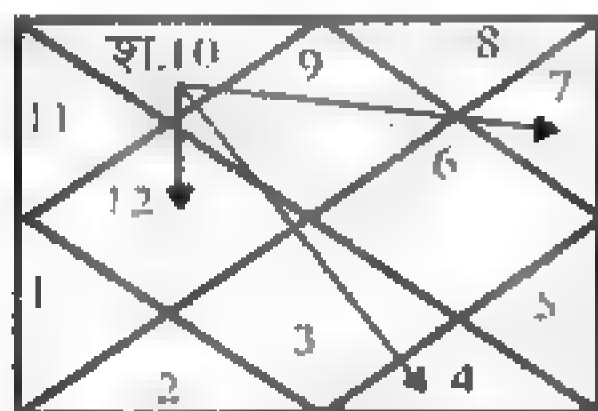
दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मध्यम फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: धनेश, पराक्रमेश शनि एवं भाग्येश सूर्य की युति होगी। सूर्य यहां मित्र स्थान में एवं शनि सम राशि में है। जातक स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ में धन अर्जित करेगा। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक का पुरुषार्थ रंग लायेगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को नकारात्मक सोच देगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक के व्यक्तित्व को विवादित बनायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध सांवली पर सुन्दर पत्नी देगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र पत्नी सुन्दर देगा। जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को प्रेतबाधा से ग्रसित कर सकता है। जातक के विचार विध्वंसात्मक होंगे।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक के मन-मस्तिष्क को दूषित करेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा, क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां द्वितीय स्थान में स्वगृही होगा। जातक महाधनी होगा। जातक को धन-संतान, कुटुम्ब का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक उद्योगपति होगा। जातक की माता बीमार रहेगी। जातक के वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। जातक महान पराक्रमी होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मीन राशि), अष्टम स्थान (कर्क राशि) एवं एकादश स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को माता, जन्म भूमि से दूर जाना पड़ेगा। जातक के गुप्त शत्रु होंगे तथा जातक को व्यापार से लाभ होगा।

निशानी–जातक के छोटे भाई-बहन जरूर होंगे पर उनसे कम बनेगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में धन व पराक्रम बढ़ेगा। शनि में बुध का अंतर अशुभ फल देगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश+धनेश, पराक्रमेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां स्वगृही है व सूर्य शत्रु क्षेत्री है। फलतः जातक धनवान तथा भाग्यशाली होगा। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही जातक धनवान होगा।

2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा धन हानि तथा कुटुम्ब में विग्रह करायेगा।

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा होगा। जातक महाधनी करोड़पति होगा। जातक का भाग्योदय पुत्र जन्म के बाद होगा।

4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से जातक को ससुराल से पैसा मिलेगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी। 'कलत्रमूलधन योग' उत्तम फल देगा।

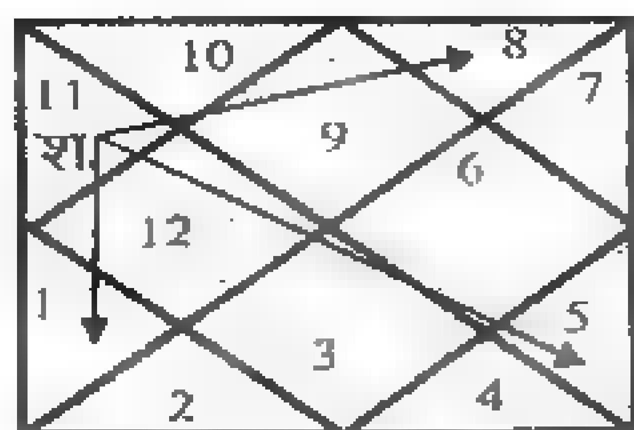
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव भोगेगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक को व्यापार से लाभ दिलायेगा। जातक कलाप्रिय होगा। जातक संगीत तथा सौंदर्य की उपासना पर धन खर्च करेगा।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से जातक की वाणी दूषित होगी। जातक का धन फालतू कार्यों में खर्च होगा।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु कुछ अंशों में धन हानि कराता है।

धनुलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां तृतीय स्थान में कुंभ राशि के मूल त्रिकोण का होगा। ऐसे जातक को कुटुम्ब व धन सुख उत्तम होता है। जातक को प्रारम्भिक विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी। ऐसा जातक अधार्मिक होगा। पिता से उसकी नहीं निभेगी। जातक की संतान भी जातक के साथ नहीं रहेगी। जातक परदेश में कमायेगा तथा वह व्यसनी होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि), भाग्य भवन (सिंह राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यवान होगा। उसे संतति सुख होगा पर अत्यधिक खर्चीले स्वभाव से आर्थिक विषमताएं बनी रहेंगी।

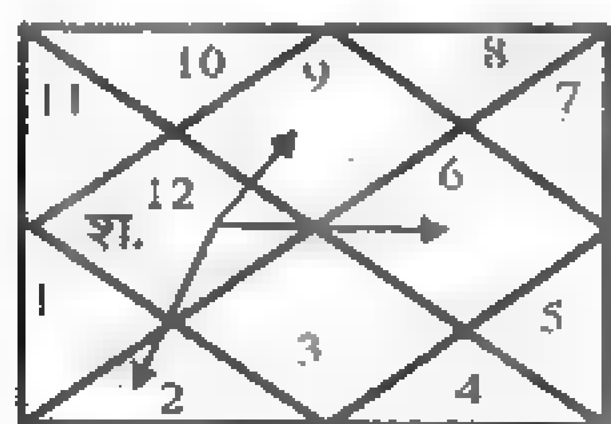
निशानी—जातक को संतान सुख विलम्ब से मिलता है। विद्या में एकाध बार रुकावट आयेगी। जातक डरपोक होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा। परन्तु अन्य तकलीफें भी आयेंगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। उसे बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाइयों में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक की संतान पराक्रमी होगी। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से 'कलत्रमूलधन योग' बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा। ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को पुरुषार्थ का पूरा लाभ देगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को स्त्री-मित्रों से धन दिलायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाइयों व कुटम्बीजनों का सुख नष्ट करेगा।
8. **शनि+केतु**–भाइयों व परिजनों में कीर्ति देगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां चतुर्थ स्थान में मीन (सम) राशि का होगा। ऐसे जातक के जन्म के समय माता को कष्ट होगा तथा बाद में भी माता का सुख नहीं मिलेगा। मीन राशि का शनि यदि पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक को भूमि, भवन, माता, विद्या-बुद्धि व नौकरी का सुख मिलेगा। अन्यथा अच्छी नौकरी की प्राप्ति हेतु जातक को बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। जातक धन संग्रह करेगा पर उसको भोग नहीं सकेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), छठे स्थान (शत्रु राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक को रोग का प्रकोप, नौकरी में कष्ट एवं परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

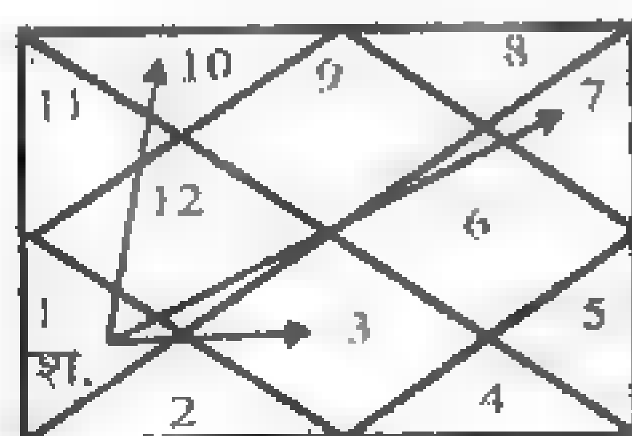
निशानी—व्यक्ति पुराने मकान में मरम्मत करवा कर रहेगा। जातक का स्वभाव ईर्ष्यालु होगा, तथा छोटी-मोटी बीमारियां लगी रहेंगी। इस शनि पर यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक के पिता को लम्बी रहेंगी।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतें बढ़ेंगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न के चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां मीन शत्रु राशि में एवं सूर्य मित्र राशि में होगा। जातक के माता-पिता बीमार रहेंगे। जातक धनवान एवं सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा होने से जातक सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा। जातक की माता बीमार होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को भूमि से लाभ देगा। जातक विद्यावान् होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध **'भद्र योग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य वैभव को भोगेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु **'हंस योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, वैभवशाली एवं धनवान होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा से कम विलासी नहीं होगा। ऐश्वर्य भोगेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु माता के सुख को नष्ट कर देगा। जातक की अपने मामा से भी नहीं बनेगी।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक का धन वाहन व नौकरों के रख-रखाव में खर्च करायेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां पंचम स्थान में नीच का होगा। मेष राशि में 20

अंशों में शनि परम नीच का होता है। ऐसे जातक को उच्च विद्या व संतान के प्रति असंतोष रहेगा। विद्या प्राप्त होगी पर मेहनत बहुत करनी पड़ेगी। जातक के मित्र कम होंगे पर छोटे भाई-बहनों के साथ बनेगी। जातक स्वार्थी, मिथ्यावादी होता है अतः समाज में उसकी प्रतिष्ठा नहीं होगी।

दृष्टि—शनि की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि), एकादश भाव (तुला राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः विलम्ब विवाह, लाभ में हानि होगी पर जातक धन संग्रह जरूर करेगा।

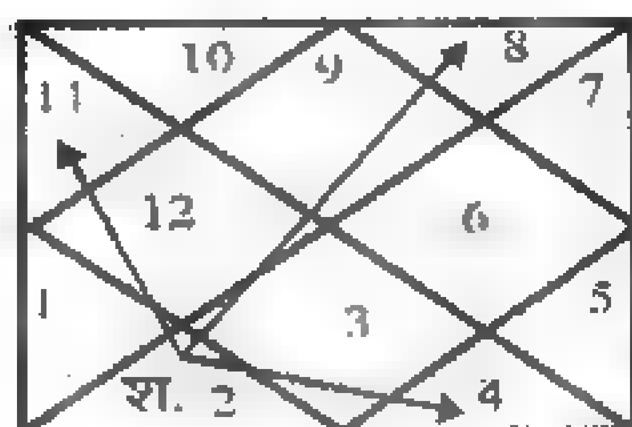
निशानी—जातक का विवाह देरी से होगा पर जातक को लड़का जरूर होगा। प्रायः जातक का छोटा भाई नहीं होगा तथा बड़े भाई का भी नाश होता है।

दशा—यहां शनि की दशा योगकारक होकर उत्तम फल देगी परन्तु जातक को कुछ बुरे फल भी शनि की दशा में प्राप्त होंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न में पंचम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां नीच का तथा सूर्य उच्च का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक की अपने भाइयों से कम बनेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को नकारात्मक एवं निराशाजनक सोच देगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक शिक्षित एवं राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध ससुराल का धन दिलायेगा। पर वह धन ज्यादा शुभदायक नहीं होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को धर्म-शास्त्रों का ज्ञाता एवं दार्शनिक बनायेगा पर जातक एकान्तप्रिय होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र प्रारंभिक विद्या में बाधा पहुंचायेगा। जातक विद्या में ऊंचे अंकों को प्राप्त नहीं कर पायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से जातक की संतति प्रेत बाधा से ग्रसित होगी।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु होने से जातककी विद्या अधूरी छूट जायेगी।

धनुलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ होने से इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां छठे स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। शनि के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन संग्रह एवं कुटुम्ब सुख में हानि होती है। मामा-ननिहाल का सुख कमजोर, नौकर का सुख कमजोर रहेगा। जातक की छोटे भाई-बहनों से बनेगी नहीं। मूत्राशय के रक्तदोष की बीमारी रहेगी।

दृष्टि–शनि की दृष्टि अष्टम भाव (कर्क राशि), व्यय भाव (वृश्चिक राशि) एवं पराक्रम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक की आयु लम्बी होगी पर बीमारी बनी रहेगी।

निशानी–आवक से अधिक खर्च रहेगा। कई बार जातक को ऋण लेना पड़ेगा।

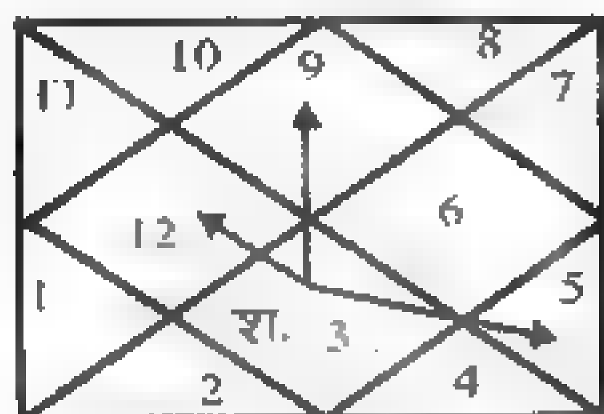
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में बुरे दिनों की अनुभूति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के छठे स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक को धन कमाने हेतु, प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता के जीवित रहते जातक का भाग्योदय नहीं होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा विपरीत राजयोग बनायेगा। दोहरे राजयोग के कारण जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल 'विद्याबाधा योग' एवं 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक धनी-मानी अभिमानी तथा वाहन सुख से युक्त होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से विलम्ब विवाह योग बनता है। शादी-विवाह होकर छूट भी सकता है।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनायेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रु उत्पन्न करेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गुप्त बीमारी से जातक को परेशान करेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां सप्तम स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा। शनि यहां 'दिग्बली' होने से इस भाव का ज्यादा नुकसान नहीं होगा। यह शनि जातक के धन-कुटुम्ब व दाम्पत्य सुख में वृद्धि करता है पर यदि पाप पीड़ित हो तो जातक को दाम्पत्य सुख से वंचित कर देगा। जातक को माता-पिता का धन नहीं मिलेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (सिंह राशि), लग्न स्थान (धनु राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक को परिश्रम पूर्वक किये गये प्रयत्नों का लाभ तो मिलेगा पर विलम्ब से। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति भी विलम्ब से होगी।

निशानी–जातक अपनी उम्र से बढ़ा दिखेगा। जातक के जीवनसाथी एवं उसके मध्य उम्र का अंतराल ज्यादा रहेगा। जातक भोग-विलास के प्रति उदासीन रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा वैसे तो शुभ फल देगी पर शनि मारक स्थान में होने से स्वास्थ्य में प्रतिकूलता देगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के सातवें स्थान में मिथुन राशिगत सूर्य+शनि की युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। सूर्य एवं शनि दोनों की दृष्टि लग्न स्थान पर होने से जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल धनाढ्य होगा, फिर भी पत्नी से विचार कम मिलेंगे।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्र की युति विवाह सुख में बाधक है। जातक की पत्नी को गुप्त बीमारी होगी।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को उत्तम गृहस्थ सुख देगा। पत्नी-संतान का सुख देगा पर पत्नी से हमेशा खटपट चलती रहेगी।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा पर विवाह के बाद, पहले नहीं।

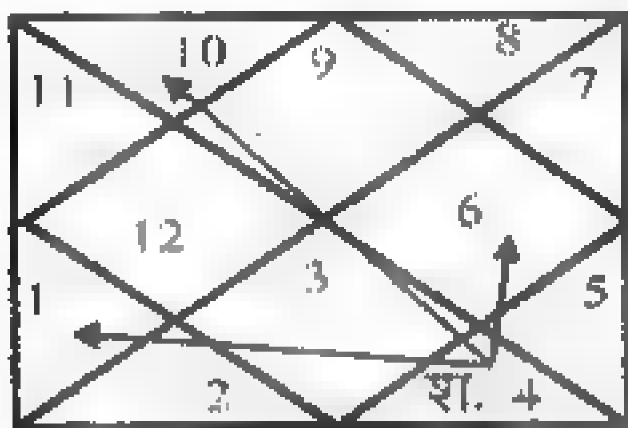
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को उत्तम विद्या, आदर्श शिक्षा देगा। 'लग्नाधिपति योग' के कारण जातक निर्बाध गति से आगे बढ़ता चला जायेगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र पत्नी सुन्दर देगा चाहे रंग सांवला हो। पत्नी के गुप्तांग में बीमारी या गुप्त रोग रहेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु वैधव्य योग देता है।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु विवाह-विच्छेद कराता है।

धनुलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां अष्टम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शनि के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। वैसे तो जातक को यश, धन, दीर्घायु व कुटुम्ब सुख की प्राप्ति होगी। पाप ग्रहों के सान्निध्य व प्रभाव से रोग, कष्ट, दुख व संघर्षों में वृद्धि होगी। जातक की भाषा कड़वी होने से कुटुम्बीजनों से कम निभेगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को नौकरी-व्यापार, धन प्राप्ति व संतान सुख हेतु दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

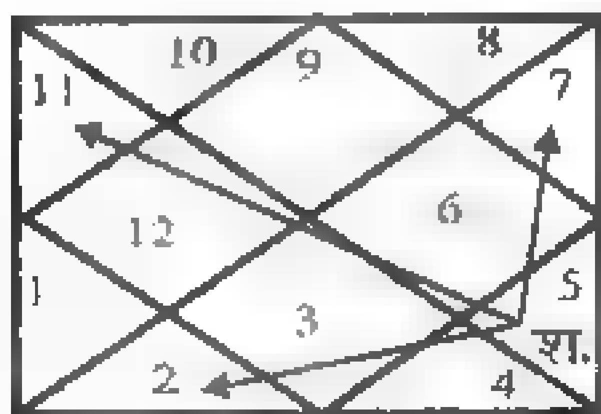
निशानी–ऐसे जातक की संतति विलम्ब से होगी। संतान के नाश या मृत्यु से जातक परेशान रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ जायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' की क्रमशः सृष्टि होगी। ऐसे जातक के धन कमाने हेतु, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे। पिता-पुत्र की नहीं बनेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ स्वगृही चंद्रमा 'सरलनामक विपरीत राजयोग' देता है। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं सम्पन्न होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल नीच का होकर 'विमल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध विवाह सुख में बाधा देता है, यहां 'द्विभार्या योग' बनता है।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'द्विभार्या योग' कराता है। जातक को 'लग्नभंग योग', 'सुखभंग योग' के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' कराता है। जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा। वाहन सुख होगा। सम्पन्न होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु दुर्घटना योग बनाता है। मृत्यु भी संभव है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक की दाईं टांग को चोट पहुंचाता है। एक बार हड्डी जरूर तोड़ेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्त्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां नवम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता का सुख नहीं मिलेगा। भाई-बहनों का सुख होगा पर पिता व भाई-बहनों से बनेगी नहीं। ऐसा जातक स्वतंत्र विचारों का होगा अतः उसकी किसी के साथ बनेगी नहीं।

दृष्टि–नवमस्थ शनि की दृष्टि एकादश स्थान (तुला राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक के जीवन में व्यापार में नुकसान, पराक्रम में कमी एवं शत्रुओं की वृद्धि रहेगी।

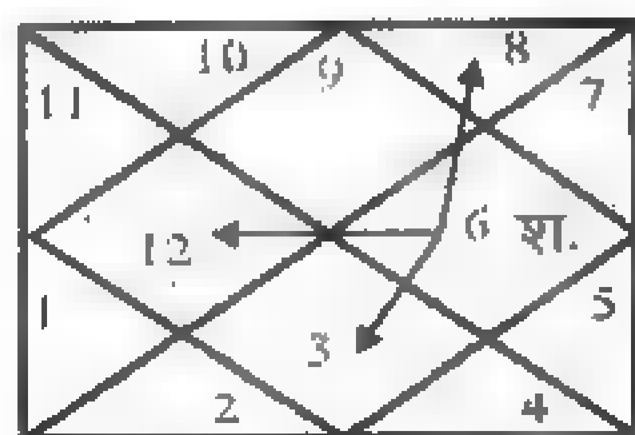
निशानी–नैराश्य की भावना अधिक होने से जातक अंतिम अवस्था में वैराग्य के कारण संन्यास लेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में कष्टानुभूति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के नवम स्थान में स्वगृही सूर्य के साथ की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ होगी। ऐसे जातक का पिता सम्पन्न होगा, परन्तु जातक की पिता के साथ कम पटेगी। जातक की अपने भाइयों से भी कम निभेगी। जातक का सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाग्योदय के प्रयास में रुकावट डालेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को विवादास्पद व्यक्ति बनायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक धनी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक की कुण्डली में 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा। जातक निर्बाध गति से उन्नति मार्ग पर बढ़ता ही चला जायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक के भाग्योदय में रुकावट डालेगा। जातक नीच व्यक्ति की सोहबत करेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाग्य में रुकावट का काम करेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु नीच व्यक्तियों की सोहबत करायेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां दशम स्थान में कन्या (मित्र) राशि में होगा। यहां शनि राजयोग प्रदाता है। ऐसे जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा, माता-पिता, स्त्री-संतान, शासन-प्रशासन का पूरा सुख मिलता है। जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी पर मेहनत खूब करनी पड़ेगी। विदेश जाने का योग बनेगा।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को भौतिक सुख, गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी पर जातक का स्वभाव खर्चीला होगा।

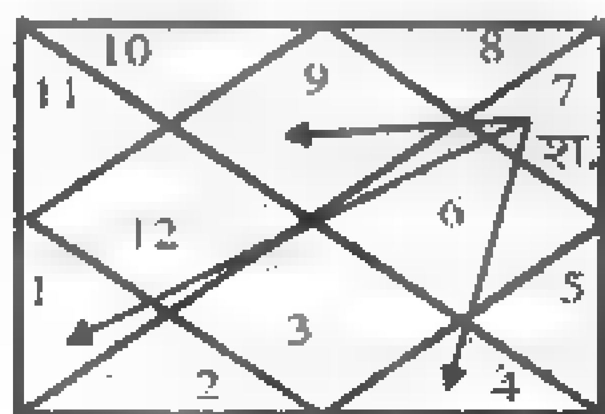
निशानी–जातक पुराने मकान में रहेगा। स्वयं के शरीर या जीवनसाथी के शरीर में बीमारी को लेकर जातक का धन खर्च होता रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी पर खर्च की अधिकता से जातक परेशान रहेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के दशम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे। सरकारी नौकरी या काम काज में विवाद रहेगा। जातक की उन्नति धीमी गति से होगी। ज्यादा फायदा व्यापार में रहेगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर सरकारी काम में बाधा डालेगा तथा जातक की माता को बीमार रखेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक के व्यक्तित्व एवं कार्यों को विवादास्पद बनायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को धनी बनायेगा परन्तु विवाह के बाद ही धन, वैभव में बढ़ोत्तरी होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन प्रदान करेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ नीच का शुक्र जातक को एकाधिक वाहन देगा परन्तु वाहन खूब खर्चा करायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से जातक को प्रेत बाधा पहुंचेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को राजकीय परेशानी में डालेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां एकादश स्थान में उच्च का होगा। तुला राशि के

20 अंशों में शनि परमोच्च का होता है। शनि यहां मकर राशि में दशम एवं कुंभ राशि से नवम स्थान पर होने से शुभ फल देगा। धनुलग्न में यह शनि की सर्वोत्तम सुख स्थिति है। ऐसे जातक को शेयर, सट्टा, जुआ, स्मगलिंग से लाभ होगा। जातक की अपनी संतान से बनेगी नहीं।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), पंचम स्थान (मेष राशि) एवं अष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत जातक की उम्र लम्बी होगी पर जातक दीर्घकालिक बीमारी से ग्रसित रहेगा। परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयास का लाभ अवश्य मिलेगा।

निशानी–जातक को नौकरी से अधिक व्यापार में लाभ होगा।

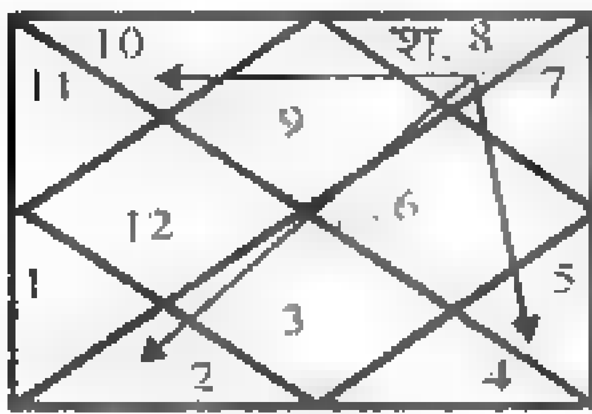
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी। जातक उच्च स्थान पर पहुंचेगा पर स्वास्थ्य सुख खो देगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के एकादश स्थान में सूर्य+शनि की युति 'नीचभंग राजयोग' बनायेगी। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा। स्त्री-संतान सुख उत्तम, पर पिता से विचार नहीं मिलेंगे। पिता जब तक जीवित रहेगा, जातक स्वतंत्र धनार्जन नहीं कर पायेगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा लाभ को तोड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक के लाभंश में विवाद पैदा करेगा पर जातक भरपूर पढ़ा-लिखा होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भागीदारों से लाभ देगा। जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को उच्च शिक्षा देगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'किम्बहुना योग' बनायेगा। जातक राजा एवं करोड़पति होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक की धन कमाने की शक्ति को बढ़ायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को धंधे में यशस्वी बनायेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश



गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां व्ययभाव में वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनता है। ऐसा जातक धन, यश, पद-प्रतिष्ठा, कुटुम्ब सुख एवं भाग्योदय के मामले में काफी दिक्कतें उठायेगा। परेशानी एक के बाद एक उसका पीछा नहीं छोड़ेगी। जातक की ननिहाल, मामा एवं पिता पक्ष से कम बनेगी। जातक विदेश जाकर फंस जायेगा।

दृष्टि–द्वादशभावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि), छठे स्थान (वृष राशि) एवं भाग्य स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा। ऐसा जातक फालतू खर्चों से परेशान होगा।

निशानी–ऐसा जातक अपनी जन्म भूमि से दूर जाकर ही कमायेगा। जातक की दृष्टि कमजोर होगी। दंत रोग होगा। वाणी विषैली होगी, जिससे उसके शत्रु बढ़ेंगे।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा बहुत अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के बारहवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन कमाने, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को यात्रा में नुकसान होगा। दुर्घटना भी हो सकती है।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा नीच का होकर 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं सभी प्रकार के सुखों से युक्त होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक की कुण्डली में 'विमल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। जातक का अन्य स्त्रियों से शारीरिक संबंध होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध विवाह में विलम्ब करायेगा। जातक का विवाह भंग भी हो सकता है दो विवाह के योग बनते हैं।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनाता है, जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनाता है। जातक धनी, मानी, अभिमानी होकर विलासपूर्ण जीवन जीयेगा। जातक विदेश (परदेश) जाकर धन कमायेगा।

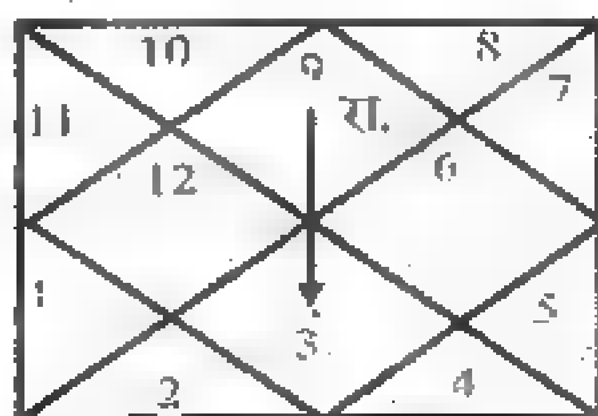
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक की हत्या षड्यंत्र से करायेगा। अकाल मृत्यु संभव है।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु खराब सपने लायेगा। प्रतिपल अशुभ की आशंका रहेगी।



धनुलग्न में राहु की स्थिति

धनुलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं हैक्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है, अग्नितत्त्व में होने से राहु यहां विस्फोटक है। राहु यहां प्रथम स्थान में होने से धनु (नीच) राशि में है। ऐसा जातक अभिमानी, क्रोधी व रोगी होता है। जातक धनु का पक्का एवं दृढ़ निश्चयी होता है। ऐसा जातक कुछ हद तक डरपोक एवं जबाबदारी से मुक्ति चाहता है।

दृष्टि–सप्तम भाव पर राहु की दृष्टि होने से जातक के वैवाहिक जीवन में असंतोष रहेगा।

निशानी–जातक लम्बे कद का कृशकाय व दन्त रोग से पीड़ित व्यक्ति होता है। पचास वर्ष की आयु के पहले अधिकांश दांत नष्ट हो जाते हैं।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा में अशुभ फलों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

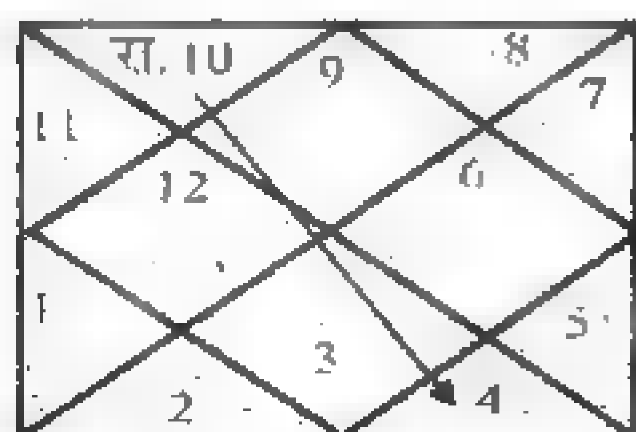
1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य राजयोग देगा। राहु इतना अनिष्टप्रद नहीं रहेगा, जितना होना चाहिए।
2. **राहु+चंद्र**–यहां राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को नकारात्मक विचार देगा। जातक के चेहरे या शरीर पर चोट के निशान लगेंगे।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल कुण्डली में विस्फोटक ताकत लायेगा। ऐसा व्यक्ति शत्रुहंता एवं सर्वकार्य में समर्थ होता है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को स्त्री व संतान सुख देगा परन्तु दोनों में परस्पर ज्यादा प्रेम नहीं होगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में लग्नेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में अग्निसंज्ञक राहु अपनी नीच राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की मनोवृत्ति कुटिल होगी। ऐसा जातक दूसरों को बुद्धू समझते हुए अपने धन, पराक्रम एवं प्रभाव का दुरुपयोग करेगा। यहां 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक के दुर्घटना योग की पुष्टि करता है। जातक सौन्दर्य प्रेमी, शौकीन होगा पर यात्रा में कष्ट पायेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को धनी बनायेगा पर जातक भूत-प्रेत विद्या, तंत्र मंत्र टोटके करने में रुचि रखेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां द्वितीय स्थान में मकर (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को धन, यश, कुटुम्ब सुखों का अभाव रहता है। जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। आजीविका के साधन के लिए जातक को जन्म स्थान से दूर जाना पड़ता है। व्यापार में लगातार घाटा होता है। जातक खान-पान का भ्रष्ट होगा।

दृष्टि–राहु की दृष्टि अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होने से जातक के गुप्त शत्रु जातक को पीड़ा पहुंचायेंगे।

निशानी–जातक मिथ्याभाषी होगा। जातक की भाषा कड़वी व रहस्यमय होगी। जातक अपनी वाणी से लोगों को संतोष देता है।

दशा–राहु की दशा धन प्राप्ति हेतु दिक्कतें पैदा करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

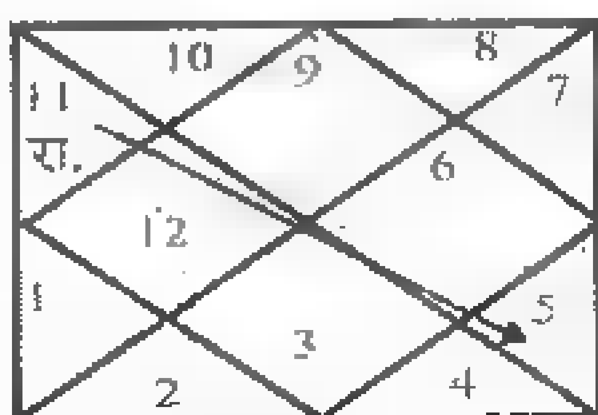
1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य भाग्योदय एवं धन प्राप्ति के प्रयासों में लगातार कष्ट देगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा धन हानि देगा। जातक द्वारा उधार दिया गया पूरा धन डूब जायेगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को महाधनी बनायेगा। पर धन के घड़े में छेद होने से जातक का रुपया खर्च होता चला जायेगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध ससुराल में विवाद या मनोमालिन्यता दर्शाता है।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में नीच के गुरु के साथ द्वितीय स्थान में राहु मकर (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का धन गलत कार्यों में खर्च होगा। धन संग्रह हेतु किये गये प्रयासों में सफलता नहीं मिलेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र वाणी में हकलाहट देगा। जातक की वाणी एवं बातचीत का तरीका अश्लील होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा पर जातक की वाणी अप्रिय होगी।

धनुलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां तीसरे स्थान में कुंभ मूल त्रिकोण राशि में होगा। तीसरे स्थान में राहु भाई-बहनों के सुख में बाधक है क्योंकि ऐसा जातक स्वार्थी एवं कुछ विद्रोही स्वभाव का होता है। 'त्रिषट् एकादशे राहु' सूर्य के अनुसार महाराहु राजयोग कारक है। ऐसे जातक को अच्छा नाम, पद व प्रतिष्ठा मिलेगी। जातक धनी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक अल्प संतति वाला होगा। जातक बहादुर व साहसी होगा।

निशानी–जातक को शत्रु पर निश्चित रूप से विजय मिलेगी।

दशा–राहु का दशा अंतर्दशा में जातक की कीर्ति बढ़ेगी एवं उसे समाज व राजनीति में पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य भाइयों में बिखराव पैदा करेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को बदनामी देगा। जातक को अपनी बहन या बेटी के कारण नीचा देखना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जातक के मित्र बहुत होंगे। कुटम्बी जन जातक की मदद करेंगे परन्तु परस्पर विचार नहीं मिलेंगे।

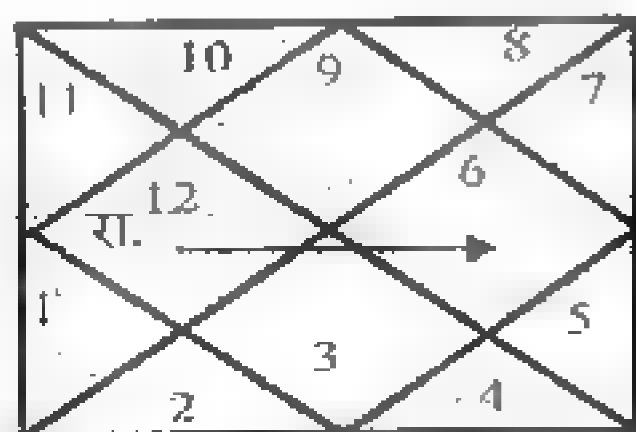
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक के मित्र बुद्धिमान होंगे। जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा। परन्तु जातक की अपनी पत्नी से विवाद रहेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में कुंभ के गुरु के साथ तृतीय स्थान में राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का पराक्रम भंग होगा। जातक की अपने भाइयों-परिजनों के साथ कम बनेगी। बराबरी की भावना से संबंध बिगड़ जायेंगे।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र शरीर का दांया अंग-भंग करायेगा। स्त्री-मित्रों के कारण बदनामी होगी।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से जातक धनी, पराक्रमी एवं साहसी होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां चौथे स्थान में मीन (नीच) राशि में होगा। जातक की पाचक शक्ति कमजोर होगी तथा बात-बात पर अपनी माता को धिक्कारेगा। ऐसे जातक के जीवन के सामान्य सुख नष्ट होते हैं तथा भौतिकवादी जीवन से मोह नष्ट हो जाता है। जातक अपने आत्मीय स्वजनों से घृणा करता है तथा मध्य आयु के बाद साधु-संन्यासी हो जाता है। जातक की संगत प्रायः हल्के या ओछे लोगों से होती है।

दृष्टि–ऐसा जातक आजीविका की प्राप्ति हेतु दर-दर भटकता है।

निशानी–जातक की दो पत्नी होगी या वह दो माताओं द्वारा पालित होगा। ऐसा जातक एकान्तप्रिय होता है तथा अपनी दुनिया में खोया रहता है।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा खराब जायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

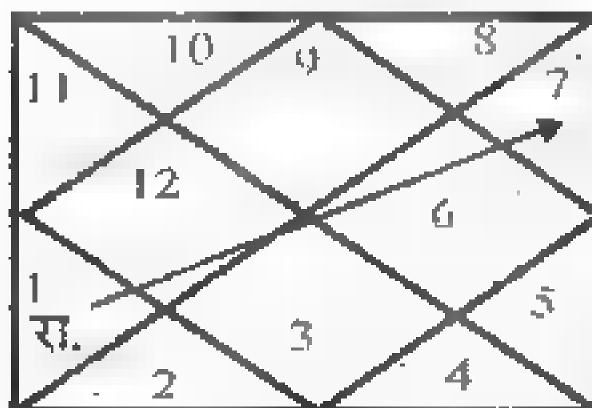
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने से जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। भौतिक सुखों में भी न्यूनता रहेगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा अल्पायु में माता की मृत्यु देता है।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ पंचमेश मंगल विद्या देगा पर संतान संबंधी चिंता भी अवश्य देगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को पत्नी के साथ समरसता में बाधा डालेगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में स्वगृही गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में राहु अपनी नीच राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की माता गुजर जायेगी। 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा, परन्तु माता का सुख कमजोर रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र वाहन दुर्घटना में शरीर के दाये अंगों में चोट पहुंचायेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि यहां जातक को उत्तम भवन का निर्माता बनायेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां पांचवें स्थान में मेष (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक का दिमाग गर्म रहेगा। मानसिक चिंता अधिक रहेगी। प्रायः सर्पदोष के कारण संतान प्राप्ति में बाधा पंहुचती है तथा विद्या में रुकावट होती है। ऐसा जातक अति उत्साही होगा। कार्य प्रारम्भ तो कर देगा पर उसे बीच में छोड़ देगा।

दृष्टि–राहु का प्रभाव एकादश स्थान (तुला राशि) पर होने से व्यापार में घाटा एवं बार-बार बदलाव आता रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक क्रोधी व क्रूर होगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य यहां उच्च का होकर जातक को उच्च शिक्षा देगा, विदेशी भाषा पढ़ायेगा तथा विदेश ले जायेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा हो तो पुत्र संतान का नाश अवश्य होगा। जातक का पाचन तंत्र कमजोर होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल यहां स्वगृही होगा एवं जातक को उत्तम संतति देगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा और उसकी संतति भी उच्च शिक्षा को प्राप्त करेगी।

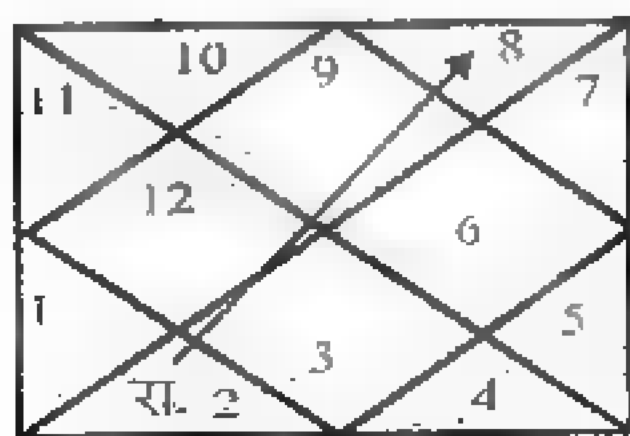
4. **राहु+बुध**--राहु के साथ बुध जातक को बुद्धिमान बनायेगा एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों की ओर ले जायेगा।

5. **राहु+गुरु**--यहां धनुलग्न में गुरु के साथ पंचम स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण विद्या में रुकावट, संतान में रुकावट संभव है। जातक परेशान व अशांत रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**--राहु के साथ शुक्र होने से संतति का नुकसान तथा शल्यचिकित्सा का योग करायेगा।

7. **राहु+शनि**--राहु के साथ शनि जातक का विद्यार्जन के द्वारा यशस्वी एवं पराक्रमी बनायेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां छठे स्थान में वृष उच्च का होगा। ऐसे जातक शत्रुहन्ता व पराक्रमी होते हैं। 'शिष्ट् एकादशे राहु' सूत्र के अनुसार राहु यहां राजयोग प्रदाता है। जातक को धन-प्रतिष्ठा, स्त्री-संतान, नौकरी-व्यापार, धंधा-कारोबार का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को गुप्त आवक होगी। जातक आशावादी होगा।

दृष्टि--राहु की दृष्टि द्वादश भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक यात्रा करेगा तथा यात्राओं से धन कमायेगा। जातक विदेश जायेगा।

निशानी--ऐसे जातक मुसीबतों से घबराते नहीं अपितु सबक सीख कर आगे बढ़ते हैं। जातक को कमर दर्द, कोढ़ या लकवे की शिकायत संभव है। ऐसे में 'महामृत्युंजय' का अनुष्ठान करें। उसका लॉकेट पहनें।

दशा--राहु का दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **राहु+सूर्य**--राहु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' कराता है। जातक को अनेक परेशानी व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

2. **राहु+चंद्र**--राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा 'सरल नामक विपरीत राजयोग' की सृष्टि करने से ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी होगा। पर शत्रु बहुत होंगे।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल विद्या में बाधा डालेगा। जातक की पढ़ाई अधूरी छूट जायेगी। विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी, मानी, अभिमानी होगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।

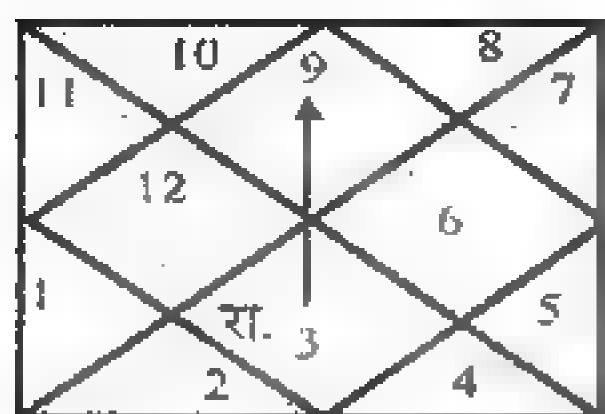
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध पत्नी का वियोग देगा। पर बुद्धिमानी से काम लेने पर समस्या सुलझ जायेगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ छठे स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की परिश्रम का लाभ नहीं होगा। कार्य में सफलता नहीं मिलेगी एवं वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र स्वगृही होकर 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा तथा सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रम भंगयोग' की सृष्टि करते हैं। फलतः जातक आर्थिक विषमताओं में उलझा रहेगा। जातक का सामाजिक यश भी कम मिलेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां सातवें स्थान में मिथुन (उच्च) राशि का होगा। ऐसे जातक का विवाह प्रायः विलम्ब से होता है। जातक को स्त्री व संतान सुख मिलता है पर पत्नी उड़ाऊ, खर्चीली स्वभाव की होगी। उसका चरित्र शंकास्पद होगा। जातक को प्रेम के मामले में निराशा-हताशा हाथ लगेगी। ऐसे जातक के पास गुप्त शक्ति होगी तथा परिश्रमपूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ राहु का प्रभाव लग्न स्थान (धनुराशि) पर होने के कारण जातक भड़कीले स्वभाव का होगा।

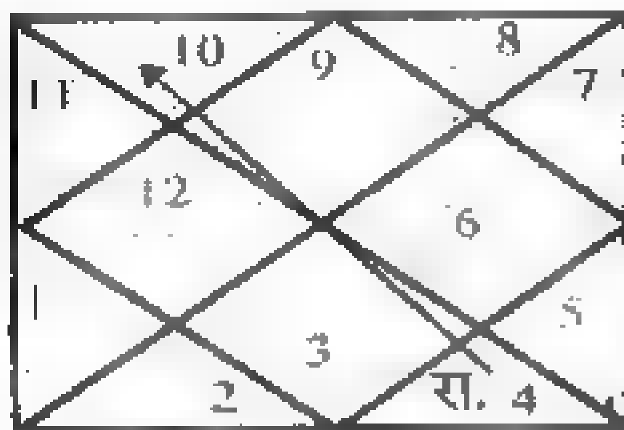
निशानी–स्त्री को सर्पदंश या वैधव्य का भय रहेगा। ऐसे में पितृदोष, सर्पदोष की शांति करानी होगी।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलकारी होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विवाह–विच्छेदक है। जीवनसाथी के साथ तलाक की नौबत आ सकती है।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को गुप्त रोग एवं उसके जीवनसाथी के गुप्त भाग में ऑपरेशन होने का संकेत देता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल 'द्विभार्या योग' बनाता है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध 'भद्र योग' की सृष्टि करता है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, वैभवपूर्ण जीवन जीयेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ सातवें स्थान में राहु मिथुन (मूलत्रिकोण) राशि में है। **'चाण्डाल योग'** के कारण गृहस्थ सुख में बाधा होगी। पत्नी से विचारधारा कम मिलेगी। पत्नी के रहते दूसरी औरत से संबंध होंगे।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र शल्य चिकित्सा योग बताता है। जातक को पेट या गुर्दे की बीमारी होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि वैवाहिक सुख में बाधक है। जातक का जीवन साथी धनवान होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां आठवें स्थान में कर्क (शत्रु) राशि का होगा। ऐसे जातक को घर-परिवार, धन-सम्पत्ति एवं स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। अचानक रोग, दुर्घटना व शत्रु का भय रहेगा। ऐसा जातक सदैव मानसिक तनाव एवं चिंता में रहेगा। जातक की मनोवृत्ति आपघाती होगी। जातक खुद को खत्म करने में, स्वयं को तबाह व बरबाद करने में रुचि रखेगा। ऐसा जातक किसी का मित्र नहीं होता।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (मकर राशि) पर होगी फलत: ऐसा जातक धन का खर्च बिना सोचे समझे करेगा।

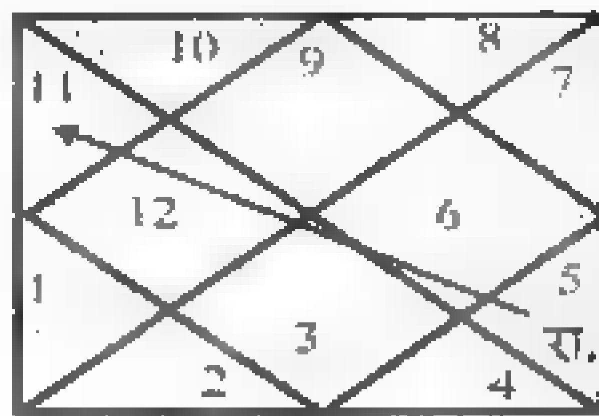
निशानी–राहु की यह स्थिति स्त्रियों को वैधव्य प्रदान करती है। जातक को चोरी करने की स्वभावत: आदत होती है। दूसरों का नुकसान पहुंचाना उसकी आदत में शुमार होता है।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि करते हैं। जातक को भाग्योदय हेतु अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी मानी एवं अभिमानी होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल विद्या में बाधा डालेगा। द्विभार्या योग के अवसर भी बनेंगे।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध विवाह-विच्छेदक योग बनाता है।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ आठवें स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि में है। '**चाण्डाल योग**' के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनाता है। जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनाता है। जातक की प्रतिष्ठा भंग होगी और आर्थिक विषमताएं बढ़ी-चढ़ी होंगी।

धनुलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां नवमे स्थान में सिंह शत्रु राशि में होगा। ऐसा जातक आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति में विश्वास रखेगा। ऐसा जातक ऊपर से आस्तिक परन्तु अंदर से नास्तिक होगा। अच्छे ग्रहों के सान्निध्य या उनकी दृष्टि से जातक को ऊंचे पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक का वैवाहिक जीवन में असंतोष, संतान प्रसंग में असंतोष रहेगा।

दृष्टि–नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। यदि जातक असावधान रहा तो शत्रुओं से परास्त होगा। जातक के धन का नाश फालतू के कार्यों में होगा।

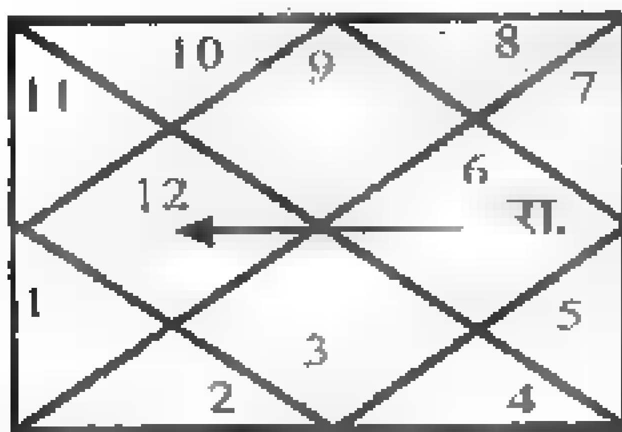
निशानी–ऐसा जातक पुरातन विचार एवं रूढ़िवादी परम्पराओं को बिलकुल नहीं मानेगा। जातक पराक्रमी, परिश्रमी एवं युद्धप्रिय होगा।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में तीर्थ-स्नान होगा। परदेश जाने का अवसर मिलेंगे। जातक के पिता की मृत्यु होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य यहां स्वगृही होकर राजयोग बनायेगा। जातक जीवन में विशेष उन्नति, तरक्की प्राप्त करेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाग्य में अनिश्चित उतार-चढ़ाव लायेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को भूमि लाभ देगा। जातक की संतति उत्तम होगी। विद्या सुख मध्यम होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध के कारण विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक का जीवनसाथी कमाऊ होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ नवम स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण भाग्योदय में बाधा होगी। सरकारी नौकरी से पदच्युत होने का भय एवं झूठा आरोप लगेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र भाग्य में अनिश्चित उतार-चढ़ाव, संघर्ष का द्योतक है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक के पराक्रम को बढ़ायेगा। जातक धनी तथा साधन सम्पन्न होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां दसवें स्थान में कन्या राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, चतुर, दूरदर्शी, साहसी व कर्त्तव्यनिष्ठ होगा। बुद्धिबल के कारण जातक को राजनीति, समाज व सरकार में उच्च पद की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक दूसरों का धन फौरन पचा जायेगा, डकार भी नहीं लेगा। जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा। जातक प्रायः इधर-उधर भटकता रहेगा।

दृष्टि—दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक भौतिक सुख, ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु भटकता रहेगा। जातक का चरित्र संदेहास्पद होगा।

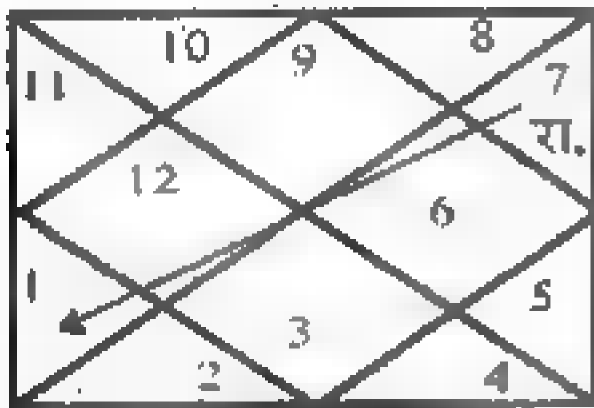
निशानी—जातक कवि हृदय व भावुक होगा परन्तु पिता से उसके विचार नहीं मिलेंगे।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के संग सूर्य होने से जातक के पिता की मृत्यु शीघ्र होगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के संग चंद्रमा होने से जातक की माता की मृत्यु शीघ्र होगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल 'दिग्बली' होगा। फलत: जातक के पास बहुत-सी सम्पत्ति होगी। जातक विद्यावान होगा पर विद्या काम न आ पायेगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध यहां 'भद्र योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ दसवें स्थान में राहु कन्या राशि में स्वगृही है। 'चाण्डाल योग' के कारण राजकाज में बाध होगी। शत्रुओं को हराने में, कोर्ट-कचहरी में जातक का रुपया बरबाद होगा। रोजी-रोजगार में दिक्कतें आयेगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र यहां नीच राशि में होगा। ऐसे जातक राजकाज, कोर्ट-कचहरी में मुकदमा हारेंगे।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा पर जातक तरह-तरह के धंधे बदलता रहेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां एकादश स्थान में तुला (मित्र) राशि का होगा। 'त्रिषट् एकादशे राहु' सूत्र के अनुसार राहु यहां राजयोग कारक है। 'फलदीपिका' अ. 8 श्लोक 27 के अनुसार ऐसा जातक लक्ष्मीवान एवं दीर्घायु वाला होता है। जातक के पुत्र थोड़े होते हैं। पर कान में रोग होता है।

दृष्टि—एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) पर होने से जातक प्रजावान होगा। जातक की संतति उत्तम होगी। परन्तु एकाध गर्भपात होगा या बालक होकर खो जायेगा।

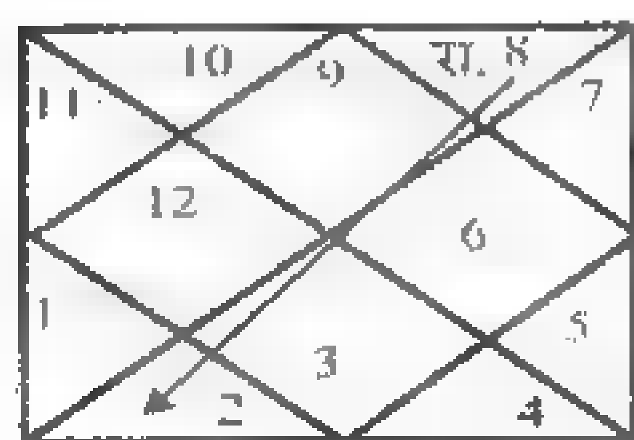
निशानी—ऐसा जातक प्राचीन शास्त्र एवं विज्ञान का जानकार होता है। जातक को स्त्री-संतान का सुख मिलता है पर विद्याध्ययन में रुकावट आती है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ नीच का सूर्य **'राजयोग भंग'** करता है। जातक परेशानियों से घिरा रहेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा व्यापार व्यवसाय में नुकसान देगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल विद्या में विजय एवं सार्वजनिक जीत देगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध व्यापार में वृद्धि करायेगा। जातक उद्योगपति होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ एकादश स्थान में राहु तुला (मित्र) राशि में है। **'चाण्डाल योग'** के कारण लाभ में बाधा। व्यापार व्यवसाय में नुकसान होगा। धनागमन में रुकावट महसूस होगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र स्वगृही होने से व्यापार के लिए ठीक है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि यहां उच्च का होगा। जातक उद्योगपति होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां द्वादश स्थान में मीन राशि में नीच का होगा। ऐसा जातक प्रच्छन्न पापी होता है। प्राय: अशुभ की आशंका बनी रहती है। जातक को खराब सपने आते हैं तथा नींद कम आती है। जातक की सोच नकारात्मक होती है। जातक की मनोवृत्ति आत्मघाती होती है। जातक खुद को नुकसान पहुंचाने एवं बरबाद करने में अपनी महानता समझता है।

दृष्टि—द्वादश भावगत राहु की दृष्टि छठे (वृष राशि) पर होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक को गुप्त रोग भी होंगे। प्राय: ऐसा जातक अपनी पत्नी व बच्चों से दूर रहता है।

निशानी–फलदीपिका अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार ऐसा जातक जलरोग से पीड़ित रहता है। जातक बहुत अधिक व्यय (**खर्च**) करता है तथा असंतुष्ट रहता है।

दशा–राहु की दशा–अंतर्दशा नेष्ट जायेगी। जातक व्यर्थ की यात्राएं करेगा तथा उसके धन का अपव्यय होगा।

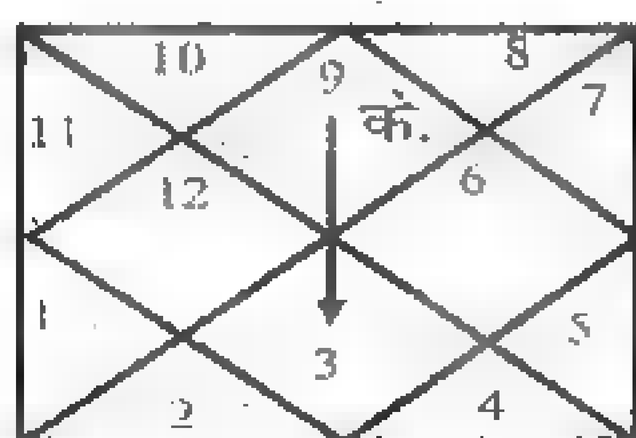
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक परेशान रहेगा तथा सरकारी नौकरी के लिए दर–दर भटकेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा यहां नीच का होगा एवं '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक धनी–मानी अभिमानी होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल स्वगृही होकर '**विमल नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि करेगा। जातक धनी, मानी–अभिमानी एवं सुख साधन सम्पन्न होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक के दो विवाह होते हैं।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ द्वादश स्थान में राहु वृश्चिक (नीच) राशि में है। '**चाण्डाल योग**' के कारण परिश्रम का लाभ प्राप्त नहीं होता। कार्य में बाधा, यात्रा में चोरी होगी तथा दुर्घटना में अंग–भंग होने का खतरा है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र होने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' बनता है। जातक धनी, मानी–अभिमानी होगा। सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं से युक्त जीवन होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से '**धनहीन योग**' एवं '**पराक्रम भंगयोग**' बनता है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक की मान–प्रतिष्ठा भंग होगी।

❑❑❑

धनुलग्न में केतु की स्थिति

धनुलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है तथा धनु राशि में केतु मूलत्रिकोण माना गया है, जो उच्च के ग्रह जैसा शुभ फल देगा। केतु यहां प्रथम स्थान में धनु राशि का ही है। ऐसा जातक लड़ाकू, कृतघ्न, चुगलखोर व असंज्जनों के साथ रहने वाला होता है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। केतु यहां शुभ ग्रहों के साथ शुभ फल देगा तथा अशुभ ग्रहों के साथ अशुभ फल देगा।

निशानी--ऐसा जातक वात रोगी होता है व उद्विग्न रहता है।

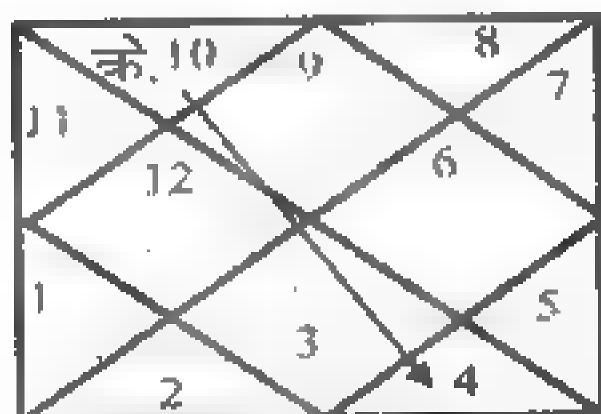
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राजयोग को पुष्ट करेगा। जातक समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक की निर्णयशक्ति नष्ट कर देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल होने से जातक पुरुषार्थी होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर कुण्डली 'मांगलिक' होने के कारण पत्नी पक्ष से चिंतित रहेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक 'कुल का दीपक' होगा। पत्नी सुन्दर होगी। गृहस्थ सुख ठीक होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से हंस योग बनेगा। जातक राजा होगा व वैभवशाली जीवन जीयेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक के शरीर का कोई भाग अवश्य (भंग) टूटेगा। अपघात भी संभव है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को धनी एवं पराक्रमी व्यक्ति बनायेगा। जातक हठी होगा। जातक की सोच लड़ाकू होगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां द्वितीय स्थान में मकर (मूल त्रिकोण) राशि का है। जातक का धन शुभ कार्य में खर्च होगा। कुटम्बीजनों का सहयोग मिलता रहेगा। विद्या कम और अनुभव ज्यादा होगा। जातक को मुख का रोग संभव है। जातक विघ्न संतोषी स्वभाव का होता है।

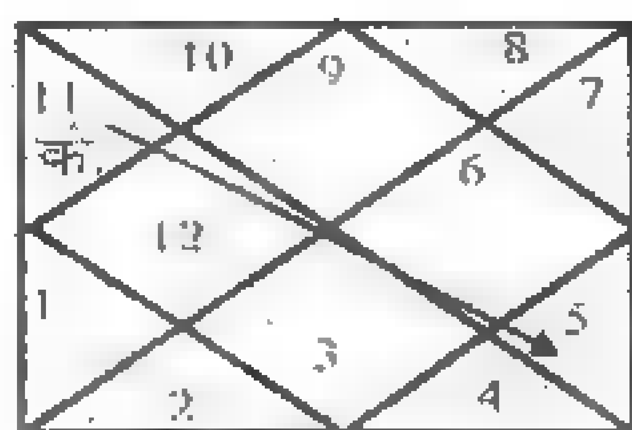
निशानी–विवाह में विलम्ब होगा। 'ढुंढिराज' के अनुसार ऐसा जातक कुटुम्बीजनों का विरोधी होता है। असत्य बोलता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक अहंकारी होगा एवं उसकी वाणी घमण्डी होगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा अशुद्ध वाणी देगा। धन का व्यर्थ खर्च करायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल उच्च का होगा। जातक महाधनी होगा एवं क्रोधी होगा। लड़ाकू होगा। जातक की वाणी में डांट-डपट, झगड़े की भावना अधिक रहेगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध राजा से एवं पत्नी से झगड़ा करायेगा। झगड़ा सुलझ जायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु नीच का होगा। जातक की वाणी गंभीर होगा धन धीमी गति से कमायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र दांतों में कष्ट एवं तकलीफ देगा। मुख रोग या मुख का कैंसर संभव है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि स्वगृही होने से जातक महाधनी एवं पराक्रमी होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां तृतीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि का है। जातक पराक्रमी एवं कीर्तिवान होगा। जातक को प्रत्येक कार्य में भाई एवं मित्रों की मदद मिलेगी। जातक की बुद्धि सकारात्मक व अच्छी होगी। ऐसा जातक लोकप्रिय एवं बाहुबली होगा। भोजसंहिता के अनुसार 'सदा धीरतां शत्रुनाशं करोति' ऐसा जातक धैर्यशाली होता तथा अपने शत्रुओं का समूल नाश करने वाला पराक्रमी व्यक्ति होता है।

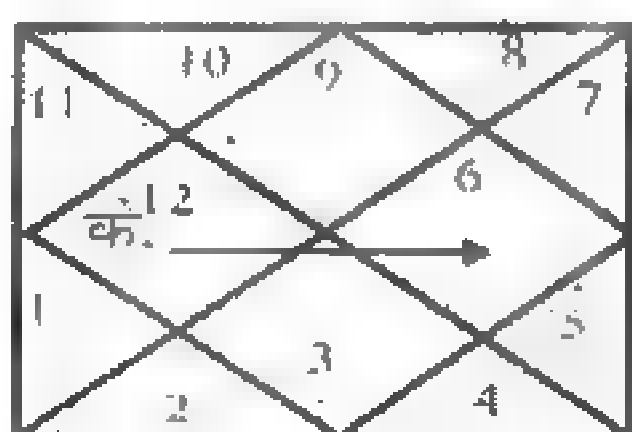
निशानी–जातक के छोटे भाई नहीं होंगे।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ जायेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा। जातक पराक्रमी एवं राजवर्चस्वी होगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाई-बहनों में विरोध करायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को विद्यावान एवं सुयोग्य संतति का स्वामी बनायेगा। ऐसा जातक कुटम्बीजनों के साथ रहना पसंद करता है।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को पराक्रमी ससुराल देगा। राज्य-सरकार में जातक का प्रभाव होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ षष्टेश शुक्र शत्रु पीड़ा देगा। बांह में कष्ट देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक धनी-मानी एवं प्रबल पराक्रमी होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां चतुर्थ स्थान में मीन (उच्च) राशि का है। जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं मिलेंगी। जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। केतु यहां एक प्रकार का राजयोग बनाता है। जातक को अकस्मात् उत्तम सुख सुविधाएं मिलेंगी।

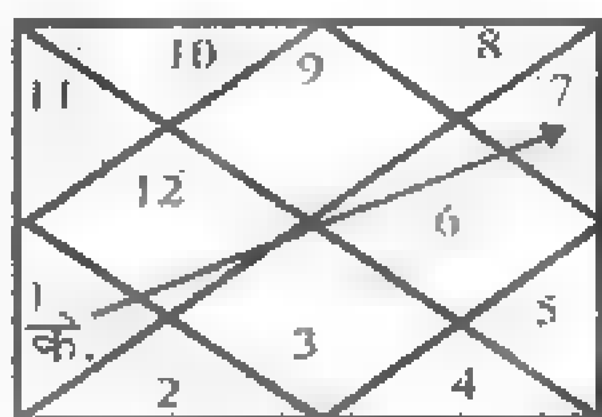
निशानी–ऐसा जातक दूसरों की आलोचना बहुत करता है। अतः लोग ऐसे जातक से दूर रहना पसंद करते हैं।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राज्यसुख कारक है। जातक का घर का सुन्दर मकान होगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा माता को अल्पायु में मृत्यु देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उत्तम विद्या एवं संतति सुख प्रदान करेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ 'कुलदीपक योग' बनायेगा। ऐसा जातक अपने उत्तम कार्यों से कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीयेगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां पंचम स्थान में मेष (मित्र) राशि का है। संतान सुख उत्तम होगा। जातक शास्त्रों का ज्ञाता एवं विद्वान होगा। जातक के बन्धु सुखी होते हैं। जातक का शत्रुओं से वाद-विवाद होता रहता है। पर जातक किसी से डरता नहीं।

निशानी–ऐसा जातक मठाधीश होता है। जातक मंत्र-तंत्र व कपट से धन एवं वैभव की प्राप्ति करता है। ऐसा जातक पानी से बहुत डरता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य उच्च का होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक की संतति भी पढ़ी-लिखी होगी।

2 **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा विद्या में बाधा, संतान में रुकावट देगा।

3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से ऐसा जातक शास्त्रार्थ में हमेशा विजयी रहता है।

4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध होने से जातक की पत्नी पढ़ी-लिखी एवं समझदार होगी। जातक स्वयं बुद्धिमान होगा।

5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक को धर्मशास्त्रों का ज्ञाता बनायेगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र गर्भपात, गर्भस्राव एवं संतति नाश करायेगा। जातक की शिक्षा अधूरी छूटेगी।

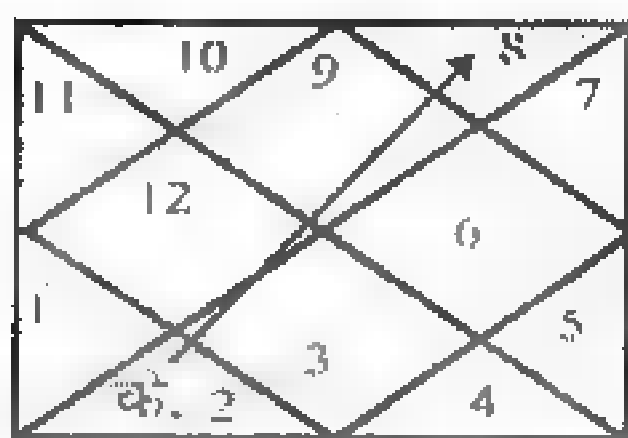
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि नीच का होगा एवं जातक की विद्या में बाधा उत्पन्न होगी। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में

धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां छठे स्थान में वृष (नीच) राशि का है। जातक का स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

भोजसंहिता के अनुसार—

पुरेशाधिकारी गृहे रम्यवासी, गले पुष्पमाला कुले श्रीतिशाला।
मति मर्दने विद्विषां तस्य मानं भवेद् यस्य षष्ठे गृहे केतुनामा॥



अर्थात् ऐसा जातक नगर का प्रमुख अधिकारी, अच्छे घर में विलास के साथ रहने वाला, शत्रुओं का नाश कर विजय श्री वरण का करने वाला सम्मानित एवं अच्छे कुल में जन्म लेता है।

निशानी—जातक के शत्रु भी मित्र बनने की चेष्टा करेंगे। जातक मामा से वैर (द्वेष) रखता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में शत्रुओं की तरफ से विशेष लाभ मिलता है।

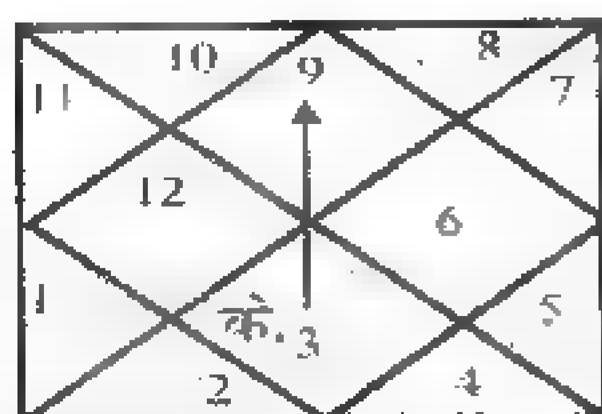
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतों, परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

2 **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा 'सरल नामक' विपरीतराज योग बनायेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त होगा।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल 'संतानहीन योग' बनाता है साथ ही 'विमल नामक' 'विपरीतराज योग' भी बनाएगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। उसे संसार की सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से 'विलम्बविवाह योग' बनता है। कभी-कभी अविवाह योग भी बनता है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'सुखहीन योग' एवं 'लग्नभंग योग' बनता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र यहां 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा एवं समस्त प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा। ऐसा जातक आर्थिक विषमताओं से परेशान होगा। कई बार मान भंग के अवसर भी आयेंगे।

धनुलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां सातवें स्थान मे मिथुन राशि में नीच का है। जातक की पत्नी धार्मिक होगी। जातक स्वयं व्यभिचारी एवं अस्थिर स्वभाव का होता है। बार-बार जगह बदलता रहता है। जातक को हृदय में राजा की अकृपा, सरकार (अदालत) से दण्ड का भय रहता है। ऐसा जातक शत्रुओं से भी भयभीत रहता है।

निशानी–ऐसा जातक अतिकामी होने के कारण विधवा या नीच जाति की स्त्री से अवैध संबंध रखता है।

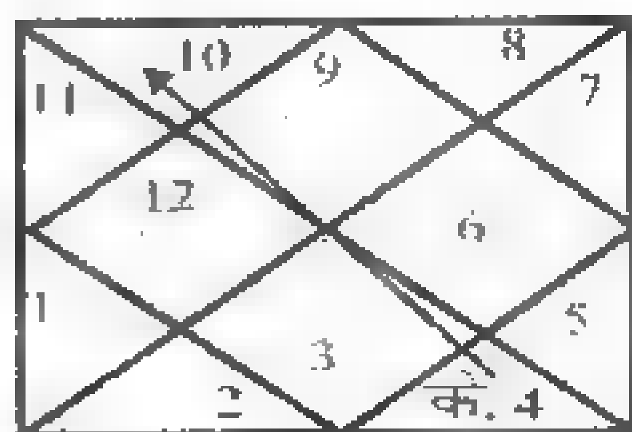
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य गृहस्थ सुख में विच्छेदक कराने वाला है पर जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा, जीवन साथी की अकाल मृत्यु करायेगा।

3. **केतु+मंगल**–पत्नी से तरकार या तलाक होगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु गृहस्थ सुख के लिए उत्तम है। लग्नाधिपति योग के कारण जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक का गुदारोग, गुप्तरोग करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जीवनसाथी कमाऊ होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां आठवें स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। जातक को अचानक अकाल्पनिक मदद मिलेगी। ऐसे जातक के शुभ कर्म धीरे-धीरे, पर पापकर्म तत्काल प्रकट होते हैं। जीवन में शल्य चिकित्सा जरूर होगी। बायें पैर की चोट पहुंच सकती है।

निशानी–ऐसा जातक परस्त्री में आसक्त व नेत्ररोगी होता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

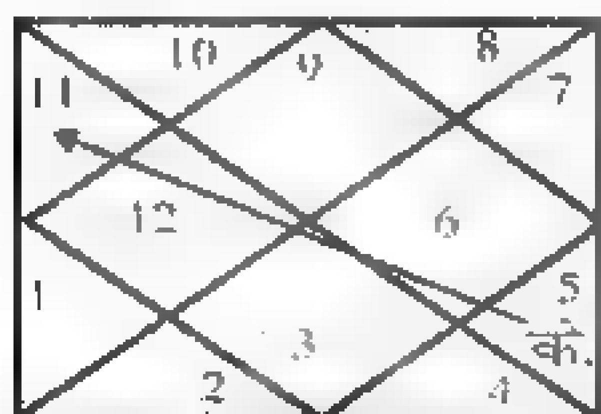
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य 'भाग्यहीन योग' की सृष्टि करेगा। जातक को भाग्योदय, रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा स्वगृही होने से 'सरलनामक' विपरीत राज योग बनेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा तथा सांसारिक सुख एवं वैभव से युक्त जीवन जीयेगा।
3. **केतु+मंगल**–अचानक दुर्घटना संभव।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से 'द्विविवाह योग' बनते हैं। जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु उच्च का होगा परन्तु 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनायेगा। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी होने के बावजूद भी उसे वांछित सफलताएं नहीं मिलेगी।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से 'हर्षनामक' 'विपरीत राज योग' बनेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से 'धनहीन योग' एवं पराक्रम भंग योग की सृष्टि होगी। ऐसा जातक आर्थिक विषमताओं से घिरा रहेगा तथा अनेक बार मान-प्रतिष्ठा भंग होने के अवसर भी आयेंगे।

धनुलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां नवम् स्थान में सिंह मूलत्रिकोण राशि में होगा। फलतः उच्च जैसा फल देगा। ऐसे जातक को पिता एवं गुरु का आर्शीवाद मिलता रहेगा।

भोजसंहिता के अनुसार–

गृहे केतु नाम्नि स्थिते धर्मयागे,
श्रियो राजराजाधिपो देव मंत्री।

ऐसा जातक राजा अथवा राजमंत्री, न्यायकर्त्ता या न्यायाधीश होता है। जातक कीर्तिवन्त, दयालु व धार्मिक होता है।

निशानी–जातक शूरवीर व अभिमानी होता है। सच्चे काम का साथ देता है।

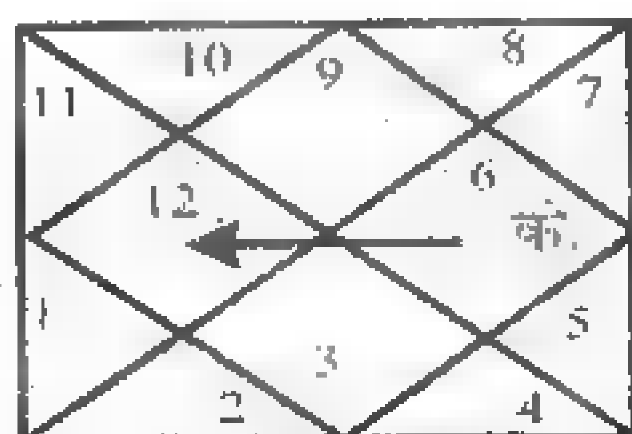
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य स्वगृही राज योग देगा। जातक राजसरकार (राजनीति) में उच्च पद प्राप्त करेगा। सरकारी नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्र होने से जीवन के उतार-चढ़ाव बहुत आएगें। भाग्य में झटका लगेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल होने से जातक पढ़ा-लिखा शिक्षित होगा। उसकी संतानों भी शिक्षित होगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक स्वयं तेजस्वी तीव्र बुद्धि का स्वामी होगा।

5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु होने से जातक को परिश्रम का मीठा फल मिलेगा। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से भाग्य में बाधाएं आयेगी। स्त्री-मित्र जातक के लिए घातक साबित होंगे।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि होने से जातक धनी होगा। पराक्रमी होगा। जीवन में संघर्ष तो रहेगा परन्तु अंतिम सफलता जातक के साथ रहेगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां दशम स्थान में कन्या राशि में नीच का होगा। जातक सिद्धान्तवादी होगा। उसे समाज में, राजनीति व सरकार में यश-कीर्ति मिलेगी। ऐसे जातक को पिता का सुख नहीं मिलता। जातक दुर्भागी, वाहनों से पीड़ित तथा वातरोगी होता है। केतु कन्या राशि में होने से जातक को सुख और दुःख दोनों का अनुभव होता है। जातक अपने शत्रु समूह का नाश अवश्य करता है।

निशानी—भोजसंहिता के अनुसार, शत्रकोऽपि रणप्रांगणे तस्य गायन्ति कीर्तिम्। शत्रु भी युद्ध के मैदान में जातक के शौर्य की कीर्ति गाते हैं।

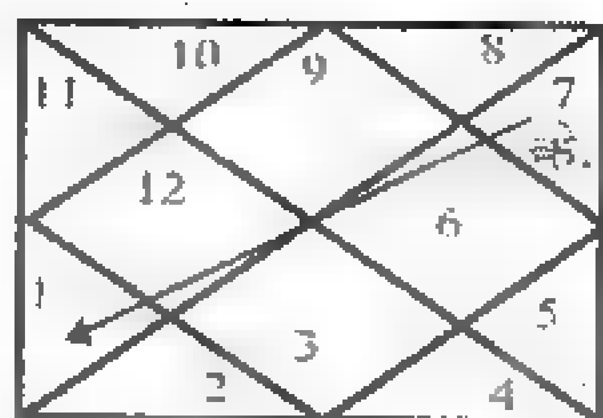
दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा सफलता एवं विजय दिलाने वाली होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य राजयोग में वृद्धि कराता है। जातक को अच्छी नौकरी लगेगी।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा नौकरी में कष्ट-तकलीफ देगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को उत्तम भूमि, भवन का सुख देगा। 'दिग्बली' मंगल के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं यशस्वी होगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक उत्तम भवन, वाहन एवं उत्तम नौकरों का स्वामी बनायेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र कोर्ट-कचहरी में पराजय देगा। शुक्र यहां नीच का होकर व्यापार में हानि करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि की युति जातक को धनी एवं पराक्रमी बनायेगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां एकादश स्थान में तुला (मित्र) राशि में होगा। जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। जातक को मित्र-मण्डली से वैराग्य हो जायेगा। ऐसा जातक मीठा बोलता है। विनोदी स्वभाव का होता है। विद्वान्, ऐश्वर्य सम्पन्न, तेजस्वी, उत्तम आभूषणों एवं श्रेष्ठ वस्त्र अलंकारों को धारण करता है। ऐसा जातक जीवन में एक बार राजा द्वारा सम्मानित भी होता है।

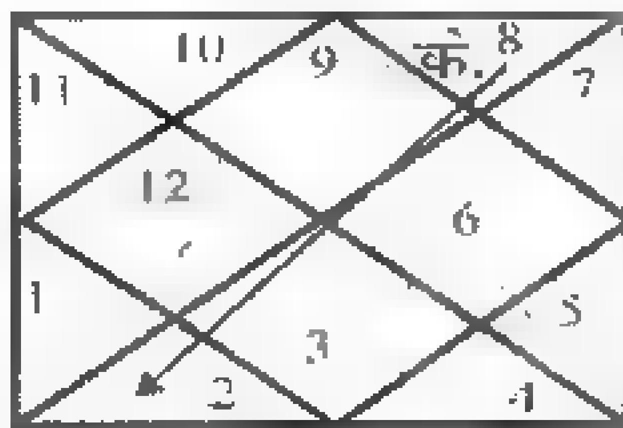
निशानी–ऐसा जातक हाथ में लिया हुआ कार्य अधूरा नहीं छोड़ता।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य नीच का होने से एकहजार राज योग नष्ट करेगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में धन कमायेगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक के चलते व्यापार को तोड़ेगा। जातक को रोजी-रोजगार हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उच्च शिक्षा देगा। जातक को संतान सुख भी मिलेगा। जातक धनी व सुखी व्यक्ति होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को उत्तम विवाह सुख देगा। जातक बुद्धिबल में खूब धन कमायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं देगा। जातक एक धनी व्यक्ति होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ स्वगृही शुक्र व्यापार में लाभ तो देगा परन्तु हानि भी देगा। जातक स्त्री-मित्रों से बचे।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि यहां उच्च का होगा। जातक एक धनी व्यक्ति होगा। उद्योगपति होगा। समाज में उसकी प्रतिष्ठा होगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में



धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक मित्र राशि में होगा। जातक तीर्थ-यात्रा, देशाटन करेगा। खर्च बढ़-चढ़ कर होंगे। जातक का धन शुभकार्य व परोपकार में खर्च होगा। ऐसा जातक लड़ाई में डरपोक होता है।

निशानी–ऐसा जातक प्रवास बहुत करता है तथा खर्चीले स्वभाव का होने से ऋणग्रस्त रहता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कते एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को व्याभिचारी बनायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ स्वगृही मंगल के कारण 'विमल नामक' विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी-मानी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध 'द्विभार्या योग' बनाता है। गृहस्थ सुख में बाधा, सरकारी नौकरी में भी बाधा का योग बनता है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'सुखहीन योग' एवं 'लग्नभंग योग' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को व्यभिचारी बनायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को अपने जीवन में आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा तथा कई बार मानहानि के प्रसंग भी उपस्थित होंगे।

❑❑❑

गुरुवार व्रत कथा

बृहस्पति देव देवताओं के गुरु हैं। देवगुरु गुरु देव जी विद्या, बुद्धि, धन, वैभव, मान, सम्मान, यश-पद तथा संतान प्रदान करने वाले कृपालु व दया के सागर हैं। नवग्रहों में गुरु बृहस्पति सबसे बड़े व शक्तिशाली हैं तथा विद्वान हैं। बृहस्पतिवार के उपवास एवं श्रद्धापूर्वक पूजन से गुरु गुरु सहित सभी ग्रह प्रसन्न रहते हैं।

गुरु का तांत्रिक मंत्र—ॐ बृं बृहस्पते नमः।।

विधि विधान—बृहस्पतिवार को नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर किसी पवित्र स्थान पर श्री नारायण भगवान की प्रतिमा स्थापित करें। जल के लोटे में गुड़ व चने की दाल डालकर रखें, प्रसाद के रूप मे चने व मुनक्का का प्रयोग करें। गुरु के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस अथवा ग्यारह बार जाप करें तत्पश्चात् व्रत कथा पढ़ें और अंत में केले के पेड़ को जल दें। गुड़ व चने का भोग प्रभु को लगा स्वयं भी प्रेम से प्रसाद खाएं तथा दिन में एक समय भोजन करें। भोजन में पीली वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

व्रत कथा—किसी नगर में एक व्यापारी रहता था। वह दूर-दूर देशों की यात्रा करता और व्यापार किया करता था। उसका व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था। उसे धन-सम्पत्ति की कोई कमी न थी। वह निर्धनों को दान किया करता था। उसके द्वार से कोई याचक खाली नहीं लौटता था। व्यापारी की पत्नी उसके सर्वथा विपरीत थी। उसे पति के दान कर्म से बहुत चिढ़ होती। वह किसी को एक पैसा भी नहीं देना चाहती थी।

एक बार व्यापारी दूसरे देश की यात्रा पर गया था। उसके पीछे बृहस्पति देव एक भिक्षुक का वेष धरकर व्यापारी की कंजूस पत्नी के पास पहुंचे और उससे भिक्षा की याचना करने लगे। व्यापारी की पत्नी ने कहा—"हे साधु महाराज, मैं अपने पति के दान-पुण्य से तंग आ गई हूं। वह अपने धन को दूसरों को बांटकर व्यर्थ ही नष्ट करता है। आप कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे मेरा सारा धन नष्ट हो जाए, न धन होगा और न ही मुझे उसे व्यर्थ ही नष्ट होते देख दुःख होगा।" बृहस्पति देव

जी ने कहा–"पुत्री, तुम भी विचित्र स्त्री हो। प्रत्येक स्त्री की कामना होती है कि उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो और तुम चाहती हो कि तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाए। यदि तुम्हारे पास अधिक धन है तो तुम उस धन को पुण्य के कामों में खर्च करो, धर्मशालाएं बनवाओ, प्यासों के लिए प्याऊ खुलवाओ। इससे तुम्हें प्रसिद्धि भी मिलेगी और तुम मोक्ष की भी भागी बनेगी।"

व्यापारी की पत्नी भी बड़ी जिद्दी थी। उस पर महात्मा जी की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने कहा–"मुझे आपकी सलाह नहीं चाहिए। यदि आप मुझे सलाह ही देना चाहते हैं तो कृप्या मुझे धन को नष्ट करने का कोई उपाय बताइये।"

साधु का रूप धरे हुए बृहस्पति देव जी ने कहा–"ठीक है, यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो यही सही। सात बृहस्पतिवार तक घर को लीपना, पीली मिट्टी से बालों को धोना, भट्टी चढ़ाकर कपड़े धोना, मांस-मदिरा का सेवन करना। ऐसा करने से तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाएगा।"

उस स्त्री ने गुरु देवता के कहे अनुसार कार्य किए। केवल छः बृहस्पतिवार ही व्यतीत हुए और उसका सम्पूर्ण धन ही नष्ट हो गया, यहां तक कि उसे दोनों वक्त के खाने के भी लाले पड़ गए। उधर उस स्त्री का पति जहाज से वापस लौट रहा था कि उसका माल से भरा जहाज समुद्र में डूब गया। वह किसी प्रकार अपने प्राण बचाकर अपने देश लौटा। घर आकर उसने देखा कि उसका सब कुछ नष्ट हो गया है। उसकी लड़की ने रोते हुए बताया कि उसकी पत्नी भी परलोक सिधार गई। व्यापारी ने अपनी पुत्री से इसका कारण पूछा तो लड़की ने सारा वृतांत कह सुनाया।

अब व्यापारी जंगल से लकड़ियां ले आता और उन्हें नगर में ले जाकर बेच देता और उससे जो भी कुछ प्राप्त होता उससे उसका अपना और अपनी पुत्री का पेट भरता था किंतु उनका निर्वाह बड़ी मुश्किल से हो पाता था।

एक दिन उसकी पुत्री ने दही खाने की इच्छा प्रकट की किन्तु व्यापारी के पास एक भी पैसा नहीं था। किंतु पुत्री से किस प्रकार कहता कि कल का सेठ आज अपनी एकमात्र पुत्री को दही भी नहीं खिला सकता। वह पुत्री से दही लाने के लिए कहकर जंगल में लकड़ियां काटने चल दिया। चलते हुए वह सोचने लगा कि पहले मैं क्या था। चलते-चलते थककर व्यापारी पेड़ के नीचे बैठ गया और बहुत व्याकुल हुआ। उस दिन बृहस्पतिवार था। उसकी ऐसी दशा देखकर बृहस्पति देव साधु का वेश बनाकर उसके पास आए और उससे बोले–"इस सुनसान जंगल में अकेले बैठकर क्या सोच रहे हो?" व्यापारी ने दुःखी मन से सारा वृतांत साधु को कह सुनाया। बृहस्पति देव जी ने कहा, तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं। तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पति भगवान का अपमान किया था जिस कारण तुम्हें इतना कष्ट पहुंचा। किंतु अब तुम्हारे

दिन फिर जाएंगे। तुम नियमानुसार बृहस्पतिदेव जी का पूजन व उपवास बृहस्पतिवार के दिन किया करो।

दो पैसे के चने व मुनक्का मंगाकर जल के लोटे में थोड़ी-सी शक्कर डालकर उस अमृत और प्रसाद को सारे परिवार वालों तथा कथा सुनने वालों में बांटा करो तथा स्वयं भी प्रेमपूर्वक प्रसाद को खाया करो। बृहस्पति देव तुम्हारे कष्टों को अवश्य और शीघ्र ही दूर करेंगे।"

साधु के ऐसे वचनों को सुनकर व्यापारी ने कहा-"हे महाराज! मुझे लकड़ियां बेचकर इतना भी धन नहीं मिलता कि मैं अपनी एकमात्र पुत्री को दही भी खिला पाऊं। अपनी पुत्री को रोज यह आश्वसान देकर आता हूं कि आज उसे दही अवश्य ही खिलाऊंगा, आज भी इसी सोच में यहां बैठा हूं।"

बृहस्पति देव जी ने कहा-"हे वत्स! तुम चिंतित न हो। बृहस्पतिवार के दिन तुम लकड़ियां बेचने शहर जाना। उस दिन तुम्हें लकड़ियों के विक्रय में चार पैसे अधिक प्राप्त होंगे। उन पैसों में से दो पैसे की दही लाकर तुम अपनी पुत्री को खिलाना तथा दो पैसे के चना और मुनक्का लाकर बृहस्पति देव जी की कथा करना, जल में थोड़ी सी शक्कर डालकर अमृत बनाना तथा कथा का प्रसाद सब में बांटना और खुद भी खाना तो तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे।" इतना कहकर बृहस्पति देव जी अन्तर्ध्यान हो गए।

गुरुवार के दिन उस व्यापारी ने जंगल में से लकड़ियां एकत्र कीं और शहर में बेचने के लिए गया। उस दिन उसे पहले से चार पैसे अधिक मिले। उस धन से उसने दो पैसे की दही लाकर अपनी कन्या को दी तथा दो पैसे के चने और मुनक्का मंगाकर अमृत बनाकर प्रसाद बांटा तथा प्रेम से खाया।

उसी दिन से उसकी सभी कठिनाइयां दूर हो गईं। वह सुखपूर्वक रहने लगा, किंतु अगले बृहस्पतिवार को वह व्यापारी भगवान बृहस्पति देव की कथा करना तथा व्रत रखना भूल गया।

भगवान बृहस्पति देव उससे रुष्ट हो गए। शुक्रवार को उस नगर के राजा ने अपने महल में बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया और अपने नगर में घोषणा करवाई कि आज कोई भी व्यक्ति अपने घर में अग्नि न प्रज्वलित करे तथा समस्त जनता मेरे महल में आकर भोजन ग्रहण करे। जो इस आज्ञा का अवहेलना करेगा। उसे सूली पर लटकाया जाएगा।

राजा की आज्ञानुसार सभी नगरवासी राजा के महल में भोजन करने के लिये गए किंतु वह व्यापारी और उसकी लड़की तनिक विलंब से पहुंचे। अतः राजा ने उन दोनों को अपने महल के भीतर ले जाकर भोजन कराया।

जब वह पिता-पुत्री दोनों भोजन करके चले गए तो महारानी की दृष्टि उस खूंटी पर पड़ी जिस पर उसका नौलखा हार टंगा हुआ था। उस खूंटी पर अब हार नहीं था। महारानी को विश्वास हो गया कि हार लकड़हारा और उसकी लड़की ही ले गए हैं।

उसने तत्काल सिपाहियों को बुलाकर दोनों बाप-बेटी को कैद करके जेल में डलवा दिया। जेल में कैद होकर बाप-बेटी दोनों अत्यंत दुःखी हो गए। वहां उन्होंने भगवान बृहस्पति देव का स्मरण किया। उसकी पुकार सुनकर भगवान बृहस्पति जी जेल में प्रकट हुए तथा कहने लगे कि हे भक्त राज, तुम पिछले सप्ताह बृहस्पति देवता की कथा करना भूल गए थे जिसके कारण तुम्हारा यह हाल हुआ है।

परन्तु अब भी तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। अगले बृहस्पतिवार के दिन तुम्हें कैदखाने के द्वार पर दो पैसे पड़े मिलेंगे। तुम वह पैसे उठाकर चने तथा मुनक्का मंगा लेना तथा विधिपूर्वक बृहस्पति देवता का पूजन तथा कथा करना तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जाएंगे।

बृहस्पतिवार के दिन उस व्यापारी को जेल के मुख्य द्वार पर दो पैसे पड़े हुए मिले। बाहर सड़क पर एक स्त्री जा रही थी। व्यापारी ने उस स्त्री को बुलाकर कहा कि बहन तुम मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दो ताकि मैं भगवान बृहस्पति देव की कथा कर सकूं।

उस स्त्री ने कहा कि मैं अपने बेटे के विवाह के लिये कपड़े सिलवाने जा रही हूं। अतः मैं तुम्हारे बृहस्पति भगवान को क्या जानूं। इतना कहकर वह स्त्री वहां से चली गई। व्यापारी दुःखी हो गया।

थोड़ी देर के बाद वहां से एक और स्त्री निकली। व्यापारी ने उस स्त्री को बुलाकर कहा कि बहन मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दो, मुझे बृहस्पति देव की कथा करनी है।

वह स्त्री भगवान बृहस्पति का नाम सुनकर गद्‌गद होकर बोली–''बलिहारी जाऊं, भगवान के नाम पर मैं तुम्हें अभी चने और मुनक्का लाकर देती हूं मेरा इकलौता बेटा मर गया है। मैं तो उसके लिये कफन लेने जा रही थी मगर अब पहले तुम्हारा काम करूंगी इसके बाद बेटे के लिये कफन लाऊंगी।''

इतना कहकर उस स्त्री ने व्यापारी से पैसे लिये और बाजार से चने मुनक्का ले आई और स्वयं भी बृहस्पति देवता की कथा सुनकर प्रसाद लेकर अपने घर की ओर रवाना हुई।

स्त्री ने देखा कि लोग उसके बेटे की लाश को 'राम-नाम सत्य है', कहते हुए श्मशान की ओर लेकर जा रहे हैं। उस स्त्री ने कहा कि भाई मुझे अपने लाड़ले का

मुख तो देख लेने दो। लोगों ने अर्थी को जमीन पर रखा। तब उसी स्त्री ने प्रसाद और अमृत अपने मृत पुत्र के मुख में डाला। प्रसाद और अमृत के मुख में पड़ते ही उसका मृत पुत्र उठ खड़ा हुआ और अपनी माता से प्रेमपूर्वक मिला।

दूसरी ओर जिस स्त्री ने भगवान बृहस्पति का निरादर किया था। वह जब अपने पुत्र के विवाह के लिये कपड़े लेकर लौटी तो घोड़ी ने एक ऐसी छलांग मारी कि उसका पुत्र घोड़ी से जमीन पर आ गिरा और घायल हो गया एवं कुछ क्षण पश्चात् ही मर गया।

तब वह स्त्री रोकर बृहस्पति भगवान से कहने लगी कि हे देव मेरा अपराध क्षमा करो, मेरा अपराध क्षमा करो। उसकी पुकार सुनकर भगवान बृहस्पति देवता साधु का रूप धरकर वहां आए और कहने लगे, "देवी, अधिक शोर मचाने की कोई आवश्यकता नहीं। तुमने बृहस्पति देवता का निरादर किया था जिसका यह फल तुम्हें मिला है। तुम जेल खाने जाकर उस भक्त से क्षमा याचना करो तो सब ठीक हो जाएगा। ऐसा सुनकर वह स्त्री शीघ्रतापूर्वक जेलखाने पहुंची तथा उस व्यापारी से हाथ जोड़कर कहने लगी–"हे भक्तराज,"मैंने तुम्हारा कहना नहीं माना तथा तुम्हें चने और मुनक्का लाकर नहीं दिया। इस कारण बृहस्पति देवता मुझसे रुष्ट हो गए तथा मेरा इकलौता बेटा घोड़ी से गिरकर मर गया।"

व्यापारी ने कहा–"हे माता तू चिंता मत कर। बृहस्पति देवता सबका कल्याण करेंगे। तुम अगले बृहस्पतिवार को आकर बृहस्पति देव की कथा सुनना, तब तक अपने पुत्र के शव को फूल, इत्र, घी आदि सुगंधित वस्तुओं में डालकर रख दो।" उस स्त्री ने ऐसा ही किया। बृहस्पतिवार का दिन भी आ गया। वह स्त्री दो पैसे के चने और मुनक्का लेकर तथा पवित्र जल का लोटा भरकर जेलखाने पहुंची तथा श्रद्धा के साथ भगवान बृहस्पति की कथा सुनी। जब कथा समाप्त हुई तो अमृत और प्रसाद लाकर अपने मृत पुत्र के मुख में डाला। प्रसाद के मुख में पड़ते ही उसके पुत्र की सांस आने लगी तथा वह उठकर खड़ा हो गया। तब वह स्त्री प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान करती हुई अपने पुत्र के साथ घर को रवाना हुई।

उसी रात्रि स्वप्न में राजा को बृहस्पति देवता ने दर्शन दिये तथा कहा–"हे राजा! तूने जिस व्यापारी और उसकी पुत्री को जेल में बंद कर रखा है वह दोनों निर्दोष हैं। अब तू दिन निकलते ही दोनों को मुक्त कर दे। तेरा नौलखाहार उसी खूंटी पर लटका है।" दिन निकला तो रानी ने अपना हार खूंटी पर लटका देखा। राजा ने उस व्यापारी को जेल से मुक्त कर अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी तथा उसको अपना आधा राज्य देकर तथा उसकी लड़की का उच्च कुल में विवाह कर दहेज में अनमोल हीरे-जवाहरात दिये। इस प्रकार वह दोनों पिता-पुत्री सुखपूर्वक जीवन यापन करने लगे।

गुरुवार व्रत का दूसरी कथा

एक दिन इन्द्र अहंकारपूर्वक सिंहासन पर बैठे थे और बहुत से देवता ऋषि, गन्धर्व, किन्नर आदि सभी सभा में उपस्थित थे। जिस समय बृहस्पति जी सभा में आए तो सभी देवतागण उसके सम्मान में खड़े हो गए किंतु इंद्रराज गर्व के कारण अपने सिंहासन से न उठे। यद्यपि वह सदैव उनके आदर के लिये उठते थे। बृहस्पति जी इसे अपना अनादर समझकर वहां से उठकर चले गए।

तब इन्द्र को बड़ा दु:ख हुआ कि मैंने गुरुदेव का अनादर किया, मुझसे बहुत भारी भूल हो गई। उनकी कृपा से ही तो मुझे यह वैभव प्राप्त हुआ है। उनके क्रोध से यह सब वैभव नष्ट हो जाएगा। अत: मुझे उनके पास जाकर क्षमा मांग लेनी चाहिए। जिससे उनका क्रोध शांत होगा तथा मेरा कल्याण होगा ऐसा विचार कर इंद्र बृहस्पति जी के पास गए।

गुरु बृहस्पति जी ने अपने योगबल के द्वारा यह जान लिया था कि इन्द्र अपने अपराध के लिये क्षमा मांगने आ रहे हैं, किंतु क्रोधवश उनसे भेंट करना उचित ना समझकर बृहस्पति देव अन्तर्ध्यान हो गए। जब इंद्र ने बृहस्पति जी को आश्रम में न देखा तो वे निराश होकर लौट गए। जब दैत्यों के राजा वृष वर्मा ने यह समाचार सुना तो उसने अपने गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से इंद्रपुरी को चारों ओर से घेर लिया। गुरु की कृपा न प्राप्त होने के कारण देवता हारने लगे।

तब देवताओं ने जाकर ब्रह्माजी से सारा वृतान्त कह सुनाया तथा उनसे रक्षा के लिये निवेदन किया। ब्रह्माजी ने कहा कि तुमने बृहस्पति देवता को क्रोधित कर घोर अपराध किया है। त्वष्टा ऋषि के पुत्र विश्वरूपा बड़े तपस्वी और ज्ञानी हैं। तुम उन्हें अपना पुरोहित बनाओ, तभी कल्याण हो सकता है। यह सुनकर इंद्र त्वष्टा ऋषि के पास गये। तथा विनयपूर्वक कहने लगे कि आप हमारे पुरोहित बन जाएं ताकि हमारा कल्याण हो। त्वष्टा ऋषि ने उत्तर दिया कि पुरोहित बनने से तपोबल घट जाता है किंतु तुम्हारे कहने से मेरा पुत्र विश्वरूपा पुरोहित बनकर तुम्हारी रक्षा करेगा।

विश्वरूपा ने पुरोहित बनकर देवताओं की सहायता की तथा हरी इच्छा से इन्द्र वृष वर्मा से युद्ध में जीतकर इंद्रासन पर स्थित हुए। विश्वरूपा के तीन मुख थे। एक मुख से वह सोम पल्ली लता का रस निकालकर पीते थे। दूसरे मुख से मदिरा पीते थे तथा तीसरे मुख से अन्नादि भोजन करते थे। इंद्र ने कुछ समयोपरान्त कहा कि हे देव मैं आपकी कृपा से यज्ञ करना चाहता हूं। विश्वरूपा की आज्ञानुसार यज्ञ प्रारम्भ हो गया। एक दैत्य ने आकर विश्वरूपा से कहा कि तुम्हारी माता दैत्य की कन्या है। इस कारण दैत्यों के कल्याण के लिये एक आहुति दैत्यों के नाम पर भी दे दिया करो।

विश्वरूपा उस दैत्य का कहा मानकर आहुति देते समय दैत्यों का नाम भी धीरे से लेने लगे। इसी कारण यज्ञ के द्वारा देवताओं के तेज में वृद्धि नहीं हुई। इंद्र ने यह वृतान्त जानते ही क्रोधित होकर विश्वरूपा के तीनों सिर काट डाले। मद्यपान करने वाले मुख से भंवरा, सोमपल्ली का रस पीने वाले मुख से कबूतर तथा अन्न खाने वाले मुख से तीतर उत्पन्न हुआ।

विश्वरूपा के मरते ही इंद्र का स्वरूप ब्रह्महत्या के प्रभाव से बदल गया। देवताओं द्वारा एक वर्ष तक पश्चाताप करने पर भी ब्रह्महत्या का वह पाप कम न हुआ तो सब देवताओं की विनती पर ब्रह्माजी गुरु बृहस्पति जी को साथ लेकर इंद्रपुरी पहुंचे। उस ब्रह्महत्या के चार भाग किये। उसमें से एक भाग पृथ्वी को दिया। इस कारण पृथ्वी असमतल तथा कहीं-कहीं बीज बोने योग्य भी नहीं होती। साथ ही ब्रह्मा जी ने यह वरदान भी दिया कि पृथ्वी में गड्ढा होगा जो समय पाकर स्वयं भर जाएगा।

दूसरा भाग वृक्षों को दिया जिसमें से गोंद बहता है। इसी के कारण गूगल के अतिरिक्त सभी प्रकार के वृक्षों के गोंद अशुद्ध समझा जाता है। वृक्षों को यह वरदान भी दिया कि ऊपर से सूख जाने पर जड़ पुनः फूट जाएगी।

तीसरा भाग स्त्रियों को दिया, इसी कारण स्त्रियां हर महीने रजस्वला होकर पहले दिन चांडालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी और तीसरे दिन धोबिन के समान रहकर चौथे दिन शुद्ध होती हैं। साथ ही उनको संतान प्राप्ति का वरदान दिया।

चौथा भाग समुद्र को दिया जिससे फेन तथा सिवाल आदि जल के ऊपर आ जाते हैं। जल को यह वरदान दिया कि वह जिस वस्तु में डाला जाएगा वह बोझ से बढ़ जाएगी। इस प्रकार से ब्रह्मा जी ने सभी देवताओं को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त किया।

बृहस्पति देवता अत्यंत दयालु हैं। जैसी जिसकी कामना होती है वह पूर्ण करते हैं। इस व्रत को करने से व्यक्ति अनेक प्रकार के कष्टों से मुक्ति पाता है। जो व्यक्ति प्रेम पूर्वक यह कथा पढ़ेगा उसकी सभी इच्छाएं पूर्ण होंगी।

बृहस्पति देव की आरती

ॐ जय बृहस्पति देवा ॐ जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊं कदली फल मेवा।।ॐ
तुम पूरण परमात्मा तुम अर्न्तयामी।
जगत पिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी।।ॐ
चरणामृत निज निर्मल सब पातक हर्ता।

सकल मनोरथ दायक कृपा करो भर्ता।।ॐ
तन मन धन अपर्णकर जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर आकर द्वार खड़े।।ॐ
दीन दयाल, दया निधि भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता भव बंधन हारी।।ॐ
सकल मनोरथ दायक सब संशय तारी।
विषय विकार मिटाओ संतन सुखकारी।।ॐ
जो कोई आरती प्रेम सहित गावे।
ज्येष्ठानन्द आनंदकर सो निश्चय पावे।।ॐ

❑❑❑

बृहस्पति स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवम्-सन्धिच्छेद सहित

विनियोग–

अस्य श्री बृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद-ऋषि:, अनुष्टुप्-छन्द:, बृहस्पतिर्देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

स्रोतम्–

गुरु:, बृहस्पति:, जीव:, सुराचार्य:, विदाम्बर:।
वागीश:, धिषण:, दीर्घ, श्मश्रु:, पीताम्बर:, युवा।।
सुधाद्रष्टि:, ग्रहाधीश:, ग्रहपीड़ा, अपहारक:।
दयाकर, सौम्य मूर्ति:, सुरार्च्य:, कुड्मल द्युति:।।
लोक पूज्य:, लोक गुरु, नीतिज्ञ:, नीति कारक:।
तारापति, च, आंङ्गिरस:, वेद विद्या पिता मह:।।
भक्त्या, बृहस्पतिम्, स्मृत्वा, नामानि, एतानि, य, पठेत्।
अरोगी, बलवान्, श्रीमान, पुत्रवान्, स:, भवेत्, नर:।।
जीवेत्, वर्षशतम्, मर्त्य:, पापम्, नश्यति, नश्यति।
य: पूजयेत् गुरुदिने पीतगन्धा क्षतात्मजे:।
पुष्प दीप उपहारश्च: च पूजयित्वा बृहस्पतिम्
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीड़ा शांति: भवेत् सुरो:।।

बृहस्पति मंगल स्त्रोतम्

जीव: न आङ्गिर गोत्रज उत्तर मुख: दीर्घ-उत्तरा सस्थित:।
पीत, अश्वत्थ, समिद्ध-सिन्धु जनित: च आप:, अथ, मीनाधिप:।

सूर्येन्दु, क्षितिज-प्रिय: बुध सितो शत्रु समा न अपरे,

सप्ताङ्कात् विभव: शुभ, सुरगुरु: कुर्यात् सदा मंगलम्।।

नोट–भगवान बृहस्पति बुद्धि प्रदाता देव हैं, इसलिए यह देव गुरु हैं। बुद्धि विहीन जातक पशुतुल्य होता है। हर क्षेत्र में बुद्धि बल की आवश्यकता पड़ती है। अत: उपरोक्त स्तोत्र का नित्य 108 वार पाठ करने से बुद्धि बल समान रूप से जीवन पर्यन्त बना रहता है।

अथ बृहस्पति मंत्र

विनियोग–बृहस्पतेति मंत्रस्य गृत्समद ऋषि:, अनुष्टुपछन्द:, ब्रह्म देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

(नीचे लिखे कोष्ठक के अंगों को छूते रहें)

अथ देहांगन्यास–बृहस्पति शिरसि (सिर) अतियदर्य्यो, ललाटे (माथा), अर्हाद्युमत् मुखे (मुख), विभाति क्रतुमत् हृदये (हृदय), जनेषु नाभौ (नाभि), यद्दीदयत् कट्याम (कमर), शवसऋतप्रजात ऊर्वो (छाती), तदस्मासु द्रविणं जान्वो: (घुटने), धेहि गुल्फायो (गुल्फ), चित्रं पादयो: (पैर)।

अथ करन्यास–बृहस्पतेऽतियदर्य्यो अंगुष्ठाभ्यां नम:। अर्हाद्युमत् तर्जनीभ्यां नम:। विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्यां नम:। जनेषु अनाभिकाभ्यां नम:। यद्दीदयच्छ्वसऋतप्रजाततदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमे: द्रविणंधेहि चित्रम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यास–बृहस्पतेऽअतिदर्य्यो हृदय नम: (हृदय) अर्हाद्युमत् शिरसे स्वाहा। विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट् (शिखा)। जनेषु कवचाय हुं (दोनों कन्धे) यद्दीदयच्छ्वसऋतप्रजाततदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)। द्रविणं धेहित चित्रम् अस्त्राय फट्। (दायां हाथ सिर से घुमा कर बायें हाथ पर दो अंगुलियों से ताली बजाएं।)

अथ ध्यानम्–पीताम्बर: पीतवपु: किरीटी चतुर्भुज: देव गुरु: प्रशान्त:।

तथा अक्ष सूत्रम् कमण्डलुम् च दण्डम् च बिभ्रद् वरद: अस्तु मह्यम्।।

बृहस्पति का आह्वान–

बुध्यायस्यसमोनास्ति देवताना च पुरोहित:।

त्राता च सर्वदेवानां गुरुमावह्याम्यहम्।।1।।

अहो वाचस्पतोपीत संजात: सिंधुमण्डले।

एह्या गिरसगोत्रेय हयारूढचतुर्भुज:।।2।।

दंडाक्षसूत्रवरदः कमण्डलुधरप्रभो।
महाइन्द्रेति संपूज्यो विधवत्युत्तरेदले।।3।।
ॐ महाइन्द्रोवज्रहस्तः षोडशीषर्म्ययच्छतु
हंतुपाप्मानं योऽस्मयान्द्वेष्टियं च वयं दिष्मः।।26/10।।

उत्तरे गुरु स्थापयामि–

गुरुगायत्री–ॐ अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

बीज मंत्र–ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः भूर्भुव स्वः ॐ

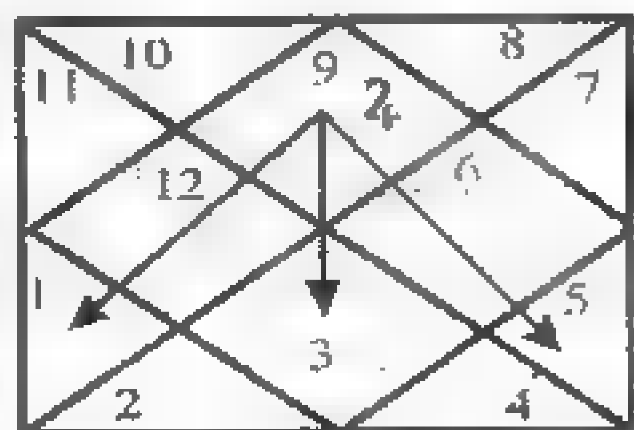
बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति। क्रुतमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रवणिन्धेहि चित्रम्।

ॐ स्वः भुवः भु सः ग्रौं ग्रीं ॐ सः गुरुवे नमः।

जपमंत्र–ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरुवे नमः एकोनविंशतिसहस्त्राणि। 19000 प्रतिदिन।

❑❑❑

धनुलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन



1. **माणिक्य**–धनुलग्न में सूर्य नवम (भाग्य) भाव का स्वामी होता है और यहां भी वह लग्नेश का मित्र होता है। अतः धनुलग्न के जातक माणिक्य भाग्योन्नति, आत्मोन्नति तथा पितृ सुख के लिए आवश्यकतानुसार धारण कर सकते हैं। सूर्य की महादशा में माणिक्य विशेष रूप से लाभदायक होगा।

2. **मोती**–धनुलग्न में चंद्र अष्टम स्थान का स्वामी होता है। अतः इस लग्न के जातक को मोती कभी धारण नहीं करना चाहिए।

3. **मूंगा**–धनुलग्न में मंगल पंचम त्रिकोण तथा द्वादश भाव का स्वामी होता है। एक त्रिकोण स्वामी होने के कारण मंगल इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। इसे धारण करने से संतान, धन, यश व भाग्योदय होता है।

4. **पन्ना**–धनुलग्न के लिए बुध सप्तम और दशम भाव का स्वामी होता है। यह केन्द्राधिपति दोष से दूषित होता है। तब भी बुध लग्न द्वितीय, पचम, नवम्, दशम या एकादश भाव में स्थित हो तो बुध की महादशा में आर्थिक लाभ, व्यवसाय में उन्नति और समृद्धि होगी। यदि बुध किसी निकृष्ट भाव में स्थित हो तो पन्ना पहनना ही श्रेयकर होगा।

5. **पुखराज**–धनुलग्न के लिए गुरु लग्न और चतुर्थ का स्वामी होने के कारण अत्यन्त शुभ ग्रह है। इस लग्न के जातक पीला पुखराज सदा रक्षा कवच के समान धारण कर सकते हैं। गुरु की महादशा में यह अत्यन्त लाभप्रद होता है। पुखराज यदि नवम (भाग्य) के स्वामी सूर्य के रत्न माणिक के साथ धारण किया जाये तो उससे शुभ फल में वृद्धि होगी। पुखराज आपका जीवन रत्न है।

6. **हीरा**—धनुलग्न के लिए शुक्र षष्ठ और एकादश का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह नहीं माना जाता है। इसके अलावा शुक्र लग्नेश गुरु का शत्रु है। तब भी यदि एकादश का स्वामी होकर कुण्डली में शुक्र द्वितीय, चतुर्थ पंचम, नवम एकादश या लग्न में स्थित हो तो शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से आर्थिक लाभ और भाग्योन्नति होगी।
7. **नीलम**—धनुलग्न के लिए शनि द्वितीय (मारक स्थान) और तृतीय भावों का स्वामी होने के कारण इस लग्न के लिए अशुभ ग्रह माना गया है। इसके अतिरिक्त शनि लग्नेश गुरु का शत्रु है। इस जातक को नीलम धारण नहीं करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**—मूंगा सवा पांच रत्ती, पुखराज सवा पांच रत्ती स्वर्ण में।
2. **भाग्योदय हेतु**—पुखराज-माणिक सवा पांच रत्ती स्वर्ण में।
3. **आरोग्य हेतु**—पुखराज-माणिक-मूंगा सवा चार-चार रत्ती त्रिलोह में।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**—नीलम सवा पांच रत्ती, पुखराज सवा चार रत्ती त्रिलोह में पहनें।



गुरु की शांति के विविध उपाय

1. गुरु के कारण उत्पन्न समस्त अरिष्टों के शमन के लिए रुद्राष्टाध्यायी एवं शिवसहस्त्र नाम का पाठ अथवा नित्य रुद्राभिषेक करना अमोघ है।
2. वैदिक या तांत्रिक गुरु मंत्र का जप तथा कवच एवं स्तोत्र पाठ अथवा भगवान दत्तात्रेय के तांत्रिक मंत्र का अनुष्ठान भी लाभप्रद है।
3. सौभाग्यवश जो लोग किसी समर्थ गुरुदेव की चरण-शरण में हैं, वे नित्य गुरु पूजन एवं गुरुध्यान करने से समस्त भौतिक एवं अभौतिक तापों से निवृत्त हो जाते हैं।
4. प्रश्नमार्ग के अनुसार गुरु महाविष्णु का प्रतिनिधित्व करता है अतः कम-से-कम पुरुष सूक्त का जप और हवन अथवा सुदर्शन होम भी कल्याणकारी है।
5. अधिक न कर सकें, तो मासिक सत्य नारायण व्रत कथा एवं गुरुवार तथा एकादशी का व्रत ही कर लें।
6. राहु मंगल आदि क्रूर एवं पाप ग्रहों से दूषित गुरु कृत 'संतानबाधा योग' में शतचंडी अथवा हरिवंश पुराण एवं संतान गोपाल मंत्र का अनुष्ठान करें।
7. ब्राह्मण एवं देवता के सम्मान, सदाचरण, फलदार वृक्ष लगवाने एवं फलों के दान (विशेषकर केला, नारंगी आदि पीले फ़ल) से बृहस्पति देव प्रसन्न होते हैं।
8. पंचम भाव स्थित शनि गुरु के अरिष्ट शमनार्थ 40 दिन तक वट वृक्ष की 108 प्रदक्षिणा करना बहुत हितकारी होता है।
9. जिन स्त्रियों के विवाह में गुरु कृत बाधा से विलंब सूचित हो, उन्हें उत्तम पुखराज धारण करना चाहिए तथा केला या पीपल वृक्ष का पूजन करना चाहिए।
10. गुरु को बलवान करने एवं धन प्राप्ति हेतु पुखराज युक्त "गुरुयंत्र" धारण करें।
11. चमेली के पुष्प (9 अथवा 12) लेकर उन्हें जल में प्रवाहित करें।
12. पीले कनेर के पुष्प गुरु प्रतिमा पर चढ़ाएं।

13. 13 अथवा 21 गुरुवार का व्रत रखें।
14. गुरु लीलामृत का पाठन अथवा श्रवण करें।
15. दत्त भगवान का विधिवत् पूजन करें।
16. कुछ स्वर्ण का दान करें–सिर्फ गुरुवार के दिन ही।
17. स्वर्ण जल का पान करें। "स्वर्ण–जल" से तात्पर्य ऐसे जल से है जिसमें स्वर्ण को डुबोया गया हो।
18. पीत-वस्त्रों का दान किसी सौभाग्यवती को दें।
19. "स्वर्ण-जल" से स्नान करें।
20. गुरु के होरा में निर्जल रहे।
21. मिथुन या कन्या लग्न में गुरु छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो गुरु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शुद्ध सोने के दो टुकड़े या पुखराज रत्न बराबर वजन के ले। विवाह समय एक टुकड़ा संकल्पपूर्वक नदी में बहा दें तथा दूसरा अपने पास रखें। जब तक दूसरा टुकड़ा जातक के पास रहेगा उसको गुरु का कुप्रभाव स्पर्श नहीं कर पाएगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।
22. बृहस्पतिवार का व्रत 5 या 11 या 43 बार रखना चाहिए।
23. हरि पूजन करना या पीपल का पालन करना चाहिए।
24. श्रीविष्णु भगवान् को नमस्कार करना।
25. पुखराज पहनना, पुखराज के अभाव में हल्दी की गट्टी पीले रंग के धागे में बांध कर दायीं भुजा पर बांधना।
26. चांदी की कटोरी में केसर/हल्दी का तिलक करना।
27. शुद्ध सोना धारण करना (गुरु षष्ठ भाव को छोड़कर)।
28. नाभि (धुनी) पर केसर लगाना या केसर खाना।
29. ब्राह्मण, कुल पुरोहित या साधु की सेवा करना।
30. गरुड़ पूजा (गरुड़ पुराण) का पाठ करना।
31. घर की दीवारों पर पीला रंग करना।
32. पीले फूल (गेंदा या सूरजमुखी) लगाना।
33. गुरु उच्च का हो तो गुरु की चीजों का दान न देना।
34. गुरु नीच का हो तो गुरु की चीजों का दान न लेना।

उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43, दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।

35. गुरु पीड़ा की विशेष शांति-हेतु सफेद सरसों, दमयंती के पुत्र, मुलैठी और मालती के पुष्प मिलाकर 9 बृहस्पतिवार तक नियमित स्नान करें।

36. गुरु पीड़ा की विशेष शांति हेतु कोई तीन जाति के श्वेत पुष्प श्री गुरुदेव एवं इष्ट का ध्यान करते हुए 9 बृहस्पतिवार तक नियमित स्नान करें।

37. यदि गुरु बिगड़ा हुआ है तो ऐसे व्यक्ति ने इस जन्म या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को कटाया है। कुलगुरु, कुल देवता या किसी आदरणीय व्यक्ति का अपमान किया है जिसके कारण जातक को संतान सुख नहीं होता। ऐसे में जातक को गुरु के वैदिक मंत्रों को 19,000 बार जप करने चाहिए। गुरु संबंधी वस्तुओं का दान करते हुए, वृद्ध लोगों का आदर करते हुए गुरु की सेवा करें एवं गुरुवार को नियमित व्रत करें।

38. हरिवंश पुराण के अनुसार पितरों की तिथि, श्राद्ध यज्ञ करना चाहिए।



प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी का अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा। क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठायें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां दैवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभु चरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशंसा न करें, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित असत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों का अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अन्तर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिये।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अशों में बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दुःख, कष्ट एवं परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा (Direction) में मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दुःस्थान के स्वामी) की महादशा हो, और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो, तो आरंभ में कष्ट होता है और अंत में सुख होता है।

17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) महादशा हो, और उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अंतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतरदशा में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो, अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है।

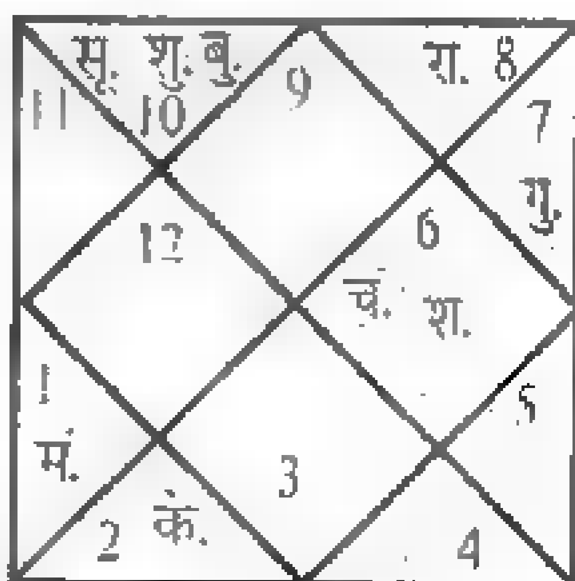
26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

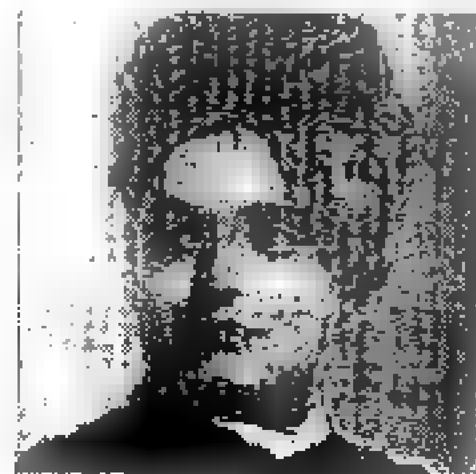
27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति की रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन से अचानक शुभ समाचार मिल गये। बैन्ड-बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

स्वामी विवेकानन्द जी





जन्म तिथि-12 जनवरी 1862, जन्म समय-5.52 बजे सुबह, जन्म स्थान-कलकत्ता। स्वामी विवेकानन्द के बारे में प्रमुख रूप से निम्न तथ्य ज्यादा प्रचलित थे।

1. आकर्षक व्यक्तित्व, 2. अविवाहित जीवन, 3. प्रखर वक्तव्य शैली, 4. ब्रह्म ज्ञान की तेजस्विता सरस्वती योग। कई जगह विवेकानन्द की कुण्डली 'मकरलग्न' में भी दी गई है।

तुलनात्मक अध्ययन–मकर लग्न भौतिकता वादी है। इसका स्वामी शनि स्वार्थी ग्रह है तथा शत्रुक्षेत्री चंद्रमा के साथ है जबकि धनुलग्न आध्यात्मिक व्यक्तित्व देता है।

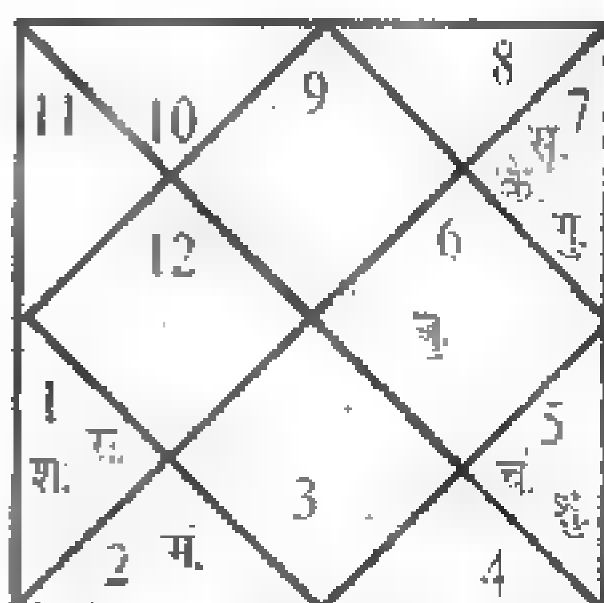
धनुलग्न में सूर्य व्यक्ति को तेजस्वी एवं दिव्य ज्ञान से ओत-प्रोत करता है, आकर्षक व्यक्तित्व देता है, जबकि मकर लग्न में बारहवां सूर्य व्यक्तित्व को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।

धनुलग्न में सप्तमेश बुध है जो कि शत्रुक्षेत्री सूर्य के साथ युति किये हुए है। सप्तमेश बुध की दृष्टि अष्टमभाव पर है। राहु बारहवें है जिससे अविवाह योग बनाता है। मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा है जो शत्रुक्षेत्री है। मंगल चौथे होने से कुण्डली मांगलिक बनी। मंगल की नीच दृष्टि सप्तम भाव पर अविवाह योग बनाती है।

द्वितीय भाव वाणी का होता है मकरलग्न में वाणी का अधिपति शनि होगा जो कि शत्रुक्षेत्री चंद्रमा के साथ होने से दूषित वाणी देगा। जबकि धनुलग्न में भी वाणी का अधिपति शनि ही होगा परन्तु द्वितीय भाव में बुध+शुक्र युति जातक को ओजस्वी वाणी एवं प्रखर वक्ता बनायेगी।

पंचम भाव में स्वगृही मंगल सरस्वती योग बनाता है। जबकि मकर लग्न के पंचम भाव में केतु विद्या में बाधक है। धनुलग्न में द्वादश राहु विदेश यात्रा योग बनाता है तथा द्वादश भाव का स्वामी मंगल स्वगृही होने से विदेश यात्रा से कीर्ति भी दिलाता है जबकि यह योग मकरलग्न में घटित नहीं होता। फलतः धनुलग्न की विवेकानन्द की कुण्डली प्रभावी रूप से सही सत्य मुखरित होती है।

महर्षि महेश योगी

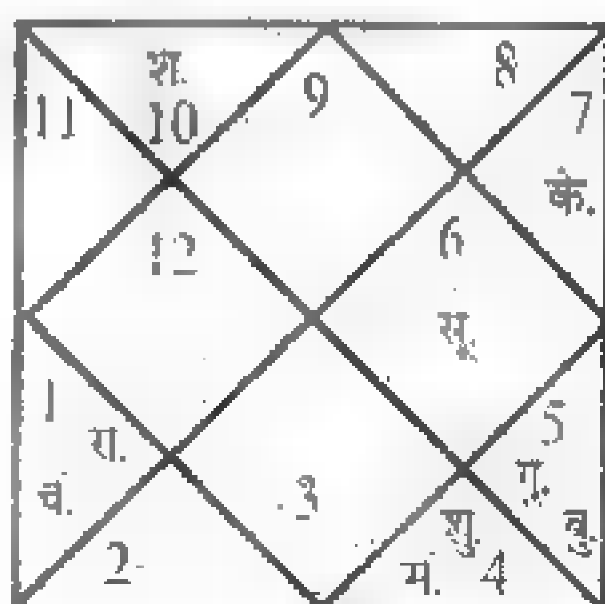




जन्म स्थान–उत्तरकाशी, जन्म समय–12.00, जन्मतिथि–18.10.1911। 'पद्मनामक पूर्ण कालसर्प योग' के कारण महर्षि महेश योगी के कोई संतान नहीं है तथा न ही अब तक कोई योग्य उत्तराधिकारी भी इन्हें मिला है। यह 'कालसर्प योग' की सत्यता का अनुपम उदाहरण है।

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि, महामण्डलेश्वर

जन्म स्थान -आगरा, जन्मतिथि- 19 सितम्बर 1932





शंकराचार्य श्री वासुदेवानन्द सरस्वती

11 | 10 | 9 गु. | के. 8 | 7
12 | 6 मं.
1 ल. | शु. 3 | 5
2 श. ग. | बु. सू. 4

माणिक्य महाप्रभु महाराज

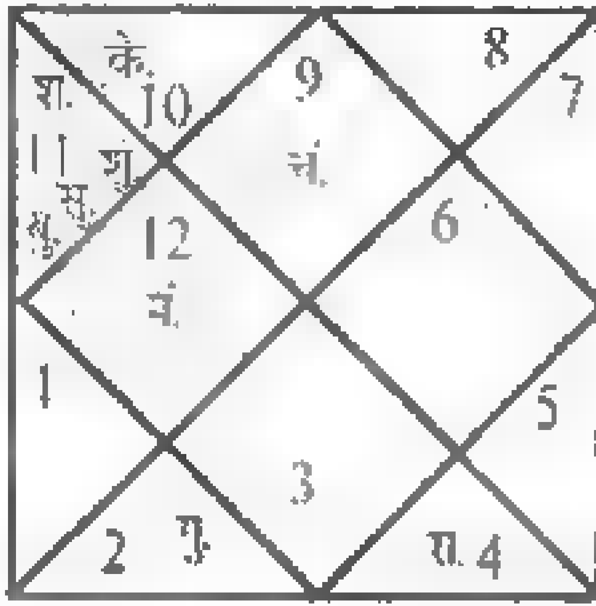
11 श. | 10 | 9 सू. गु. बु. | ग. 8 | 7
12 | 6
1 | चं. 3 | 5
2 के. शु. मं. | 4

श्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर

11 गु. | रा. 10 | 9 | 8 | 7 मं.
12 श. | 6 बु. सू.
1 | 3 | 5
2 चं. | के. शु. 4

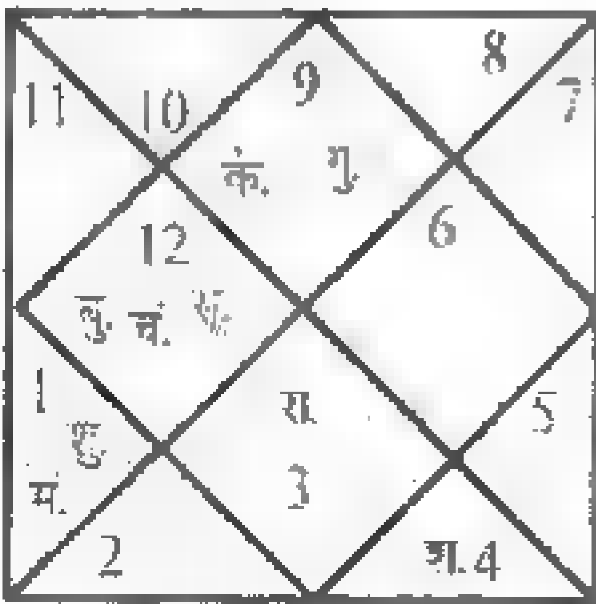
जन्म स्थान-कलकत्ता।

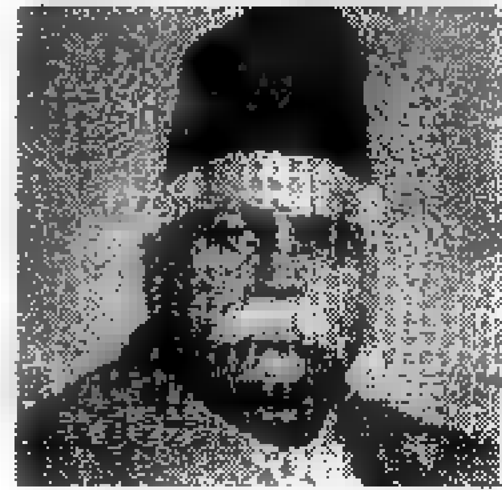
श्री गुरु गोलवरकरजी (सरसंघ चालक)





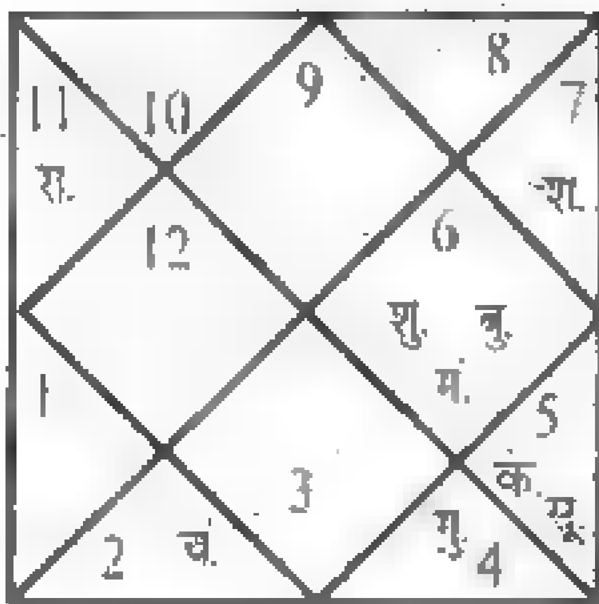
डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार

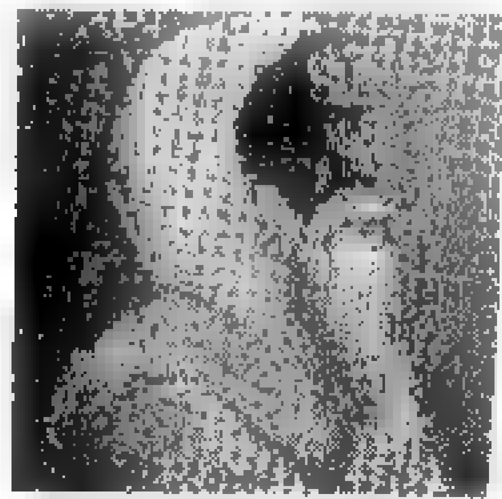




जन्म समय-1.13 रात्रि, जन्म तिथि-1.4.1889, जन्म स्थान-नागपुर। संस्थापक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ।

आचार्य विनोबा भावे

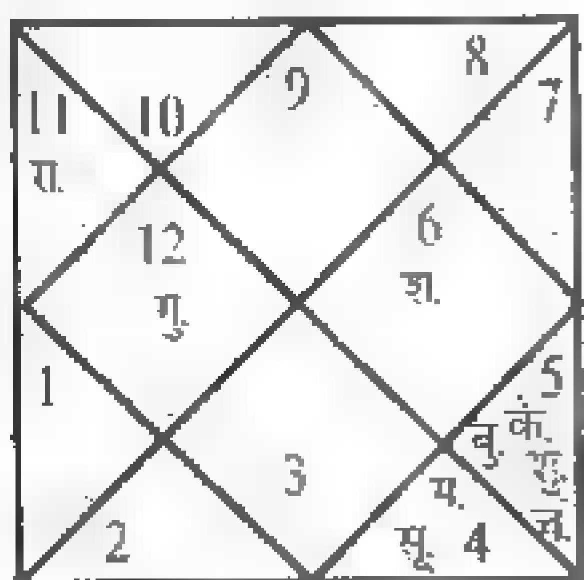




जन्म समय-14.30, जन्म तिथि-11.9.1895, जन्म स्थान-वर्धा। मानसागरी श्लोक 7 पृष्ठ 222 के अनुसार जिस जातक की कुंडली में बुध, शुक्र या गुरु केंद्र

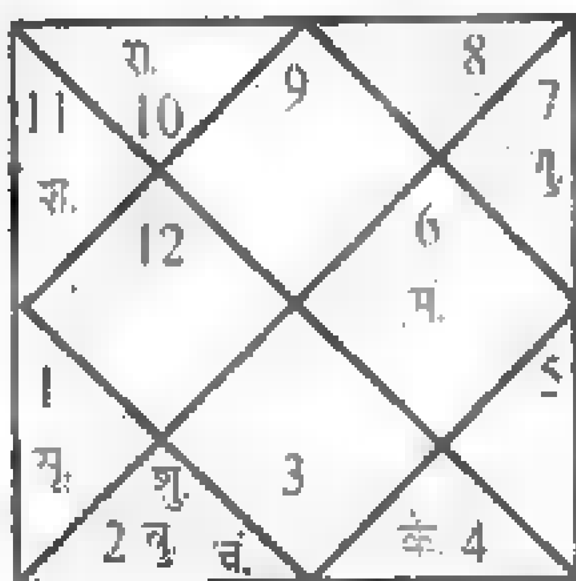
में होकर मंगल दशम में हो तो राजयोग होता है। यद्यपि भूदान यज्ञ के प्रवर्तक आचार्य विनोबा भावे किसी राजनैतिक पद या सरकारी पद पर प्रतिष्ठित नहीं हुए तथापि बड़े-बड़े राजा-महाराजा, जागीरदार व जमींदार के सिर उनके चरणों में झुकते थे। स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री उनकी आज्ञा के पालन हेतु आतुर रहते थे। अतः उनकी कुंडली ज्योतिष प्रेमियों हेतु विशेष रूप से दृष्टव्य है। उच्च का बुध केंद्र में होने से 'पद्मसिंहासन योग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि कर रहा है। लग्नेश गुरु उच्च का, चंद्रमा उच्च का एवं सूर्य स्वगृही भाग्य भवन में, एवं शनि उच्च का लाभस्थान में बैठा है। लग्नेश अष्टम में जाने से 'लग्नभंग योग' बना जिसके कारण वे किसी भी प्रभावशाली पद पर आरूढ़ नहीं हो सके इस कुंडली की सत्यता को प्रमाणित कर रहा है।

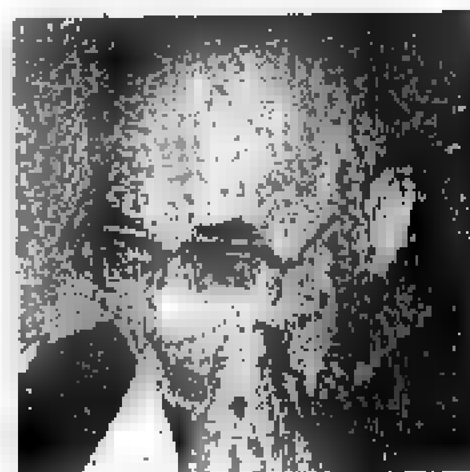
योगी महेश्वरानन्द जी, जाडन आश्रम



जन्म तिथि-15.6.1952।

महान संत दलाई लामा

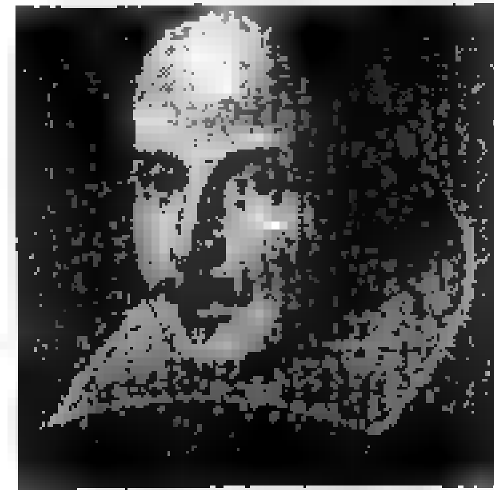




जन्म तिथि-5.5.1935, जन्मसमय-22.00, जन्म स्थान-तक्तसर (तिब्बत)।

विलियम शेक्सपियर महान नाटककार

राशि	ग्रह
1	सू. चं.
2	शु. रा.
3	मं.
4	श. गु.
5	
6	
7	के.
8	
9	
10	
11	
12	बु.



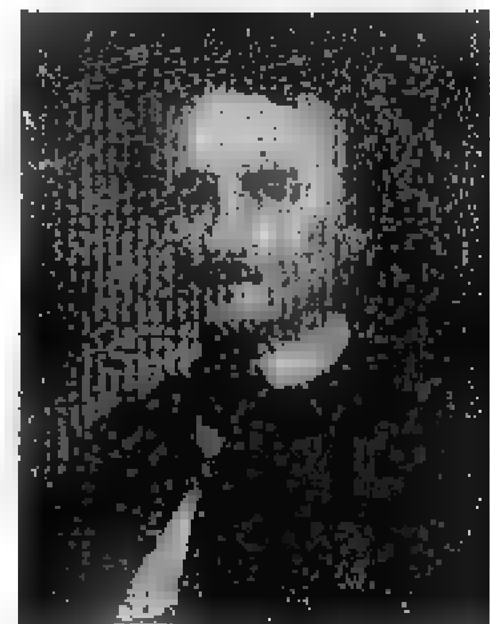
जॉन मिल्टन, विश्व विख्यात कवि

राशि	ग्रह
1	गु.
2	चं.
3	
4	रा.
5	
6	
7	
8	
9	सू. बु.
10	शु. श. के.
11	
12	मं.



एडगर एलॉन पो (अमेरिका)

राशि	ग्रह
1	के.
2	श.
3	
4	
5	
6	मं.
7	रा.
8	
9	
10	सू. बु.
11	गु. शु. चं.
12	



एक ऐसा अमेरिकन कवि व आलोचक जिसने अपनी मृत्यु स्वप्न में देखी और ठीक वैसे ही उसकी मृत्यु स्वप्नावस्था में हुई।

किंग ऑफ असन्तेज (घाना)

जन्म तिथि-30.11.1919, जन्म समय-9.09।

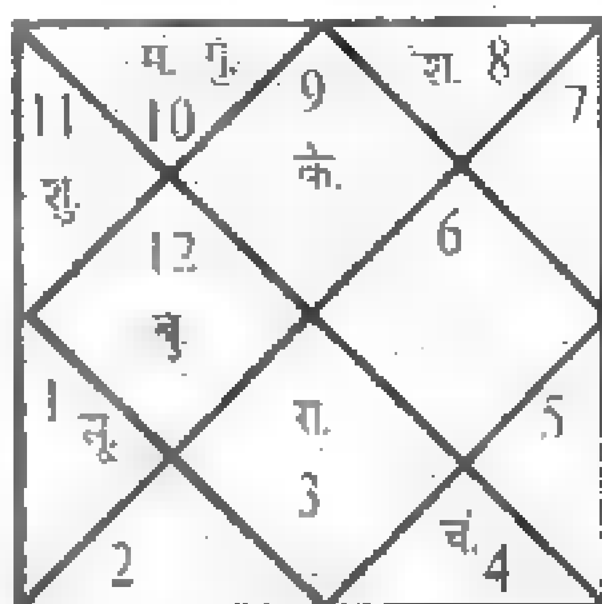
पीर ऑफ पेगारो स्थान हैदराबाद (पाकि.)

जन्म तिथि-22.11.1928, जन्म समय-10.32।

श्री मोहनलाल सुखाडिया

मुख्यमंत्री राजस्थान, जन्म समय-27.7.1916, जन्म समय-16.40, जन्म स्थान झालरापाटन। मुख्यमंत्री काल-13 नवम्बर 1954 से 13 मार्च 1967, 26 अप्रैल 1967 से 8 जुलाई 1971। निधन-2 फरवरी 1982।

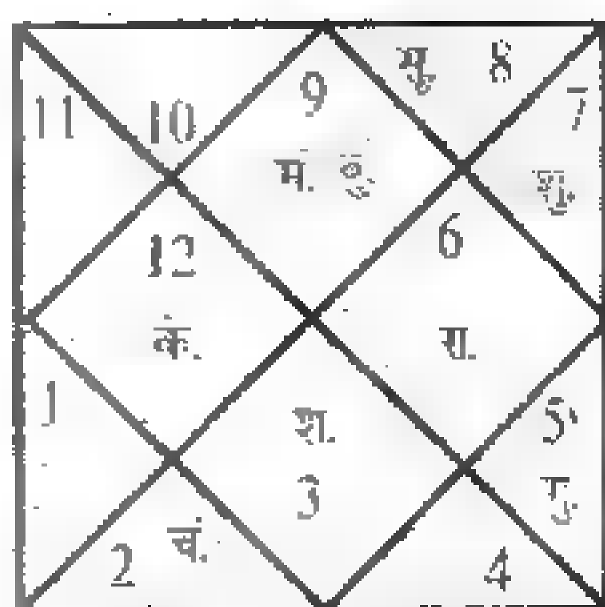
महारानी ऐलिजाबेथ द्वितीय





जन्म तिथि-21.4.1926। 25 वर्ष की अल्पायु में महारानी ऐलिजाबेथ का राज्याभिषेक ब्रिटिश साम्राज्य की राजगद्दी पर फरवरी 1952 में हुआ, जब उनके पिता जार्ज पंचम की मृत्यु हो गई।

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद





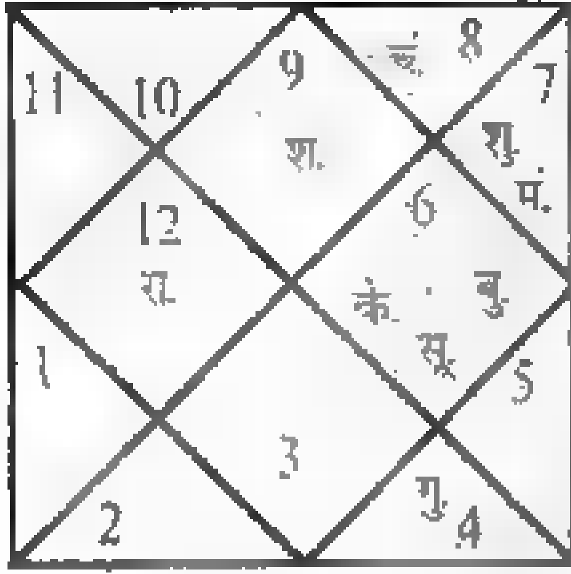
जन्म तिथि-3.12.1884, जन्म समय-प्रातः 9.00, जन्म स्थान-कोलकाता। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार चारों केंद्रों में शुभ या पाप ग्रह होंगे तो चतुः सागर नाम का राजयोग होता है। यथा-

चतुर्ष केन्द्रस्थानेषु सौम्यपाप ग्रह स्थितिः।
चतुः सागर योगो यं, राज्यदो धनदो भवेत्॥

--लग्न चंद्रिका, श्लोक 55/पृ. 12

इस कुंडली में लग्नेश गुरु पूर्ण ताकत से अपनी राशि (लग्न स्थान) को देख रहा है। शुक्र स्वगृही लाभ स्थान में है। चंद्रमा उच्च का है। लग्न को चार ग्रहों का बल मिल रहा है। बुध 'पद्मसिंहासन' योग करके बैठा है। इन योगों के कारण ही डॉ. श्री राजेन्द्र प्रसाद ने स्वतंत्र भारत को प्रथम राष्ट्रपति के रूप में यशस्वी शासन प्रदान किया।

राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम



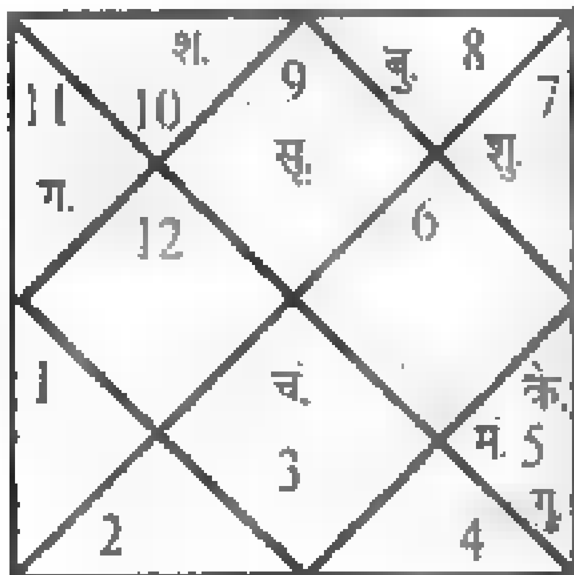


जन्म तिथि-15.10.1931, जन्म समय-11.30 दोपहर, जन्म स्थान-रामेश्वरम्।

अविवाहित राष्ट्रपति

पंचमेश नीच राशिगत, शत्रुक्षेत्री, अस्त या षष्ठ, अष्ठम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तो अविवाहित रहने का योग होता है। यदि क्रूर ग्रह पंचम, अष्टम तथा द्वादश भावों में स्थित हो तो विवाह कारक अन्य योगों के न होने पर जातक अविवाहित जीवन व्यतीत करता है। सूर्य और शनि क्रमशः द्वितीय और द्वादश भावों में स्थित हों तथा लग्नेश बलहीन हो तो विवाह नहीं होता। अधिकतर अविवाहितों की कुण्डलियों में शुक्र से द्वितीयस्थ सूर्य की स्थिति उत्तरदायी होती है। पंचम भाव में मंगल, सूर्य, राहु, शनि आदि पाप ग्रहों की दृष्टि विवाहित जीवन से हीन करती है। शनि की दृष्टि से सप्तम भाव और सप्तमेश दोनों पीड़ित हैं। भाग्येश सूर्य पर भी शनि की दृष्टि है तथा सप्तमेश बुध, सूर्य से अस्त है। कुटुम्ब भाव पर मंगल की दृष्टि है। उक्त कारणों से डॉ. कलाम अविवाहित रहे।

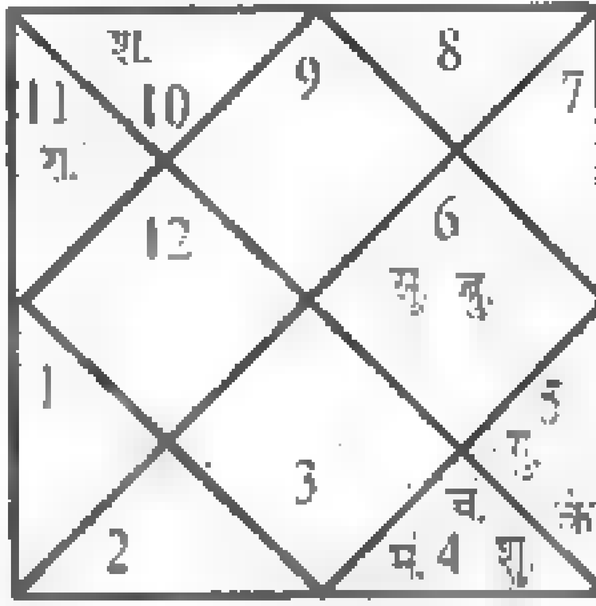
श्री टी.एन. शेषन

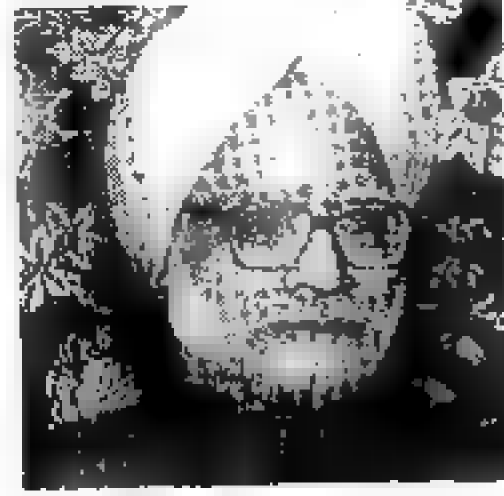




भारत का प्रभावशाली चुनाव आयुक्त जिसने अपनी अलग पहचान बनाई। जन्म तिथि-15.12.1932, जन्म समय-8.00, जन्म स्थान-पालघाट।

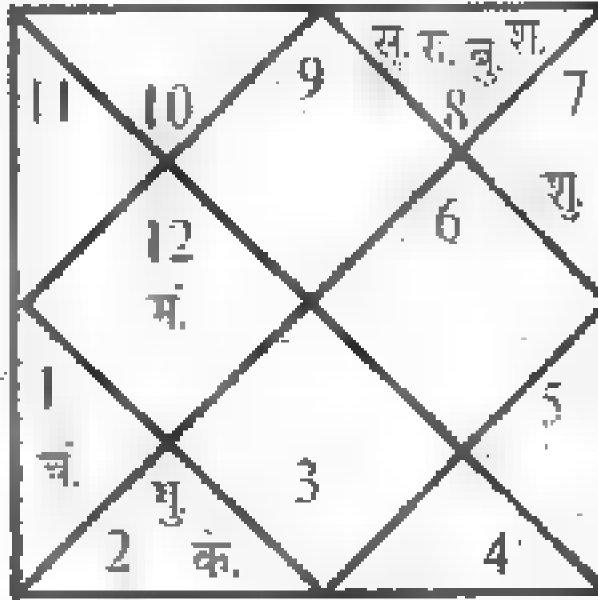
डॉ. मनमोहन सिंह

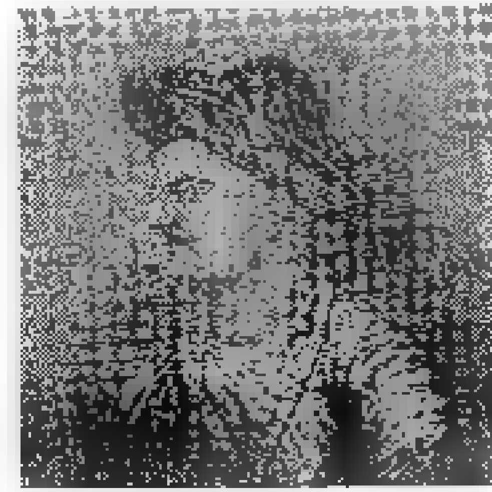




जन्म तिथि-26.9.1932, जन्म समय-14.00, जन्म स्थान-झेलम (पाकिस्तान)। भारत के यशस्वी वित्तमंत्री कार्यकाल 1991-1996।

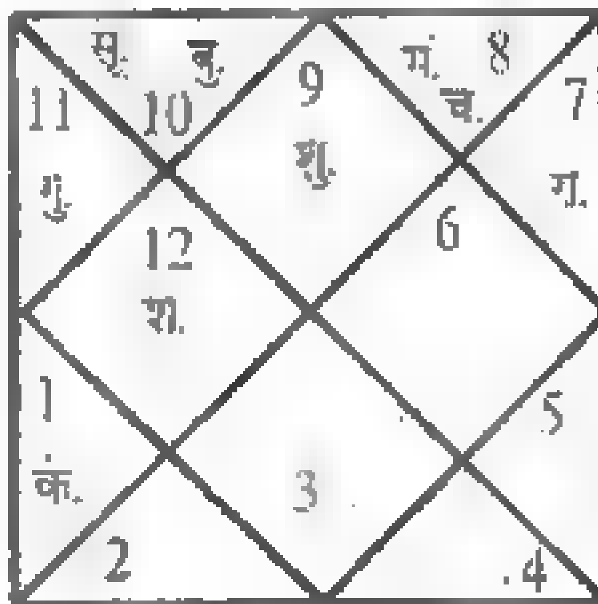
टीपू सुल्तान

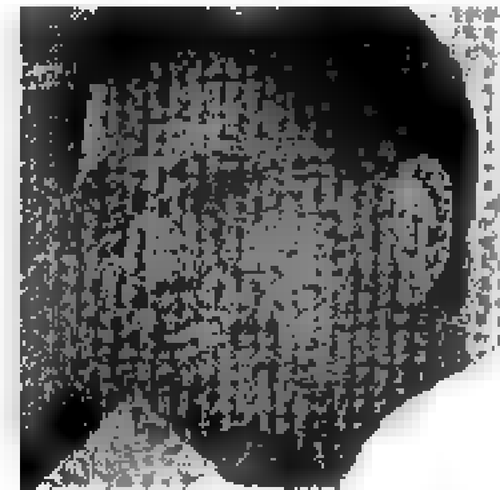




जन्म तिथि-1.12.1751, जन्म समय-8.00।

श्री अजीतसिंह (किसान नेता)





किसान नेता एवं मंत्री। जन्म समय-12.2.1939, जन्म समय-4.00, जन्म स्थान-बागपत।

फारुक अब्दुला

11 10 9 रा. 8 7
गु. मं. सू.
12 6
श. शु. बु.
1 5
चं. 3
2 के. 4

पूर्व मुख्यमंत्री–जम्मू-कश्मीर। जन्म तिथि-21.10.1937, जन्म समय-12.30, जन्म स्थान-श्रीनगर।

बेनजीर भुट्टो

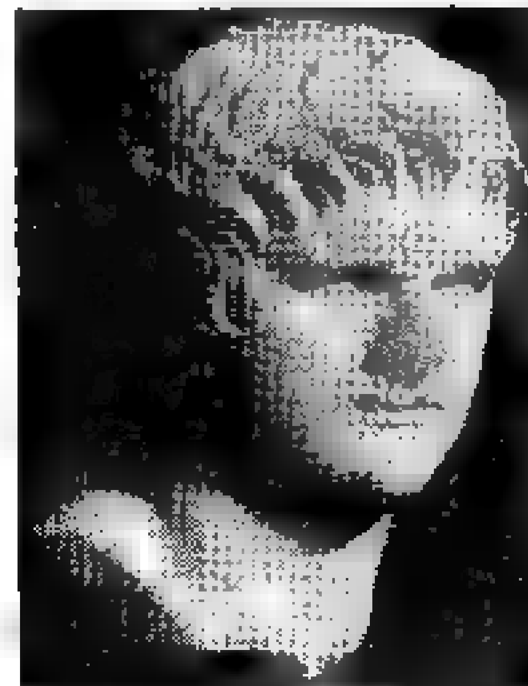
रा.
11 10 9 8 7
चं.
12 6
श.
सू.
1 5
शु. म. 3 बु.
2 गु. के. 4



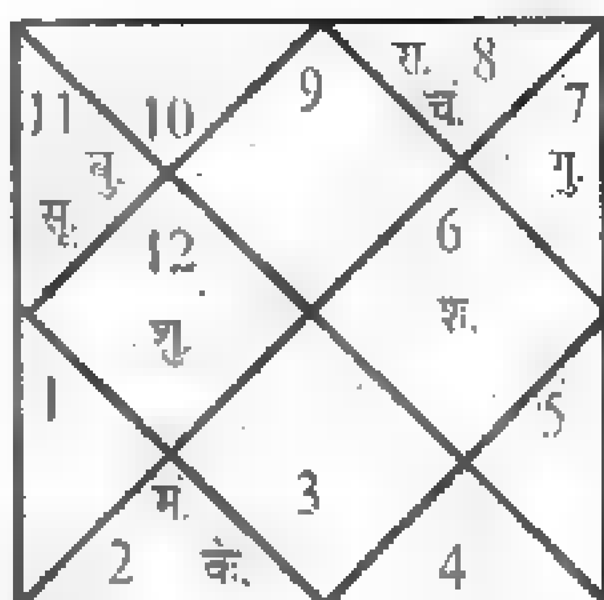
पूर्व प्रधानमंत्री पाकिस्तान। जन्म तिथि-21.6.1953, जन्म समय-20.15, जन्म स्थान-कराची।

रोम सम्राट नीरो

मं. रा. शु. गु. 8
11 10 9 7
सू. बु. श.
12 6
1 5
3 चं.
2 के. 4



सयाजी गायकवाड़



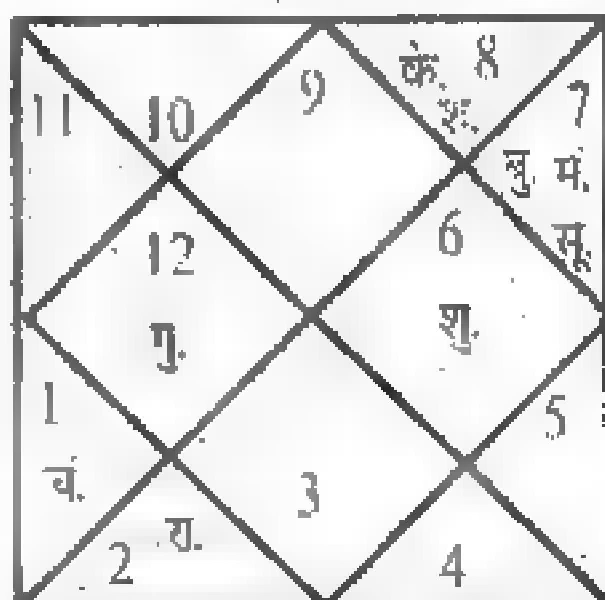
जन्म तिथि· 18.3.1863, जन्म समय-2.20, जन्म स्थान-बड़ौदा (गुजरात) प्रस्तुत जन्म-कुंडली हिंदुस्तान के प्रसिद्ध महाराज, बड़ौदा नरेश स्व. श्री सयाजी राव गायकवाड़ की है। शुक्र उच्च का शुभ ग्रह केंद्र में हो तो नीच कुल, में पैदा हुए बालक का राजयोग होता है। मानसागरीकार कहते हैं–

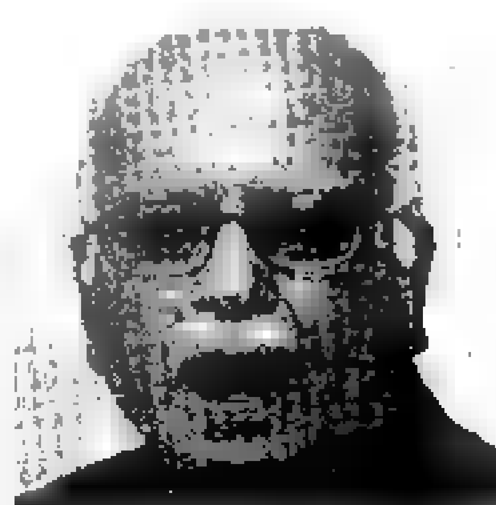
उच्चस्थानागताः सौम्याः केंद्रस्थाने भवंति चेत्।
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य यदि नीचसुतो भवेत्॥

–मानसागरी श्लोक 38/पृ. 226

जिसके उच्च स्थान में प्राप्त शुभ ग्रह केंद्र स्थान में स्थित हो निम्न कुल में पैदा हो तो भी राजयोग होता है। राजयोग के लिए व्यक्ति के जन्म–कुल–परिवार एवं परंपरा का विशेष ध्यान देना पड़ता है। ऊंचे कुल में जन्म लेना भी अपने आप में एक राजयोग है। सयाजी गायकवाड़ का जन्म बड़ौदा राजघराने के अति धनाढ्य व उच्च कुल में हुआ। कन्या का शनि केंद्र में उच्चाभिलाषी है। लाभ स्थान में अधिष्ठित गुरु शुक्र राशि में, लाभेश शुक्र-गुरु की राशि में जाने से लग्नेश लाभेश का 'परिवर्तन' उत्तम राजयोग की सृष्टि करने वाला कहा गया है।

श्री लालकृष्ण आडवाणी



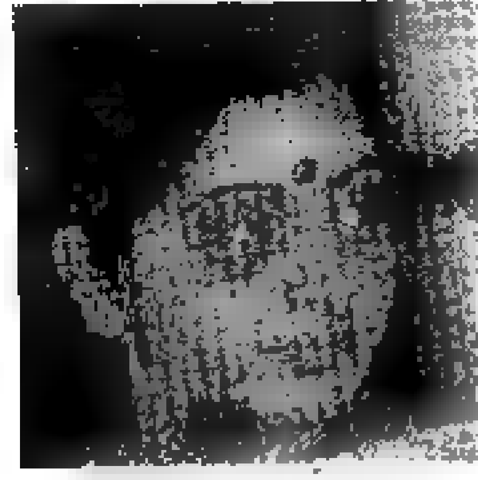


गृहमंत्री भारत सरकार एवं उपप्रधान मंत्री भारत सरकार।

जन्म तिथि–8.11.1927, जन्म समय–9.20, जन्म स्थान–हैदराबाद।

सुषमा स्वराज

बु.
11 10 9 8 7
सू. रा. शु. मं.
12 6
गु. श. चं.
1 5
3 कें.
2 4



जन्म तिथि-14.2.1952, जन्म समय-4.15, जन्म स्थान-अम्बाला। पूर्व मुख्यमंत्री दिल्ली, स्वास्थ्य मंत्री भारत सरकार तथा प्रखर वक्ता।

वीर सावरकर

11 10 9 8 7
चं. रा.
12 6
1 गु. 5
कें. शु. 3
मं. सू.
2 बु. श. 4



जन्म तिथि-28 5.1883, जन्म समय-21.25, जन्म स्थान-नासिक (महाराष्ट्र)।

सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण

चं. गु.
11 10 9 8 7
श. बु.
रा.
12 6
सू. शु.
1 5
कें. 3 मं.
2 4



जन्म समय-11.10.1902, जन्म समय-11.50 दोपहर।

अभिनेता किशोर कुमार

11 10 9 श. 8 7 के.
12 6
1 रा. शु. 3 5 मं.
2 गु. बु. चं. 4 सू.



जन्म तिथि-4.8.1929, जन्म समय-16.00, जन्म स्थान-खण्डवा।

ऋषिकेश मुखर्जी

चं. 11 10 9 मं. 8 7 शु. बु. गु.
12 के. 6 सू. श. रा.
1 5
3
2 4



जन्म तिथि-30.9.1922, जन्म समय-5.52, जन्म स्थान-कोलकाता।

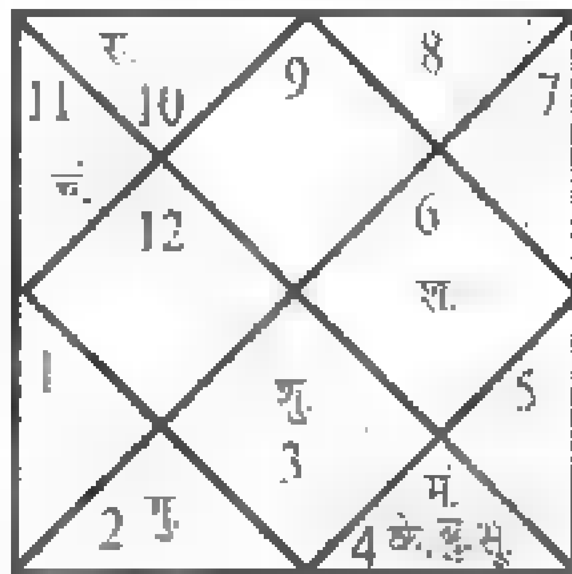
मनोज कुमार

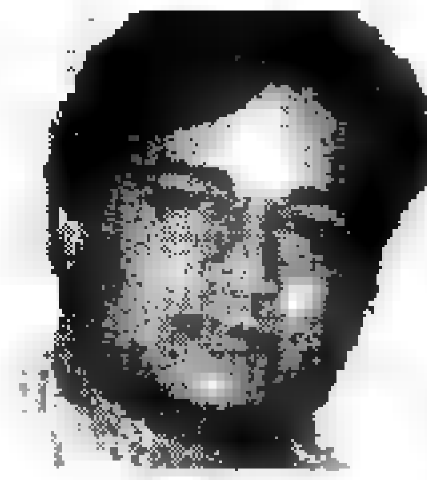
चं. 11 10 9 गु. रा. मं. 8 7
12 श. 6
1 5
3
के. 2 शु. बु. सू. 4



जन्म समय-24.7.1937, जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-इलाहाबाद।

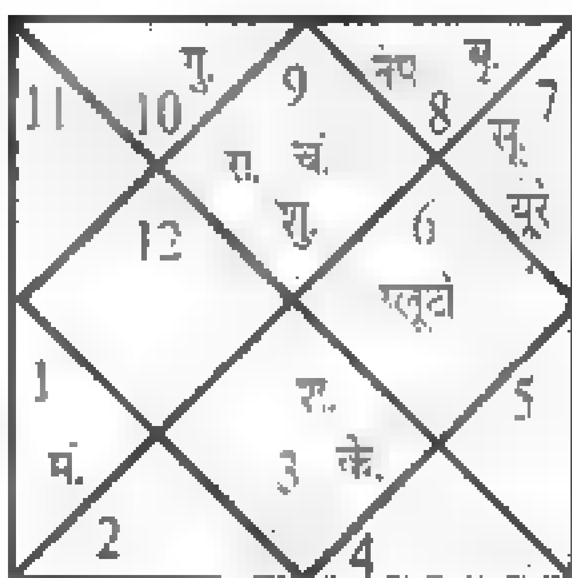
संगीत सम्राट अनूप जलोटा





जन्म तिथि-29.7.1953 जन्म समय-17.00, जन्म स्थान-नैनीताल।

विश्वसुन्दरी ऐश्वर्या राय





धनुलग्न एवं 'धनु राशि' में जन्मी ऐश्वर्या राय की जन्म कुण्डली का स्वामी देवगुरु गुरु गौरवर्णीय ग्रह है। शुक्र एवं चंद्रमा की युति ने इन्हें विश्व सुन्दरी बनने में सहायता की। लग्नेश गुरु नवमांश में मेष राशिगत है। लग्न वर्गोत्तमी है। केन्द्र में मंगल स्वगृही होने से 'रूचक योग' बना। जो कि पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। इसके कारण ऐश्वर्या के पास बहुत सुन्दर कार एवं बहुत सुन्दर बंगला होगा। नौकर-चाकर एवं जीवन की सभी ऐश्वर्यशाली भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति उसे सहज में हो जायगी। मंगल की शानदार रंगीन दशा इन्हें 1994 में लगी तब से इनका भाग्योदय होना प्रारंभ हो गया। शुक्र रंगीन इसलिए है कि शुक्र इनकी कुण्डली में पंचमेश एवं दशमेश होने से परम योगकारक ग्रह है।

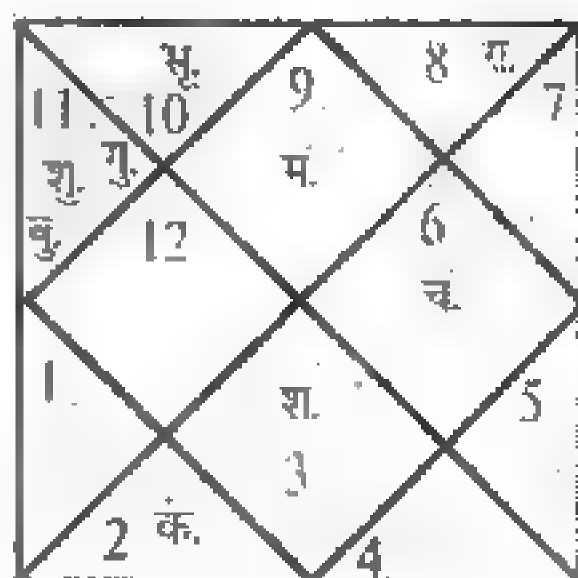
शुक्र व गुरु ने इन्हें भरपूर सौंदर्य दिया पर अभिनय के क्षेत्र में इन्हें वो सफलता नहीं मिल पाई जो मिलनी चाहिए थी क्योंकि शुक्र के साथ पाप ग्रह राहु

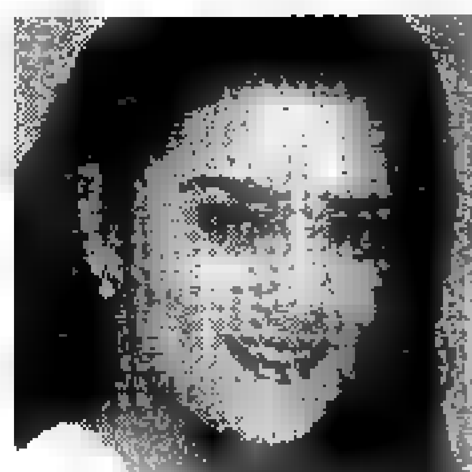
की उपस्थिति अभिनय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता दिलाने में बाधक रही। यही कारण है जो भी फिल्म शुक्रवार को रिलीज हुई वो सफल नहीं हो पाई। मोहब्बतें, हम किसी से कम नहीं, देवदास सभी शुक्रवार को रिलीज हुई। इन फिल्मों की असफलता के बाद इन पर फ्लाप का ऐसा ठप्पा लग गया कि बड़ी फिल्मों के निर्माता उनको साइन करने से कतराने लगे। सुभाष घई ने ऐश्वर्या की नई फिल्म 'स्टारर' को ठंडे बस्ते में डाल दिया। सुभाई घई के बैनर तले बनी 'उत्तर दक्षिण, त्रिमूर्ति, राहुल, बधाई हो बधाई' सभी फिल्में फ्लाप रहीं।

इन दिनों ऐश्वर्या और सलमान खान के प्यार व तकरार दोनों की बातें मीडिया ने उछाली। पता चला कि सलमान ऐश्वर्या के प्यार का इतना दीवाना हो गया कि उसने मर्यादा की सारी सीमाएं तोड़ दी। सलमान अपनी पुरुष प्रवृत्ति, बढ़ी-चढ़ी दौलत एवं शोहरत के चलते ऐश्वर्या को कम करके आंकते रहे। परन्तु केन्द्रस्थ स्वगृही शुक्र एवं शनि के कारण ऐश्वर्या खुद को किसी भी तरह सलमान से नीचे या पीछे नहीं मानती थी। इस सोच के कारण ऐश्वर्या ने हालीवुड की फिल्मों में हीरोइन बनने का गौरव प्राप्त किया। मंगल ग्रहों का सेनापति एवं शौर्यप्रधान अति बहादुर ग्रह है जो कि सलमान की कुण्डली में अपेक्षाकृत कमजोर है। यही कारण है कि सलमान ऐश्वर्या से पीटते-पीटते बचे एवं पलायन कर गये। सलमान का पलायन उनकी कमजोरी का प्रतीक था। ऐश्वर्या राहु से प्रभावित है फलत: सभी ग्रह ऐश्वर्या के लग्न को पूरी शक्ति के साथ प्रभावित कर रहे हैं। स्वाभिमानी एवं साहसी है। ऐश्वर्या की कुण्डली में सप्तमेश बुध बारहवें स्थान में है। चंद्रमा वहां राहु के साथ पाप पीड़ित है। सप्तम भाव में शनि व केतु होने से 'लग्नभंग योग' बना। शनि पाप ग्रह केतु के साथ है। फलत: ऐसा जातक अन्तर्जातीय विवाह करता है पर वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। ग्रहों की इन स्थितियों ने ऐश्वर्या के वैवाहिक सुख पर प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया है?

वर्तमान में इन्हें राहु की महादशा चल रही है। तथा राहु की महादशा में राहु का अंतर चल रहा है। जो कि 30 अप्रैल, 2004 तक प्रभावी रहेगा। राहु लग्न में अग्निराशि में है। राहु यहां गुरु का प्रतिनिधित्व कर रहा है। एक बात ऐश्वर्या की कुण्डली में सबसे विचित्र है कि राहु और केतु दोनों ग्रहों का परस्पर उच्च दृष्टि संबंध है। फलत: ऐश्वर्या का पति फिल्म स्टार व करोड़पति होगा। परंतु सप्तमस्थ शनि-केतु एवं राहु की सप्तम भाव पर दृष्टि क्या गुल खिलाएगी यह कहना बहुत मुश्किल है।

प्रीति जिन्टा





मॉडलिंग से अपना कैरियर आरम्भ करने वाली प्रीति जिन्टा बॉलीवुड की शीर्ष अभिनेत्रियों में से एक है। सन् 1994-95 में 'लिरिल' गर्ल के नाम से मशहूर इस अभिनेत्री का जन्म 31 जनवरी 1975 को धनुलग्न के तुला नवांश में हुआ। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस लग्न के इस नवांश में जन्मा व्यक्ति अति सुंदर, प्रसिद्ध तथा सर्वकला प्रवीण होता है। अभिनेत्री माधुरी दीक्षित भी इसी लग्न और इसी नवांश की है। नवांश कुंडली के लग्न में बुध की स्थिति 'कलानिधि योग' का निर्माण कर रही है। ऐसा जातक कला के क्षेत्र में भारी प्रसिद्धि पाता है। यह योग कई फिल्म कलाकारों की जन्म कुण्डली में पाया जाता है।

प्रीति के जन्म में लग्न का स्वामी गुरु तृतीय भाव में स्थित है। वहां पर इसकी युति दो अन्य ग्रहों बुध और शुक्र से हो रही है। इस प्रकार तृतीय भाव में तीन ग्रहों की युति हो रही है। ये तीनों ग्रह ज्योतिष के अनुसार शुभ ग्रह कहलाते हैं। इन तीनों शुभ ग्रहों की युति यदि एक भाव में हो जाए तो उस भाव से संबंधित फलों में वृद्धि करते हैं। तृतीय भाव से इन तीनों ग्रहों की पूर्ण दृष्टि भाग्य भाव पर पड़ रही है। जिससे भाग्य की वृद्धि हो रही है। फलित ज्योतिष में कहा गया है कि कुण्डली में बुध और शुक्र की युति होने पर व्यक्ति कला और साहित्य के क्षेत्र में उन्नति करता है-

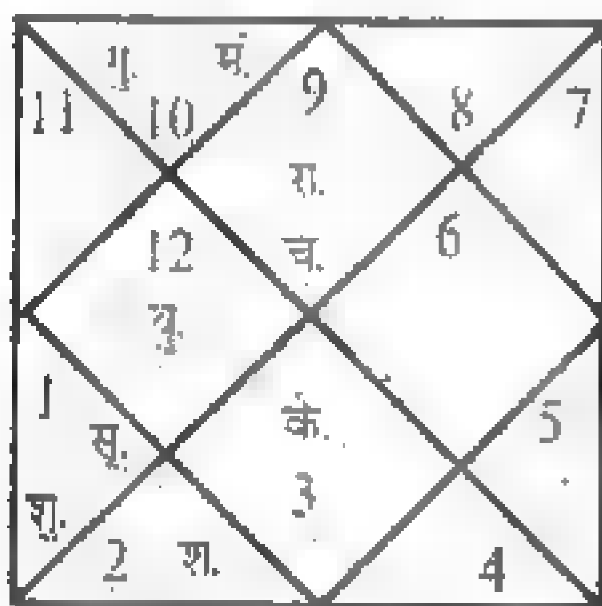
बुध गुरु शुक्रा मिलिताः कुर्वन्ति महिपतिं जातम्।
सुसमृद्धं विनयाख्य माण्डलिकं कीर्ति सम्पन्नम्॥

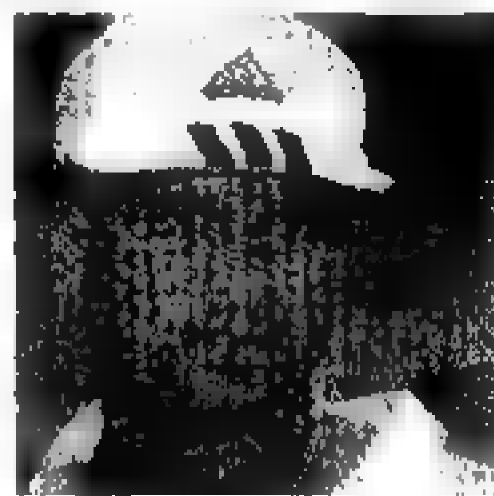
(होरासार)

इस योग के अतिरिक्त इन तीनों शुभ ग्रहों का प्रभाव भी पूरी कुण्डली पर है, जिससे प्रसिद्धि मिलती है। पाराशरीय सिद्धांत के अनुसार केन्द्र और त्रिकोण भावों के स्वामी की युति उत्तम राजयोग कारक होती है यह योग व्यक्ति को कम आयु में ही सफलता दिलाता है।

प्रीति की कुण्डली में राहु की महादशा के आरम्भ होते ही उन्होंने कला मनोरंजन के क्षेत्र में पदार्पण किया। गुरु की अंतर्दशा में फिल्म 'दिल से' में शाहरुख के साथ काम कर अपना फिल्मी कैरियर आरम्भ किया। गुरु इनकी कुण्डली में लग्नेश है तथा इसका संबंध दशमेश बुध से होने पर कैरियर पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अगस्त 1999 से इन्हें शनि की अंतर्दशा आरंभ हुई, जो जुलाई 2002 तक रही। शनि की कुंडली में बुध के साथ राशि परिवर्तन योग हो रहा है जिस कारण इस अवधि में इन्हें भारी सफलता मिलेगी। इस दौरान इनकी कई फिल्में 'दिल चाहता है', 'क्या कहना', 'चोरी चोरी चुपके-चुपके' आदि हिट रहीं। इस अवधि में ही इन्होंने चर्चित फिल्म 'कोई मिल गया' भी साइन की। इसमें इनके सह कलाकार ऋतिक रोशन हैं।

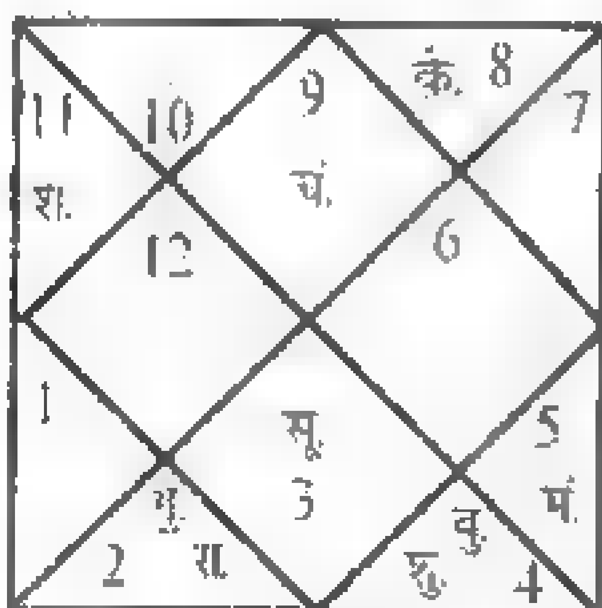
सचिन तेन्दुलकर, कामयाब क्रिकेट खिलाड़ी





जन्म तिथि· 24.4.1973, जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-मुम्बई।

श्री संजय मांजरेकर





जन्म तिथि-12.7.1965, जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-मैंगलोर।

श्री धीरुभाई अम्बानी (प्रसिद्ध उद्योगपति)



जन्म तिथि-28.12.1932, जन्म समय-7.30।

श्री रतन टाटा (प्रसिद्ध उद्योगपति)

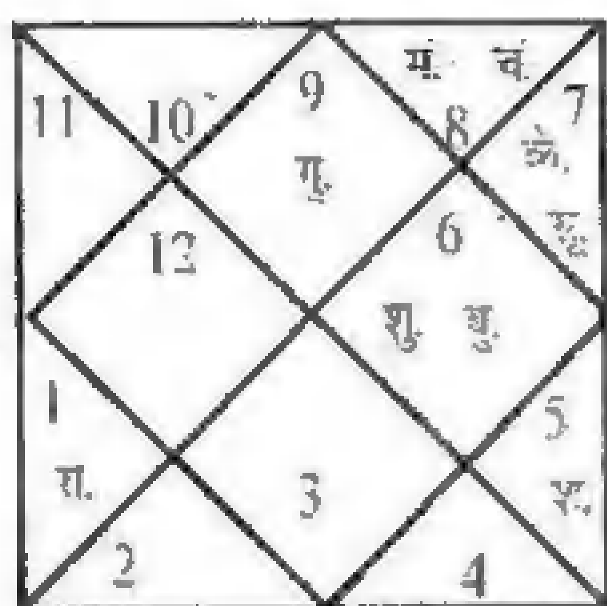


जन्म तिथि-28.12.1937, जन्म समय-6.30, जन्म स्थान-मुम्बई।

श्री अरविन्द मफतलाल (प्रसिद्ध उद्योगपति)

जन्म समय-4.4.1918, जन्म समय-1.45, जन्म स्थान-अहमदाबाद।

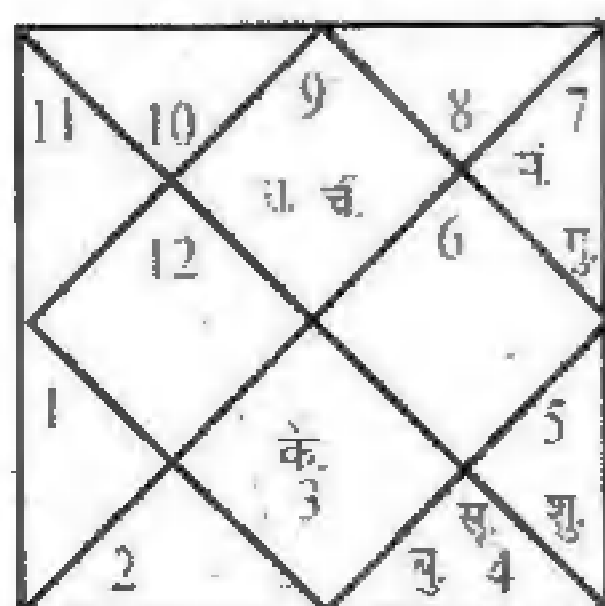
श्री नरेन्द्र वर्मा (प्रसिद्ध प्रकाशक)





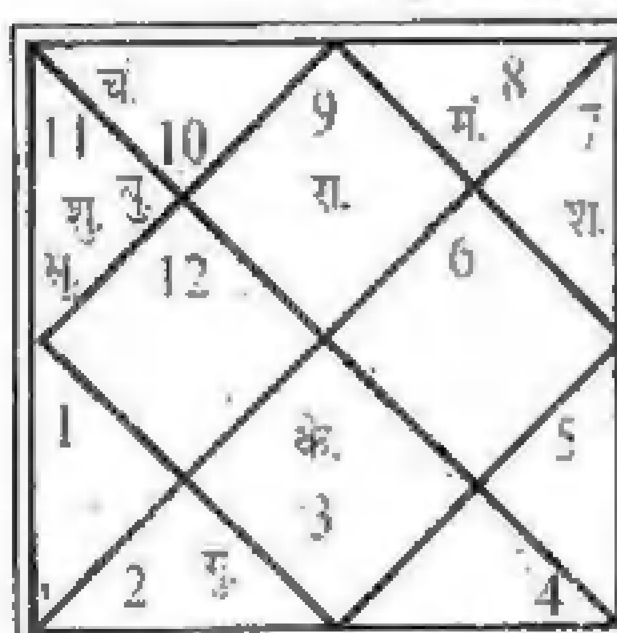
जन्म तिथि-3.11.1948, जन्म समय-12.00 दोपहर, जन्म स्थान-दिल्ली।

श्री त्रिलोक दीप सिंह



जन्म तिथि-11.8.1935, जन्म समय-16.00। यह विख्यात पत्रकार हैं तथा यह डालमिया ग्रुप से जुड़े समाजसेवी व्यक्ति हैं।

श्री के.के. सिंघवी

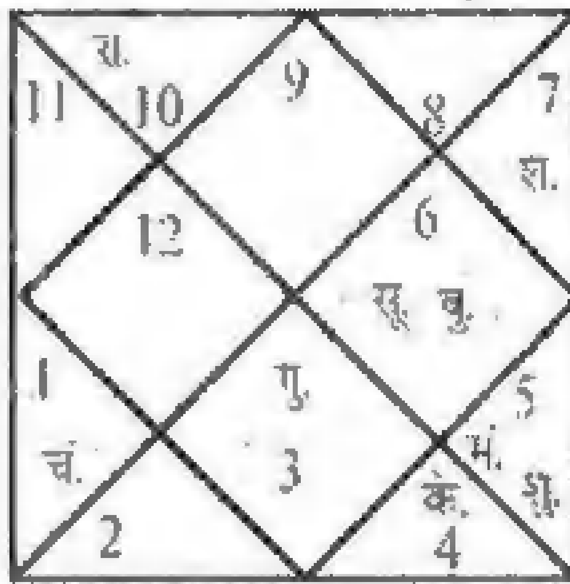




जन्म समय-2/3 मार्च 1954, जन्म समय-4.18, जन्म स्थान- मन्दिरपेढ़ी (जोधपुर)।

यह कुण्डली एक युवा व तेजस्वी व्यक्ति की है। तृतीय स्थान में परस्पर शत्रु ग्रहों की युति से कोई भाई-बहन नहीं है। माता-पिता नहीं हैं। लग्नस्थ राहु अनेक प्रकार के धंधे कराता है पर उल्लेखनीय सफलता किसी में नहीं। लग्नेश-सुखेश गुरु छठे धार्मिक बुद्धि की कमी देता है।

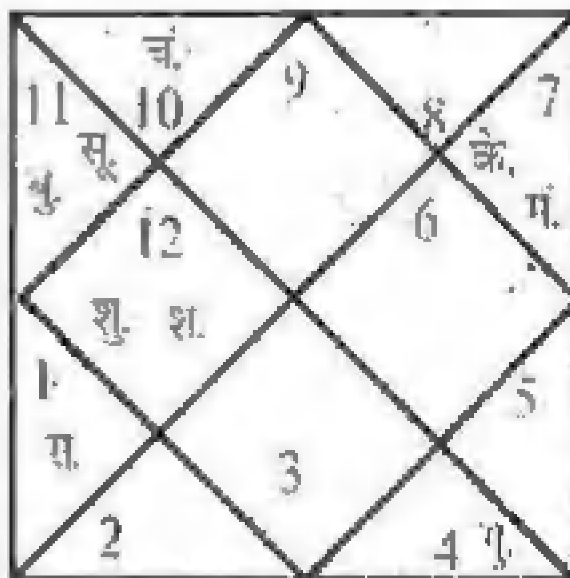
डॉ. अरविंद माथुर





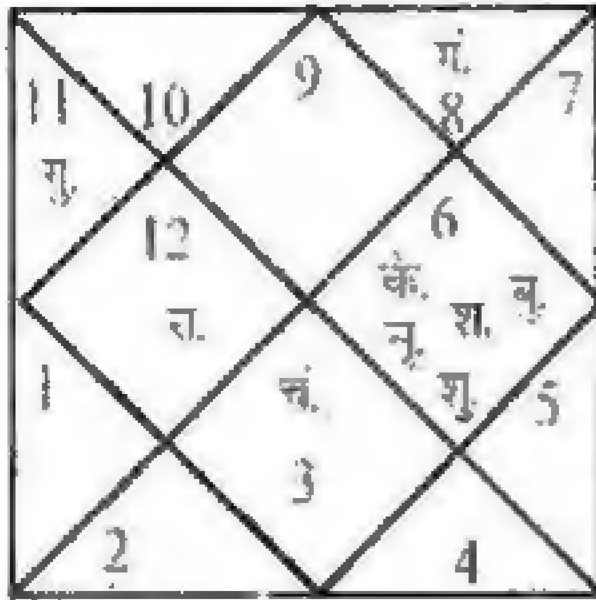
जन्म तिथि-25.9.1953, जन्म समय-13.35, जन्म स्थान-जोधपुर। डॉ. अरविन्द माथुर जोधपुर शहर के वरिष्ठ फिजिशियन हैं जहां दिन-रात मरीजों की लाईन लगी रहती है। दशम भाव में स्थित बुध उच्च का **'भद्र योग'** 'बुधादित्य योग' बना रहा है। जिससे इन्हें अपार यश मिला।

पं. घनश्याम द्विवेदी



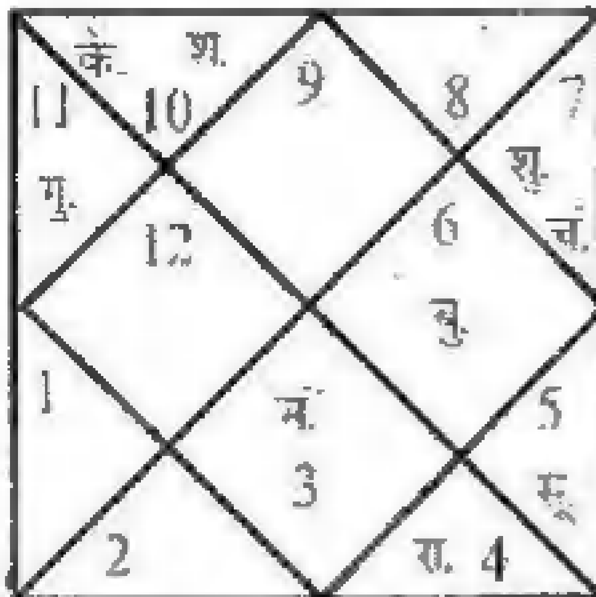
जन्म तिथि-9.3.1967, जन्म समय-3.50 बजे सुबह। 'मालव्य योग' के कारण व्यक्ति ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा। चतुर्थेश गुरु ने अष्टम जाकर माता का सुख भंग कर दिया। पराक्रम स्थान में शनि की राशि बुध ने भाई नहीं दिया आठ बहनें दीं। पंचम स्थान में राहु संतान संबंधी चिंता कारक है। धनेश केन्द्र स्थान होने से धन की कमी जीवन पर्यन्त नहीं रहेगी। शनि+शुक्र कार का योग बनाते हैं।

डॉ. सुरेश जैन



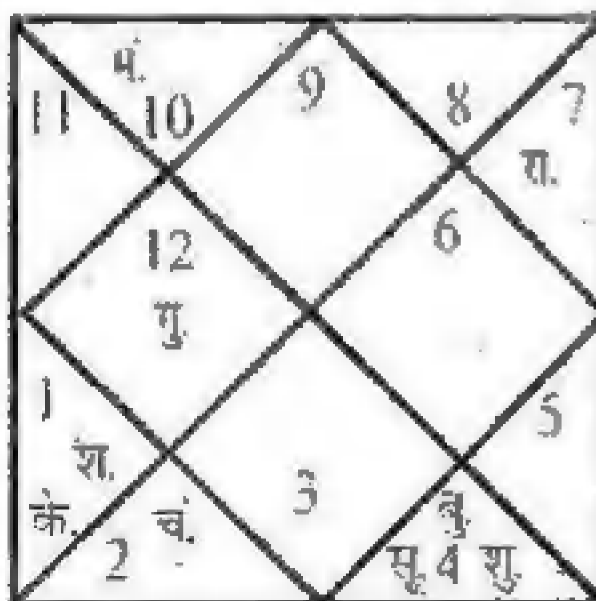
जन्म तिथि-5.10.1950, जन्म समय-13.00 दोपहर, जन्म स्थान-जोधपुर। डॉ. जैन जोधपुर शहर के प्रख्यात शल्यचिकित्सक हैं जो ज्योतिष एवं मेडिकल साइंस को साथ लेकर रोगों का निदान करते हैं। ऐसा योग दशम भाव में स्थित पंचग्रह युति के कारण बना।

श्री रामू भाटी



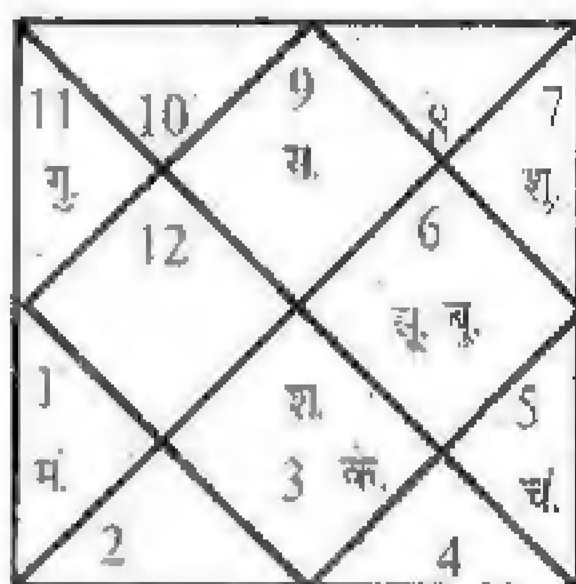
जन्म तिथि-3.9.1962, जन्म समय-16.10, जन्म स्थान-भिवाना। यह बाधक कुण्डली का अन्यतम उदाहरण है। शनि स्वगृही, शुक्र स्वगृही, बुध उच्च का होते हुए जातक की किस्मत नहीं चमकी।

श्री पुरुषोत्तम आवस्थी



जन्म तिथि–10.8.1939, जन्म समय–16.00, जन्म स्थान–जोधपुर। केवल दो पुत्र कोई कन्या नहीं। चंद्रमा उच्च का छठे सरल नामक विपरीत राजयोग एवं शुक्र आठवें हर्ष नामक विपरीत राजयोग से व्यक्ति गरीबी से उठा और करोड़पति (उद्योगपति) बन गया।

पराया बीज



जन्म स्थान–समदंडो (राज.), जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी।

ज्योतिष का एक सूत्र है–

चौथ नाम और चवदस जाण
वार शनि के मंगल भाण
उत्तरातीनु बालक जायो
निश्चय बीज पराया लायो।

अर्थात् शनि या मंगलवार हो, उस दिन तिथि चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी हो तथा उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद में से कोई भी नक्षत्र हो तो उस दिन जन्मा बालक अपने पिता की संतान नहीं होता। यह कुण्डली इसका अन्यतम उदाहरण है।

❑❑❑